मेरा राजस्थान

वर्ष-१९, अंक- १२, मुम्बई, फरवरी २०२५ सम्पादक-बिजय कुमार जैन पृष्ठ ६४ मूल्य -१००.०० रूपए प्रति

राजस्थानियों के विचारों के साथ समस्त राजस्थान समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

श्रीमती सीता देवी चुन्नी लाल बरडिया राजकीय कन्या महाविद्यालय, पीपाड़

तीरूपति बालाजी मंदिर

नगरपालिका पीपाड़

पीपाड़ सिटी जोधपुर

राधा कृष्ण मंदिर

राजकीय महाविद्यालय

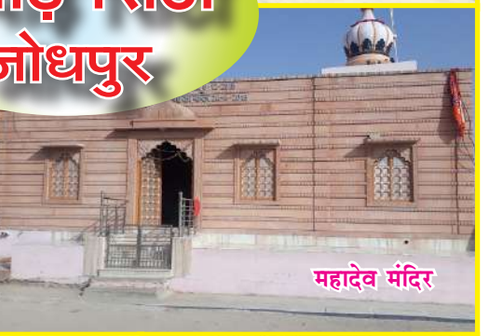
महादेव मंदिर

अंबेडकर चौक पीपाड़

बकरा शाला चिकित्सालय

श्री पीपलेश्वर महादेव मंदिर

श्री लक्ष्मीनाथजी मंदिर

KALPA-TARU®

OVER 55 YEARS OF LEGACY

OVER 27,000 EMPLOYEES

PRESENCE IN 73 COUNTRIES

KALPA-TARU® REAL ESTATE

KALPA-TARU® KALPATARU PROJECTS INTERNATIONAL LIMITED

SSL®

PSIPL SOLUTIONS INSPIRED

Remove India Name From the Constitution India को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए

पत्रिका द्वारा होने वाली आय भारतीय भाषायी संस्कृति संवर्धन व हिंदी बनें राष्ट्रभाषा अभियान की सफलता पर खर्च किया जा रहा है

http:// www.merarajasthan.co.in भारत को 'भारत' ही बोला जाए अभियान

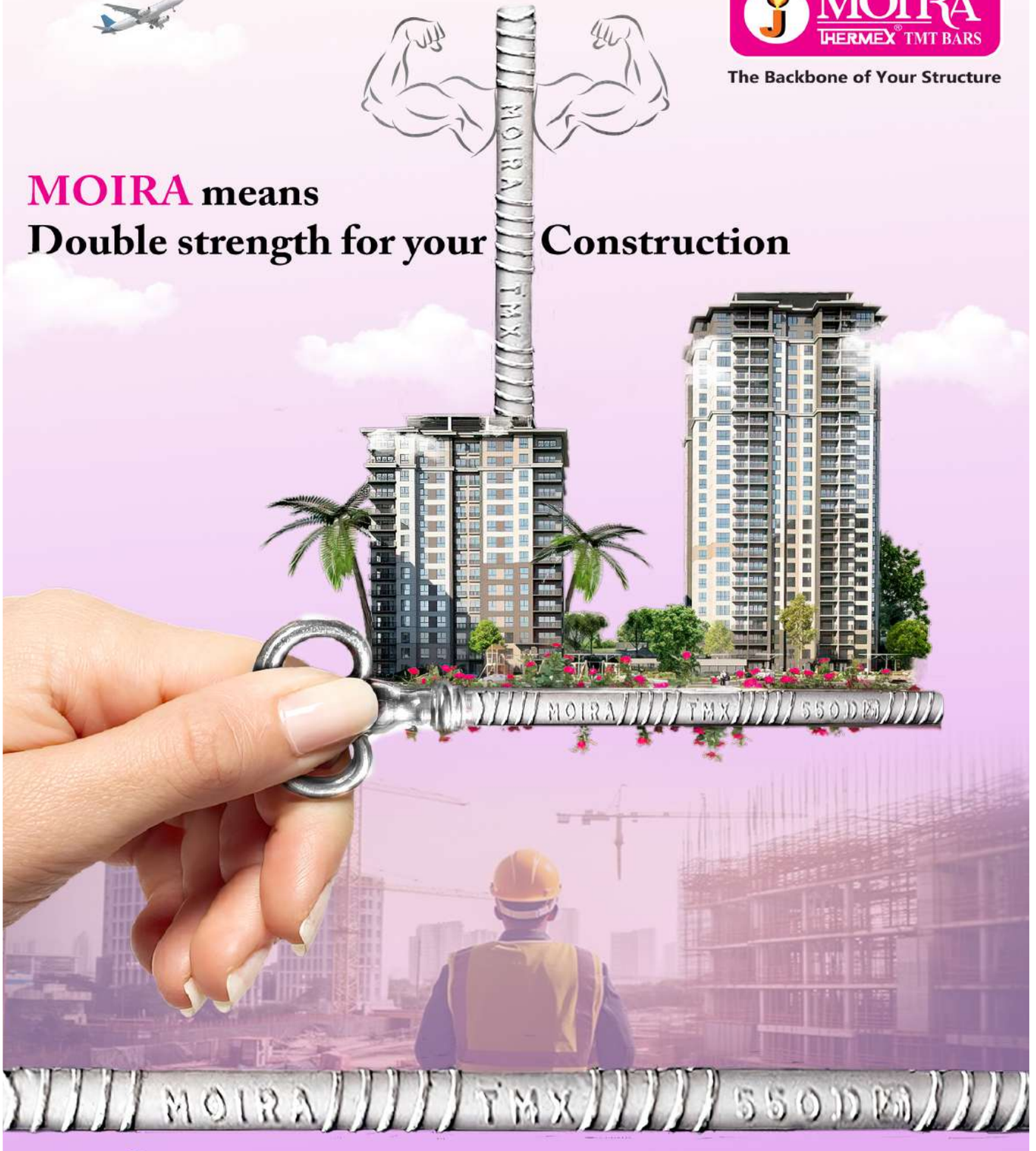

MOIRA
THERMEX TMT BARS
The Backbone of Your Structure
MOIRA means
Double strength for your Construction
Available In : Fe 550, Fe 550D, Fe 600 & CRS
JAIDEEP METALLICS
& Alloys Pvt. Ltd.
106 / 107 / 108, 1st Floor, Neha Ind. Estate, Behind CCI Ltd., Off Dattapada Road, Borivali (E),
Mumbai - 400 066. Phone : +91 2242032000 Fax : +91 22 42032020
Email : ajay@moiratmt.com | marketing@moirantmt.com

WORK SPEAKS

We believe in letting our work do the talking. Work, created with absolute devotion and unwavering commitment. And when the landmark is ready and the applause begins, we quietly move on to the next project.

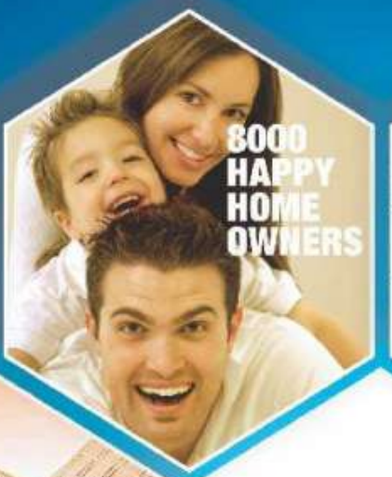

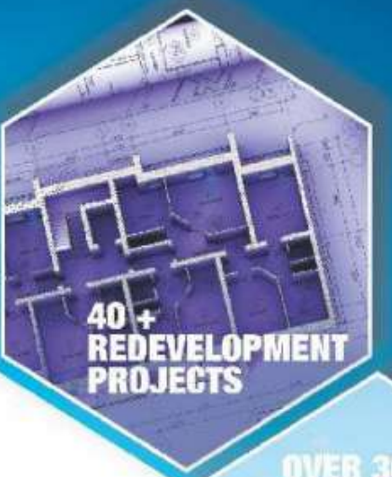

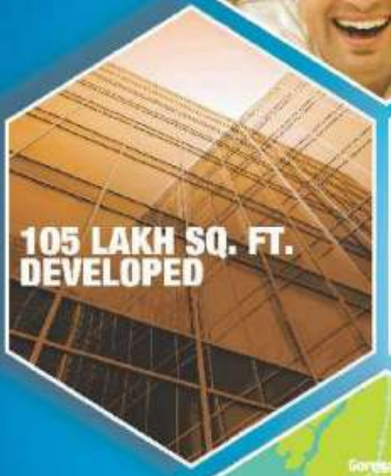

KABRA GROUP

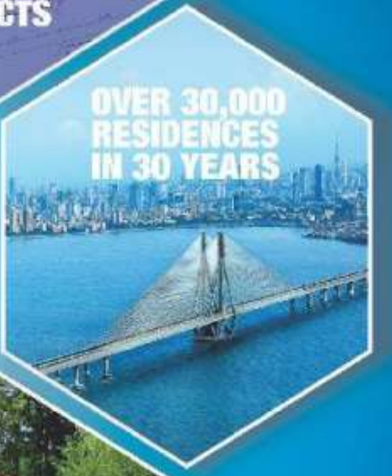

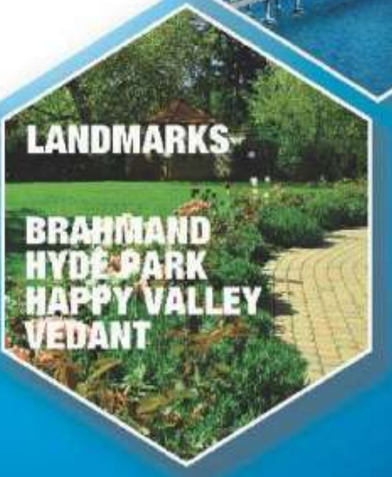

REGD. OFFICE

10th Floor, Kamla Hub., N.S. Road, No. 1, JVPD Scheme,
Near Gagandeep Bus Stop, Vile Parle (W), Mumbai - 400 049.
Mobile : +91 9820122419, Tel. : 022-26210202 / 03
E-mail : kabrass@hotmail.com
Website : www.kabragroup.net

७ पीपाड़ के प्रसिद्ध उद्यमी व दानवीर...

१२ पीपाड़ शहर

२१ श्रीमती सीता देवी चुन्नी लाल बरडिया...

२८ बहुत ही जल्द नए भवन में अंग्रेजी...

३२ सृष्टि के रचयिता भगवान विश्वकर्मा...

फरवरी २०२५ के अंक की झलकियाँ

और भी बहुत कुछ....

'मेरा राजस्थान' मार्च २०२५ री विशेषतावां

होली

मेरा राजस्थान
सम्पादक-विजय कुमार जैन
राजस्थानियों के विचारों के साथ समस्त समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

समस्त राजस्थानियों की विश्वस्तरीय पत्रिका
'मेरा राजस्थान'
२१ वें वर्ष में प्रवेश

'मेरा राजस्थान' के प्रबुद्ध पाठकों व विज्ञापनदाताओं से निवेदन है कि पत्रिका के बारे में अपने विचार मो. ९३२२३०७९०८ व्हाट्सएप पर भेजें ताकि 'मेरा राजस्थान' पत्रिका को और भी पठनीय व संकलनीय बनाया जा सके।

जय-जय राजस्थान! जय भारत!

- संपादक

022 3064 3065
KALPA-TARU
Live an illustrious life.
KALPATARU
ADVAY
BORIVALI (W)
Artist's impression
2, 3 & 4 BED LUXURY HOMES STARTING AT ₹2.77 CR* (ALL INCL.)
Large 6.12 acre land parcel with 46% open space
50+ premium lifestyle amenities with a state-of-the-art clubhouse
A place of worship for auspicious living
Supreme connectivity - easy access through New Link Rd. & Metro station
Kalpataru Advay is registered with MahaRERA reg. no. P51800077381. Details available at maharera.mahaonline.gov.in
Site address: Kalpataru Advay, Ashok Nagar, near Suvidha school, Vazira Naka, Yoganand Society Rd, Borivali (West), Mumbai 400091 | Head office: 101, Kalpataru Synergy, opp. Grand Hyatt, Santacruz (E), Mumbai – 400 055 Email: sales@kalpataru.com | Website: www.kalpataru.com This printed material depicting the images, designs, material stock photography, projections, detail, descriptions and/or any other information of whatsoever nature that are available and/or displayed here should not be deemed to be or constitute any offer for sale, invitation to offer or an invitation to acquire and/or contract. The plans, specifications, images and other details herein are only indicative and the Promoter reserves the right to make any changes in the interest of development as per applicable rules and regulations. The Allottees are bound to inspect and apprise themselves of all the relevant information prior making any purchaser decision. The Allottees shall be governed by the terms and conditions of the agreement for sale to be entered between the parties and not on the terms of this printed material. This project is secured with Vistra ITCL (India) Limited. *T&C apply.

वर्ष-१९, अंक १२, फरवरी २०२५

१२ अंक वार्षिक १२००/-

सम्पादक : बिजय कुमार जैन

वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक
भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए
का आव्हान करने वाला भारत माँ का लाडला

उपसम्पादक - संतोष जैन 'विमल'
कार्यकारी सम्पादक - अनुपमा शर्मा (दाधीच)
मो. 9702205252

'मेरा राजस्थान' के संरक्षक
स्व. रामनारायण घ. सराफ, मुम्बई

सम्पर्क करें...
सम्पादकीय कार्यालय
गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्राईवेट लिमिटेड
की शानदार प्रस्तुति

मेरा राजस्थान
राजस्थानियों के विचारों के साथ समस्त समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

बी- २१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व,
मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत - 400 059. दूरध्वनि - 022- 4015 8094

भ्रमणध्वनिः 9322307908

अणुडाकः mailgaylordgroup@gmail.com
mainbharathunfoundation@gmail.com
अन्तरताना : http//: www.merarajasthan.co.in
http//:www.bijayjain.com

संपादकीय ....

राजस्थान की ही नहीं भारत की धार्मिक व पावन धरती है 'पीपाड़'

वैसे तो 'भारत' का हर नगर शहर पवित्र व पावन है, क्योंकि 'भारत' मेरा है १४० करोड़ भारतीयों का है, उसके मध्य भारत का लाडला एक राज्य 'राजस्थान' जिसका कण-कण पवित्र भावनाओं से समाहित है चाहे जौहर में हो या माटी की रक्षा के लिए सर भी कटवाना पड़े ऐसे रण बांकुरों कि धरती के बीच एक 'पीपाड़' शहर भी है, जो जोधपुर जिले के अंतर्गत आता है। 'मेरा राजस्थान' के प्रबुद्ध पाठकों को बताते हुए परम हर्ष हो रहा है कि 'पीपाड़' अत्यंत ही धार्मिक, शिक्षा प्रेमियों के साथ कर्मठ व्यक्तित्वों के धनी का शहर है, पीपाड़ की पावन भूमि पर जन्में आज भारत के विभिन्न क्षेत्रों में अपनी कर्मठशीलता की धुन बजा रहे हैं, चाहे क्षेत्र चार्टर्ड अकाउंटेंट का हो या व्यापार या हो भवन निर्माण का क्षेत्र, हर कोई भारत नाम सम्मान अभियान में भी अपनी अग्रणी भूमिका निभा रहा है।

वैसे तो 'मेरा राजस्थान' परिवार ने करीब १५० गॉवों का इतिहास प्रकाशित किया है जिसका संकल्प भी 'मेरा राजस्थान' पत्रिका के कई-कई प्रबुद्ध पाठकों के पास मौजूद है, श्रृंखलाबद्ध ऐतिहासिक अंकों के प्रकाशन में कड़ी मेहनत व समय लगता है पर विशेषांक के प्रकाशन के पश्चात ज्ञान तो बढता ही है साथ ही आनंद का पारितोषिक भी प्राप्त होता है।

'मैं भारत हूँ फाउंडेशन' अंतर्राष्ट्रीय संस्थान द्वारा चलाया जा रहा अभियान 'एक राष्ट्र-एक नाम भारत' को सफलता मिलती जा रही है, गत दिनों भारत का ही एक राज्य मध्य प्रदेश की आर्थिक राजधानी इंदौर में स्थापित देवी अहिल्या विश्वविद्यालय ने प्रस्ताव पारित कर दिया कि अब से विश्वविद्यालय में INDIA का नहीं केवल BHARAT का ही उल्लेख होगा। बहुत ही खुशी है कि सच्चाई किया गया कोई काम सफल जरूर होता है चाहे समय कितना भी लगे। जय भारत!

धार्मिकता और प्रकृति का अद्भुत संगम 'पीपाड़ शहर' के इतिहास प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनायें

C.A. Pranit Basantraj Jain
Chartered Accountants

BASANT JAIN & ASSOCIATES LLP
BKJ CONSULTING PRIVATE LIMITED

सुनंदा बसंतराज जैन
संयुक्त मंत्रीः श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, मुंबई
ट्रस्टीः गजेन्द्र निधि फाउन्डेशन
अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर

601, Dalamal Chambers, New Marine Lines, Mumbai, Maharashtra, Bharat- 400020
Ph.: 022-22018793 / 9820350814

पीपाड़ के प्रसिद्ध उद्यमी व दानवीर

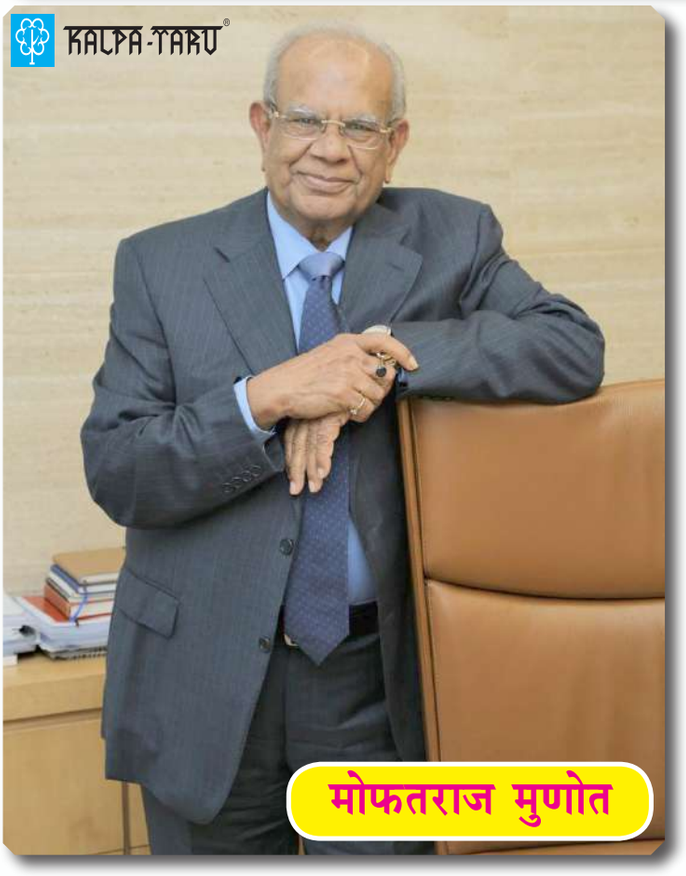

मारवाड़ के चुनौती पूर्ण वातावरण में जन्मे पले श्री मोफतराज पुखराज मुणोत सुप्रसिद्ध कल्पतरु समूह के प्रवर्तक संस्थापक एवं चेयरमेन हैं, आप एक दूरदर्शी उद्यमी हैं, तीक्ष्ण बुद्धि के धनी हैं, काम कोई भी हो, उसे बारीकी से समझकर उसे पूरा करने के लिये अथक प्रयास करने में विश्वास रखते हैं, आपने अपनी प्रारंभिक शिक्षा 'पीपाड़ सिटी' में ग्रहण की, तत्पश्चात सरदार स्कुल जोधपुर में आगे की पढाई पूरी की। १९६१ में आप मुंबई आए और उस रास्ते पर चल पड़े जिससे भारत के अग्रणी और प्रतिष्ठित व्यापारिक समूह में से एक 'कल्पतरु ग्रुप' की स्थापना हुई।

श्री मुणोत द्वारा १९६९ में स्थापित 'कल्पतरु ग्रुप' ५५ वर्षों की विरासत और बहुराष्ट्रीयता का प्रतीक है, यह समूह पावर ट्रांसमिशन एंड डिस्ट्रीब्यूशन, तेल व गैस, रेलवे, सिविल इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट, वेयर हाउसिंग एंड लॉजिस्टिक्स और फैसिलिटी मैनेजमेंट के क्षेत्र में सक्रिय है। कल्पतरु समूह के अंतर्गत कल्पतरू लिमिटेड, कल्पतरु प्रोजेक्ट इंटरनेशनल लिमिटेड, प्रॉपर्टी सॉल्यूशन इंडिया प्राइवेट लिमिटेड व श्री शुभम लॉजिस्टिक लिमिटेड शामिल है।

'कल्पतरू लिमिटेड' मुंबई महानगर क्षेत्र में पांचवें सबसे बड़े डेवलपर और थाने जिले में चौथे सबसे बड़े डेवलपर के रूप में शामिल है। यह लक्जरी, प्रीमियम और मध्यम आय वाले आवासीय, वाणिज्यिक और खुदरा परियोजनाओं, एकीकृत टाउनशिप, लाइफस्टाइल गेटेड समुदायों और पुनर्विकास में माहिर है। कंपनी लक्जरी और प्रीमियम आवासीय रियल एस्टेट पर प्राथमिक ध्यान देने के साथ विला, डुप्लेक्स अपार्टमेंट और प्लॉट विकास सहित विविध प्रकार की संपत्तियों का निर्माण करती है।

१९७४-७५ में 'कल्पतरु ग्रुप' ने मुंबई के सबसे ऊंचे आवासीय टावर 'क्षितिज' का निर्माण किया, यह रिकॉर्ड २५ वर्षों तक अटूट रहा, तब से कंपनी ने पूरे मुंबई में प्रतिष्ठित संपत्तियां विकसित की। 'कल्पतरु' प्रोजेक्ट्स इंटरनेशनल लिमिटेड नॅशनल स्टॉक एक्सचेंज और बम्बई स्टॉक एक्सचेंज में सूचीबद्ध है, जो उद्योग समूह के नेतृत्व को और भी मजबूत करता है।

जैसा की मोफतराज मुणोत जी ने राजस्थानी समाज की प्रसिद्ध पत्रिका 'मेरा राजस्थान' को बताया कि उनकी उद्यमशीलता यात्रा में १९७४ में एक महत्वपूर्ण मोड़ आया, जब वे खाड़ी देशों में स्थानांतरित हुए, जहां उन्होंने १९८२ तक काम किया, इस अवधि के दौरान उनकी कंपनी इस क्षेत्र में सबसे बड़ी सिविल कॉन्ट्रैक्टिंग फर्म बन गई, जिसमें आवासीय अपार्टमेंट से परे बुनियादी ढांचा परियोजनायों का निर्माण किया। संयुक्त अरब अमीरात में- शारजाह में १००० विला परियोजना, बुर्ज एवेन्यू आवासीय और वाणिज्यिक परिसर, अल ज़ाहरा अस्पताल/ अलैन में संयुक्त अरब अमीरात विश्वविद्यालय परिसर, दुबई में मानसिक अस्पताल और अबू धाबी में पुलिस मुख्यालय, नौसेना मिसाइल डिपो आदि कई योजनाओं का निर्माण किया, इन उपलब्धियों ने समूह के ईपीसी व्यवसाय के साथ वैश्विक विस्तार का मार्ग प्रशस्त किया।

संयुक्त अरब ऐमीरात (UAE) के अलावा उनकी कंपनियों ने यमन में 'सान्ना युनिवर्सिटी केंपस, इराक-बगदाद में People's Council Building (लोक सभा भवन), ओमान-मस्कत में आवासीय बिल्डिंग परिसर जैसे कई प्रोजेक्ट्स का

निर्माण किया।

इन प्रोजेक्ट्स में करीब सात हजार (७,०००) भारतीय नागरिक-श्रमिक, इंजीनियर, प्रशासनिक सेवाओं आदि कार्यों में लगे हुए थे, जिसका अर्थ यह हुआ कि भारत में रहने वाले करीब सात हजार (७०००) परिवारों को कई वर्षों तक आर्थिक लाभ मिलता रहा।

'कल्पतरु' की पर्यावरण-अनुकूल निर्माण प्रणाली ने हजारों परिवारों के लिए सकारात्मक ऊर्जा से भरपूर घरों का निर्माण किया। **शेष पृष्ठ ८ पर...**

पृष्ठ ७ से... श्री मुणोत 'वसुधैव कुटुंबकम' (विश्व एक परिवार) के दर्शन को मूर्त रूप देते हुए सुशासन और ग्राहक केंद्रीयता को ध्यान में रखते हुए इंटरप्राइजेज वैल्यू बढाने के साथ निर्माण पर जोर दिया।

अपने कैरियर के दौरान श्री मुणोत को निर्माण उद्योग क्षेत्र में उनकी उपलब्धियों के लिए कई पुरस्कार प्राप्त हुए हैं, इनमें निम्नलिखित मुख्य हैं:

पुरस्कार का नाम	प्रदान करने वाले महानुभाव/ संस्था का नाम
मैन ऑफ द ईयर अवार्ड	एकोमोडेशन टाइम्स नेशनल रियल एस्टेट अवाड्र्स
इन्फ्रास्ट्रक्चर पर्सन ऑफ द ईयर अवार्ड	कंस्ट्रक्शन वीक इंडिया अवाड्र्स
रियल एस्टेट और ईपीसी क्षेत्रों में वैश्विक मानकों को प्रोजेक्ट एक्सपोर्ट करने में उत्कृष्ट योगदान के लिए	श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी, पूर्व प्रधानमंत्री
क्रिसिल रियल एस्टेट अवाड्र्स	सीएनबीसी आवाज़ २००८
लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड	एनडीटीवी प्रॉपर्टी अवाड्र्स २०१४
भारत के शीर्ष इनो-विज़नरी बिल्डर्स	सीडब्ल्यूएबी २०१४ ट्रॉफी
लाइफटाइम अचीवमेंट अवाड्र्स	CREDAI-MCHI गोल्डन पिलर्स रियल एस्टेट अवाड्र्स २०२३
लाइफटाइम अचीवमेंट अवाड्र्स	कंस्ट्रक्शन वर्ल्ड ग्लोबल अवाड्र्स २०२४

श्री मुणोत रियल इस्टेट और ईपीसी क्षेत्र के उद्यमियों को सलाह भी देते हैं क्योंकि वे अपने उद्यम क्षेत्र में विकास और बदलाव लाना चाहते हैं।

अपनी व्यावसायिक गतिविधियों से अलग 'कल्पतरु' विभिन्न सामाजिक गतिविधियों से भी जुड़ा हुआ है जो उन समुदायों को सकारात्मक प्रभावित करते हैं, जिनकी वह सेवा करता है। ३१ मार्च, २०२४ तक समूह ने वैश्विक स्तर पर २७,००० से अधिक लोगों को रोजगार दिया और ७३ देशों में कार्यरत है। श्री मुणोत का दृढ़ विश्वास है कि अच्छी शिक्षा और अच्छा स्वास्थ्य दो स्तंभ हैं जिन पर देश का भविष्य टिका हुआ है।

अपनी इन उपलब्धियां से अलग परोपकार के प्रति गहरी आस्था से जुड़े श्री मुणोत जी ने 'मुणोत फाउंडेशन' स्थापित किया, जिसमें वे प्रबंधक ट्रस्टी के रूप में कार्यरत हैं, यह फाउंडेशन शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में विशेष सक्रिय है, जो पूरे समाज पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है, अपनी जन्मभूमी 'पीपाड़' में श्री मुणोत ने स्व. सुगनीदेवी पुखराज जी मुणोत राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय की स्थापना की, जिसका नाम उनकी माँ के नाम पर रखा गया। उन्होंने अपनी पत्नी श्रीमती शरदचन्द्रिका मोफतराज मुणोत की स्मृति में 'स्वाध्याय भवन' का निर्माण करवाया।

श्री मोफ़तराज पी. मुणोत सुपुत्र पराग के साथ

वर्ष २००१ में पीपाड़ में स्वास्थ्य विभाग के सहयोग से एक 'चिकित्सा एवं शल्य चिकित्सा शिविर' का आयोजन किया, जिसका विधिवत भूमिपूजन कर कॅम्प का शुभारंभ उनके बेटे और बहू श्री पराग एवं मोनिका मुणोत ने किया। यह कॅम्प १५ दिन तक चला और इसमें आसपास और दूर दराज के ग्रामीण क्षेत्रों से आये हुए करीब ८००० व्यक्तियों ने लाभ उठाया, इसमें स्वास्थ्य विभाग के १५-४५ विभिन्न डॉक्टर्स ने आवश्यकतानुसार सेवायें प्रदान की, आज तक के सबसे बड़े और सबसे लम्बी अवधि के लिये 'पीपाड़' शहर में लगे इस कैम्प को सफल बनाने में विभिन्न वर्गो के सैकड़ों नागरिकों ने स्वेच्छिक (Volunteers) रूप में अपनी सेवाएँ प्रदान कर भरपुर सहयोग दिया, सबसे महत्वपूर्ण सेवा रही कॉलेज के हॉल में, जिसे उस समय ऑपरेशन थियेटर में परिवर्तित किया गया था, इसमें शल्य (Operation) क्रिया के बाद सैकड़ों मरीजों को स्ट्रेचर पर सुलाकर २०० से ३०० मीटर की दूरी पर स्थिति विशालकाय टेंटों में निर्धारित पलंग (Bed) पर जाकर सावधानी पूर्वक लेटाना, जबकि मरीज उस समय पूरी तरह से होश में नहीं रहा, इस कठिन काम में चार-चार युवानों की कई टीमें लगी हुई थी जो निरंतर कार्यरत थी। सेवा प्रदाता volunteers के चेहरों पर जो आनन्द, उत्साह, खुशी और संतोष झलकता था, वो देखने योग्य था। शिबिर के दौरान राजस्थान उच्च न्यायालय के न्यायाधिश माननीय श्री राजेश जी बालिया ने शिविर परिसर का दौरा किया एवं मानवीय सेवाओं के इस आयोजन के लिए श्री मोफतराज मुणोत की सराहना की।

समूह के भविष्य के बारे में बात करते हुए श्री मोफतराज जी ने अपने बेटे पराग के सक्षम नेतृत्व में समूह के भविष्य के बारे में संतोष व्यक्त किया और कहा कि 'मुझे अपने बेटे पराग पर अविश्वसनीय रूप से गर्व है, जो कल्पतरु लिमिटेड के प्रबंध निर्देशक के रूप में कार्यरत है, उन्होंने समूह के लिए रियल एस्टेट विकास में नए मानक स्थापित किये जो 'मिल का पत्थर' साबित हो रहा है।

पराग ने कंपनी के भीतर उत्कृष्टता और नवीनतम संस्कृति को विकसित किया है, जो गुणवत्ता, ग्राहक केंद्रियता, प्रौद्योगिकी और स्थिरता की अवधारणा पर आधारित है, जैसा कि 'कल्पतरु' के पुरस्कार विजेता प्रोजेक्ट पोर्टफोलियो से पता चलता है, वे कल्पतरु प्रोजेक्ट्स इंटरनेशनल लिमिटेड (केपीआईएल) के निर्देशक के रूप में भी कार्य करते हैं, जो पावर **शेष पृष्ठ ९ पर...**

पृष्ठ ८ से... ट्रांसमिशन इंजीनियरिंग, खरीद और निर्माण में वैश्विक नेतृत्व करते है। 'कल्पतरु लिमिटेड' में अपनी भूमिका के अलावा श्री पराग विभिन्न उद्योग और व्यापार संघों में सक्रिय रूप से जुड़े हुए हैं।

विदित हो कि श्री पराग ने अमेरिका की कार्नेगी मेलॉन यूनिवर्सिटी से एमबीए किया है, अपने गतिशील नेतृत्व और उत्कृष्टता के प्रति अटूट प्रतिबद्धता के माध्यम से श्री पराग मुणोत 'कल्पतरु' समूह को नई ऊंचाइयों की ओर ले जा रहे हैं। ग्राहकों की संतुष्टि पर ध्यान देने के साथ उनका दूरदर्शी दृष्टिकोण बाजार में एक विश्वसनीय इन्नोवेटिव के रूप में कंपनी की स्थिति को मजबूत करता है।

अपनी जन्मभूमि 'पीपाड़ शहर' के बारे में बताते हुए मोफतराज जी कहते है कि हाल के वर्षों में 'पीपाड़' में बहुत बदलाव हुए हैं, पहले कम सुविधाएं और संसाधन थे, लेकिन अब सभी प्रकार की सुविधाएं उपलब्ध हैं, यहां का प्राकृतिक वातावरण बहुत सुखद और रमणीय है, आपने 'पीपाड़' के साथ भावनात्मक संबंध को व्यक्त करते हुए कहा कि मैंने प्रारंभिक वर्ष वहां बिताए, 'मैं अपने दोस्तों के साथ ग्रामीणों के साथ फिर से जुड़ने व पुराने दिनों को याद करने के लिए अपने

श्री मोफ़तराज पी. मुणोत सीएनबीसी आवाज़ क्रिसिल रियल एस्टेट अवाड्‌र्स २००८ प्राप्त करते हुए

रियल एस्टेट और ईपीसी क्षेत्रों में वैश्विक मानकों को प्रोजेक्ट एक्सपोर्ट करने में उत्कृष्ट योगदान के लिए पूर्व प्रधान मंत्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा सम्मानित होते हुए

गाँव समय-समय पर जाता रहा हूँ एवं जब भी प्रसंग उपस्थित होता है वहां जाने के लिए उत्सुक रहता हूँ, आपका मानना है कि ग्रामीण भारत और इसकी संस्कृति का जश्न मनाया जाना चाहिए। सामाजिक दृष्टिकोण से 'पीपाड़' में एक साथ रहने वाले प्रत्येक धार्मिक समुदाय के लोगों के बीच सद्भाव की आप सराहना करते हैं।

आपने गर्व से कहा कि 'पीपाड़' धार्मिक भूमि है, श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. और वर्तमान आचार्य श्री हीराचंद जी म.सा. की जन्मभूमि है, जहां समय-समय पर दीक्षाएं और चातुर्मास होते रहे हैं। श्री मुणोत अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितेषी श्रावक संघ के दो बार अध्यक्ष रहे हैं एवं वर्तमान में संघ के संरक्षक मंडल के संयोजक के पद पर हैं। आपके दो बार अध्यक्षीय कार्यकाल में संघ में एकता, स्वधर्मी वात्सल्य, संत-सतियों की सेवा, समर्पणता, त्याग, संघ सेवा धार्मिक शिक्षण में विस्तार आदि अनेक कार्य किये, जिससे संघ की गतिविधियों का चहुंमुखी विकास हुआ, आपकी संघ हितैषी अनेकानेक सेवाओं के लिये संघ ने २०१० में सर्वोच्च सम्मान ''संघ सेवा शिरोमणि'' की उपाधि से अलंकृत किया।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि केवल 'भारत' नाम ही हमारे देश का वास्तविक आकर्षण और सार है, देश का यही एकमात्र नाम होना चाहिए, किसी भी अन्य देश के लिए दो अलग-अलग नाम अनसुने हैं। भारत के नाम के बारे में एक मजबूत भावना व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा 'मेरा मानना है कि भारत को केवल 'भारत' ही कहा जाना चाहिए, हमारे देश को दो नामों की आवश्यकता क्यों है? 'भारत' नाम बहुत प्राचीन है, मैं 'एक राष्ट्र-एक नाम केवल भारत' राष्ट्रीय अभियान का समर्थन करता हूं।

शेष पृष्ठ १० पर...

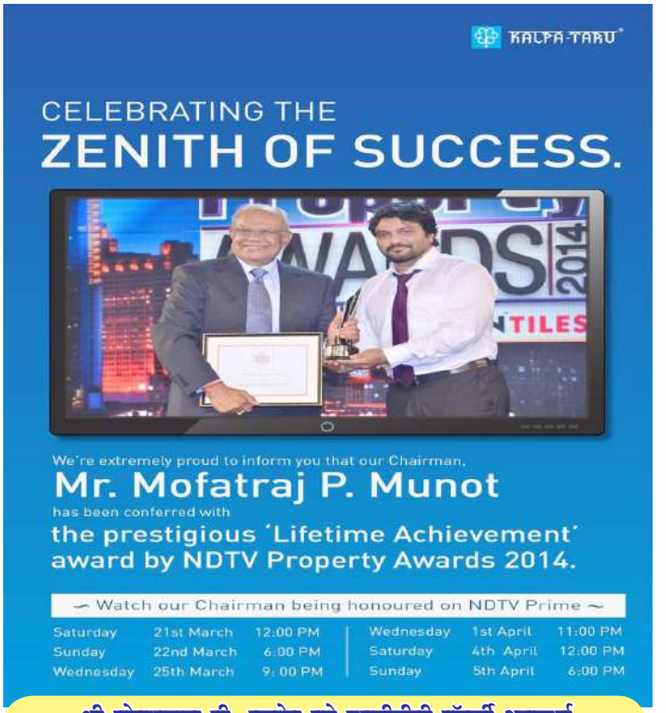

श्री मोफतराज पी. मुणोत को एनडीटीवी प्रॉपर्टी अवाड्‌र्स २०१४ को 'लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड' प्राप्त हुआ

Mr. Mofatraj P. Munot, Chairman, Kalpataru Group receiving the CWAB 2014 trophy for being India's Top Inno-visionary Builders. Also seen are Dr Sudhir Krishna, Former Secretary, Ministry of Urban Development (second from right) and Devdas Kulkarni, Vice President & Head Building Technologies from Siemens (left) with Mr. Pratap Padode, Editor-in-Chief & Managing Director, ASAPP Media Information Group.

श्री मोफतराज पी. मुणोत को भारत के शीर्ष इनो-विज़नरी बिल्डर्स होने के लिए सीडब्ल्यूएबी २०१४ ट्रॉफी प्राप्त हुई।

श्री मोफतराज पी. मुणोत कल्पतरु लिमिटेड को OOH Marketing द्वारा वर्ष २०१४ में रियल्टी प्लस पुरस्कार प्राप्त

लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड्स CREDAI-MCHI गोल्डन पिलर्स रियल एस्टेट अवार्ड्स २०२३ को प्राप्त करते हुए

लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड्स कंस्ट्रक्शन वर्ल्ड ग्लोबल अवार्ड्स २०२४ को प्राप्त करते हुए

पीपाड़ निवासी मुंबई रहवासी
श्री निहालचंद जी मुणोत द्वारा
राजस्थानी परिवारों में प्रसिद्ध 'मेरा राजस्थान'
पत्रिका के मुंबई स्थित कार्यालय में
'पीपाड़' के ऐतिहासिक विशेषांक के
प्रकाशन में मार्गदर्शन करते हुए...

VIYAN VENTURES

INFINIA
LAND OF EVER-GROWING OPPORTUNITIES

URBAN LAND SOLUTIONS

PREMIUM NA PLOTS IN PALGHAR

YOUR LAND, YOUR LEGACY...

Call : 8100 800 300

Site : Infinia, Todkar Farms, Village-Varkhunti, Palghar (East) 401 404.

MAHARERA : P99000051363 Web : infiniapalghar.com

*Stock Image

पीपाड़ शहर

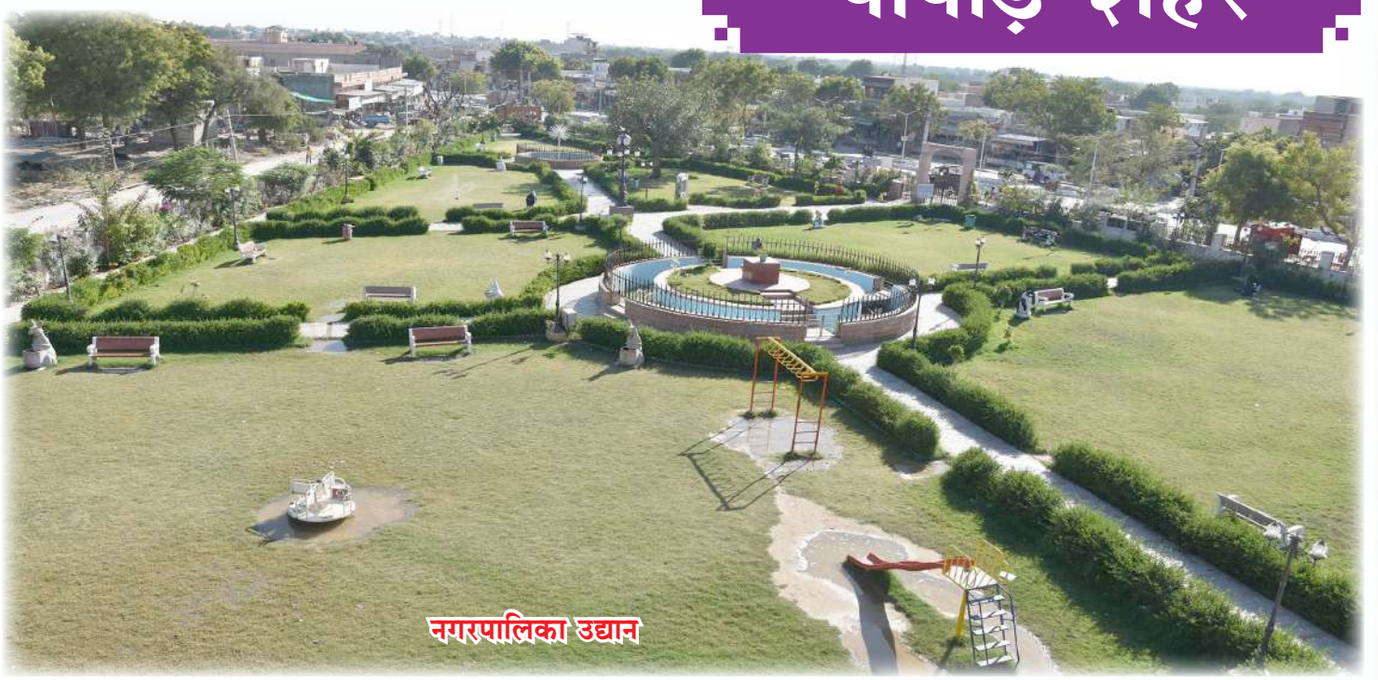
नगरपालिका उद्यान

जोधपुर जिले में एक शहर और नगर पालिका है 'पीपाड़' जो जोजरी नदी के किनारे बसा हुआ है, इसका नाम संत पीपा जी महाराज के जन्मस्थली होने से इसका नाम 'पीपाड़' पड़ा, कुछ लोग यह भी कहते हैं कि इसे पालीवाल ब्राह्मण, जो कि पीपा नाम से मशहूर थे उनके नाम से भी जाना जाता है।

जनसंख्या

इस शहर की आबादी लगभग ५०००० है, जिसमें ५२% पुरुष ४८% महिलाएं हैं, साक्षरता का दर लगभग ५२% है।

शिक्षा

शिक्षा के क्षेत्र में 'पीपाड़' का नाम सर्वोच्च श्रेणी में आता है, यहां से हर वर्ष चार्टर्ड अकाउंटेंट बनते हैं, जो यहां की जनसंख्या के ओसत से ज्यादा है, यहां लड़कियों के लिए श्रीमती सीता देवी चुन्नीलाल बरडीया राजकीय महिला महाविद्यालय एवं छात्रों के लिए राजकीय महाविद्यालय है, जिसमें छात्रों को डिग्री कोर्स दिया जाता है। आईटी कॉलेज भी यहां पर हैं, यहां पर सबसे पुरानी स्कुल,

सेठ राम रख मालानी उच्च माध्यमिक विद्यालय

सेठ भीकमचंद मुथा
राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय

सेठ रामरख मालानी सीनियर उच्च माध्यमिक विद्यालय है, बाद में सेठ हरकचंद चंपालाल कोठारी, महात्मा गांधी उच्च माध्यमिक विद्यालय, श्रीमती सुगनी देवी पुखराज मुणोत राजकीय उच्चविद्यालय, सेठ भीकम चंद मुथा बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, कमल कोठारी प्राथमिक विद्यालय, आदर्श विद्या मंदिर के साथ निजी स्तर के करीब ४० विद्यालय स्थापित हैं। सरकारी आईटी कॉलेज भी हैं, दो निजी कॉलेज भी है। 'पीपाड़' से अनेक व्यक्ति शिक्षित होकर बड़े पदों पर आसीन हैं, इसमें उपखंड अधिकारी डॉक्टर चार्टर्ड अकाउंटेंट, इंजीनियर है।

धार्मिकता

पुराने जमाने में 'पीपाड़' निमाज ठिकाने में आता था, यहां पर गढ़, कोट भी था, गढ (महल) को श्री ओसवाल लोडे साजन संघ सभा संस्थान ने खरीद लिया, इस कोट में (महल) धणी दादोसा का भव्य मंदिर बना **शेष पृष्ठ १३ पर...**

प्रकृति की सुंदरता को सजाए हुए जोधपुर का एक कस्बा
'पीपाड़ शहर' के इतिहास प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनायें

R. Ashok Kumar Mehta
Jain Housing and Constructions Ltd.
No. 98/99 Habibullah Road T. Nagar, Chennai, Tamil Nadu, Bharat - 600017
email : akmehta46@yahoo.com

भारत को 'भारत' ही बोला जाए एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

पृष्ठ १२ से... हुआ है। यहां चिंतामणि पारसनाथ जैन मंदिर एवं सुभाष घाट तालाब पर श्री शांतिनाथ जी का मंदिर बना हुआ है। श्री लक्ष्मी नाथजी का मंदिर, पीपलाद माता जी का मंदिर, शेषनाग भगवान का मंदिर, शिव जी का मंदिर, श्री गणेश मंदिर, रेलवे स्टेशन पर तिरुपति मंदिर एवं रामदेव मंदिर, खत्री मोहल्ले

में महालक्ष्मी मंदिर स्थापित है, यहां पर कुशल गुरु दादाबाड़ी एवं आयंबिल भवन भी बना हुआ है, हर वर्ष आयंबिल तप की आराधना वर्ष में दो बार की जाती हैं, यहां पर अनेक प्राचीन स्थल हैं, इनमें खाकी जी की बगीची, जिरोखा वाले महाराज की बगीची, जैन समाज का चोबिता है, सभी सापासर तालाब पर स्थित है, यहां से लगभग १२ किलोमीटर पर 'कापरडा तीर्थ' है, यहां पर पूरे देश से लोग दर्शन पूजा करने आते हैं। 'कापरड़ा' मंदिर में ठहरने व भोजन की उत्तम व्यवस्था है, आधुनिक धर्मशाला का निर्माण भी किया हुआ है। 'पीपाड़' के पास मोगरिया हनुमान जी का मंदिर बना हुआ है।

'पीपाड़' माली बाहुल्य होने के कारण यहां लिखमीदास जी महाराज का भी मंदिर बना हुआ है एवं यहां सब्जी मंडी बनी हुई है, यहां पर शेष पृष्ठ १४ पर...

पृष्ठ १३ से... शुद्ध ताजा हरी सब्जी हमेशा मिलती है, यहां की हरी मिर्च प्रसिद्ध है, आसपास के क्षेत्र में इतनी बड़ी सब्जी मंडी 'जोधपुर' के अलावा

सब्जी मंडी पीपाड़ शहर

कहीं नहीं है। माली समाज द्वारा यहां पर 'होली' पर 'गैर' निकाली जाती है, इसमें सर्व समाज के हजारों लोग सम्मिलित होकर 'गैर' का आनंद लेते हैं। यहां पर मालानी समाज का सती माता का मंदिर भी है। सामाजिक भवन में श्री ओसवाल लोडे साजन संघ सभा भवन श्री ओसवाल बड़ी न्यात भवन, जैन भोजन शाला भी यहां पर बना हुआ है। महेश्वरी पंचायत भवन, स्वर्णकार समाज भवन मंगल कार्यालय, पुष्पा भवन आदि सामाजिक भवन बने हुए हैं। विश्व हिंदू परिषद, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, भारत विकास

ओसवाल लोड़े साजन न्याति भवन

परिषद आदि सामाजिक संस्थाएं हैं।

कवाड़ परिवार द्वारा आधुनिक ए. सी. अतिथि भवन भी बना हुआ है। जैन समाज के पधारे हुए अतिथियों के लिए यहां अच्छी सुविधा उपलब्ध है। अन्य स्थानों में बाबा आश्रम एवं जैन धर्मशाला है, यहां पर सभी यात्री रात्रि विश्राम करते हैं।

राता उपासरा

'पीपाड़ शहर' को धर्म नगरी भी कहा जाता है, क्योंकि यहां प्रतिवर्ष जैन धर्म के अलावा सनातन धर्म के साधु संतों का चातुर्मास होता है एवं प्रवचन के समय हर धर्म का व्यक्ति वहां पर प्रवचन सुनने के लिए आते हैं। जैन साधु-साध्वी के लिए उपासरे, स्वाध्याय भवन, आराधना भवन आदि बने हुए हैं, जिसमें सबसे पुराना प्राचीन 'राता उपासरा' है, यहां पर हजारों **शेष पृष्ठ १५ पर...**

प्रकृति की सुंदरता को सजाए हुए जोधपुर का एक कस्बा
'पीपाड़ शहर' के इतिहास प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनायें

प्रेमचंद मुणोत
Mob. : 9422114282

प्रकाशचंद मुणोत
Mob. : 9422808386

पुराना बस स्टैंड

मुणोत प्रेमचंद धरमचंद
बिकानेरी पापड, मुरब्बे, सुखे साग तथा किराणा के व्यापारी

मुणोत बंधु
धारस्कर रोड, इतवारी, नागपुर, महाराष्ट्र, भारत - 440002
Ph. : 0712-2767708 / 2777608

धार्मिकता और प्रकृति का अद्भुत संगम 'पीपाड़ शहर'
के इतिहास प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनायें

CA. Padam J. Kothari
B.Com. , FCA
Mob. : 98921 04093

PADAM J. KOTHARI & CO.
Chartered Accountants

Office: A.115 Simplex Khush Aangan, 82.S.V. Road., Malad West, Mumbai, Maharashtra, Bharat- 400064
Office: 202, Maker Bhavan 3, 21, New Marine Lines, Mumbai, Maharashtra, Bharat - 400 020 Ph. : 22-22033373
email : padamjk@yahoo.com web : www.padamjk.com

धार्मिकता और प्रकृति का अद्भुत संगम 'पीपाड़ शहर'
के इतिहास प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनायें

CA. Subhash U. Loonawat
B.Com. , A.C.A.
Mob. : 09426585729

RONAK INVESTMENT CO.

134, Shri Mahavir Cloth Market, D. B. Road,
Ahmedabad, Gujarat, Bharat - 380022
email : ronakinv@yahoo.com

भारत को 'भारत' ही बोला जाए एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

पृष्ठ १४ से... जैन साधु-साध्वी जी प्रवचन कर चुके हैं, इसका संचालन श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ संस्थान द्वारा किया जाता है।

चिकित्सा

चिकित्सा की दृष्टि से यहां पर श्रीमती मनोहर बाई मुणोत जिला अस्पताल बना

मनोहर बाई मुणोत राजकीय जिला अस्पताल

हुआ है, मुणोत परिवार के दानदाताओं ने जमीन उपलब्ध करा कर अस्पताल भवन बनाकर राज्य सरकार को भेंट की, जिला अस्पताल के अंदर महिला प्रसूति विभाग बना हुआ है, बच्चों का विभाग अलग से बना हुआ है, ऑपरेशन थिएटर भी है। पूर्व में यहां श्रीमती सीता देवी कोठारी परिवार द्वारा नेत्र विभाग संचालित किया जा रहा था, नेत्र विशेषज्ञ नहीं होने की वजह से यह बंद है, यहां पर निजी क्षेत्र में गुरु हस्ती नेत्र चिकित्सालय खुला हुआ है।

नगरपालिका: पीपाड़ शहर राज्य राजमार्ग संख्या २१ जोधपुर-मेड़ता मार्ग पर स्थित है, यह जोधपुर जिले का एक प्रशासनिक, ओद्योगिक एवं व्यावसायिक

गुरु हस्ती नेत्र चिकित्सालय पीपाड़ शहर

शहर है। 'पीपाड़ शहर' जोधपुर जिले का एक उपखण्ड मुख्यालय है, नगर पालिका का गठन ६० वर्ष पूर्व हुआ था, उस समय शहर की आबादी अनुमानित २०००० थी। नगरपालिका का निजी भवन नहीं था, **शेष पृष्ठ १६ पर...**

नगर पालिका भवन

पृष्ठ १५ से... आज आबादी ५०००० के करीब है एवं पालिका के पास स्वयं का सुविधायुक्त भवन भी है। सरकारी कार्यालय में पोस्ट ऑफिस, पंचायत समिति

भवन, तहसील भवन, उपखंड कार्यालय, पुलिस थाना, बिजलीघर, वाटर, ऑफिस, सूचना प्रौद्योगिकी, सिविल न्यायाधीश न्यायालय, कोर्ट, बी. सीएम. ओ. कार्यालय, पटवारी भवन, भारतीय स्टेट बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, यूको बैंक, एचडीएफसी बैंक, एक्सिस बैंक, बैंक ऑफ़ बड़ोदा, केनरा बैंक, जोधपुर नागरिक सहकारी बैंक, जोधपुर सेंट्रल कोऑपरेटिव बैंक आदि हैं।

स्टेडियम एवं खेल के मैदान

खेलने के लिए खेल का मैदान भी यहां पर बना हुआ है १५ अगस्त व २६ जनवरी के राष्ट्रीय

आयोजन भी इसी मैदान में मनाए जाते हैं, शहर में एक स्टेडियम, रेलवे स्टेशन के उत्तर की तरफ बना हुआ है, इसके अतिरिक्त छात्राओं के महाविद्यालय में भी खेल का मैदान उपलब्ध है। राज्य राजमार्ग सख्या २१ व पीपाड़ शहर को जाने वाली सड़क के तिराहे पर स्थित मून्दड़ा सर्किल के अन्दर एक छोटा पार्क विकसित किया गया है।

यहां पर सात गौशाला एवं एक अमर बकराशाला है। निराश्रित गोवंश एवं मूक पशु-पक्षियों के लिए यहां पर सनातन क्रांति गौ सेवा समिति द्वारा सेवा की जाती हैं, उनका मेडिकल उपचार भी समिति द्वारा निशुल्क किया जाता है, प्राचीन बावड़ी भी है, जिसमें भेरुजी एवं हनुमान जी का मंदिर बना हुआ है।

मेला उत्सव

गणगौर मेला, दशहरा मेला, गणपति महोत्सव, जल झूलनी ग्यारस पर ठाकुर जी की सवारी, महावीर जन्म कल्याणक पर भव्य शोभा यात्रा भी निकलती है। 'गणगौर मेला' में गणगौर जी की प्रतिमा स्वर्ण आभूषण से श्रृंगारित की जाती

है। 'हिंदू महासभा' द्वारा अखाड़ा भी 'गणगौर मेले' के दिन निकाला जाता है। पीपाड़ की होली पर ऐतिहासिक 'गैर' निकलती है। आथुनी व अगुणी हथाई से पारंपारिक वेशभूषा 'गैर' नृत्य किया जाता है। 'गैर' में हाथों में कृषि औजार, छाते, भगवा ध्वज 'गैर' के आकर्षण का केंद्र रहते हैं। सुभाष घाट से होते हुए सब्जी मंडी पर 'गैर' का विसर्जन होता है। 'पीपाड़' शहर की पूरे जिले में प्रसिद्ध 'गैर' है, लोग राजस्थानी पहनावा धोती, चोला, साफा पहनकर कृषि औजारों के साथ नृत्य करते हैं।

मोक्ष धाम

'हिंदू महासभा' द्वारा संचालित मोक्ष धाम बना हुआ है। दाह संस्कार हेतु यहां पर निशुल्क लकड़ी की सुविधा उपलब्ध है। लकड़ी हेतु **शेष पृष्ठ १७ पर...**

धार्मिकता और प्रकृति का अद्भुत संगम 'पीपाड़ शहर' के इतिहास प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनायें

Pramodkumar J. Munot
B.E.A.M.I.E., EC Member COEAI
Mob. : 9823078570

THE KALYAN PICTURES PVT. LTD.
JAWAHARLAL MUNOT PUBLIC TRUST
(Registered Office)
Prahes Bungalow, Opp. State Bank of India, Rajapeth Badnera Road, Amravati, Maharashtra, Bharat - 444601
0: +91-721-2673429, F: 2677167 / kpplamti@gmail.com
(Br. Off.) : 1, Meghdoot, Marine Drive, Mumbai, Maharashtra, Bharat - 400002 / 0: +91-22-22810895, F: 022-22816907
email : pramod.munot@gmail.com

भारत को 'भारत' ही बोला जाए एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

पृष्ठ १६ से... भंडार बना हुआ है, किसी भी समाज का व्यक्ति निशुल्क दाह संस्कार कर सकते हैं, अपनी इच्छा अनुसार राशि भेंट कर रसीद कटवा सकते हैं। वर्तमान में श्री दुलीचंद जी सोनी व्यवस्था देख रहे हैं।

यातायात व्यवस्था

बस: राज्य राजमार्ग संख्या २१ पर स्थित होने के कारण यहां यातायात आवृत्ति अधिक है, शहर की मुख्य आन्तरिक सड़कों में बस स्टेण्ड, रेलवे स्टेशन, सरकारी कार्यालय, थोक अनाज मंडी, फल एवं सब्जी मंडी तथा औद्योगिक क्षेत्र की ओर जाने वाली सडकें है, इन सड़कों की चौड़ाई ५० फीट से ७० फीट के मध्य है, इन सड़कों के दोनों ओर व्यावसायिक गतिविधियां, सरकारी कार्यालय, शिक्षण सस्थाए आदि निर्मित है, शहर में मुख्य सड़कों पर पार्किंग होने से वाहन सड़कों के मार्गाधिकार क्षेत्र में ही खड़े रहते है, इससे यातायात व्यवस्था बाधित होती है।

रोडवेज बसों एव निजी बसों के संचालन हेतु इस शहर में दो बस स्टेण्ड है, एक पुराना बस स्टेण्ड जो खेजड़ला से आने वाली सड़क के उत्तर की ओर स्थित है, बस स्टेण्ड में राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम तथा निजी बसों का सचालन होता है, बस स्टेण्ड से यात्रियों के लिए विश्राम गृह बना हुआ है, यहां से प्रतिदिन लगभग ४० राज्य पथ परिवहन की बसें तथा ४० निजी बसें संचालित होती है, इसके अतिरिक्त जोजरी नदी के उत्तर की तरफ मुख्य सड़क पर थोक कृषि उपज मण्डी समिति के दक्षिण दिशा में नया बस स्टेण्ड सहभागिता के आधार पर निर्मित किया गया है, बस स्टेण्ड से राज्य पथ परिवहन निगम तथा निजी बसों का संचालन होता है, यहां से बसें जोधपुर, नागौर, मेड़ता आदि के लिए जाती है।

रेल: जोधपुर से 'पीपाड़' रोड रेलवे स्टेशन होते हुए बिलाड़ा तक बड़ी रेल

लाईन है, जिस पर 'पीपाड़' शहर का रेलवे स्टेशन स्थित है, यह रेल लाईन 'बिलाड़ा नगर' तक ही जाती है, यहां से रोजाना एक यात्री रेलगाड़ी प्रातः बिलाड़ा से पीपाड़ शहर एवं पीपाड़ रोड रेलवे स्टेशन होते हुए जोधपुर रेलवे स्टेशन को जाती है, जो इस शहर के पश्चिम की तरफ लगभग ६५ किमी की दूरी पर स्थित है। रेल द्वारा छात्र-छात्राएं, श्रमिक आदि जोधपुर शहर में शिक्षा एवं अन्य कार्यो के लिए जाते हैं। वापसी में शाम को यही गाड़ी जोधपुर से बिलाड़ा को आती है। वर्तमान में 'पीपाड़ शहर' के रेलवे स्टेशन का भवन बहुत ही छोटा है, इसके सामने खुली भूमि उपलब्ध है, जिसमें भविष्य में पार्किंग सुविधा एवं अन्य सुविधाएं विकसित की जा सकती है। 'पीपाड़ शहर' में हवाई सेवा उपलब्ध नहीं है, निकटतम हवाई अड्डा 'जोधपुर' शहर में स्थित है।

वाणिज्यिक

शहर में मुख्यतः खुदरा व्यापार की दुकानें रेलवे स्टेशन से सुभाष घाट, पुराना कोट जाने वाली सड़क तथा नगरपालिका कार्यालय से सब्जी मंडी के सामने वाली सड़क, नये बस स्टेण्ड, थोक अनाज मंडी व मून्दड़ा सर्किल आदि क्षेत्रों में स्थित है। नये बस स्टेण्ड के पास नगर पालिका द्वारा दुकानें निर्मित की गयी हैं। मुन्दड़ा सर्किल से पूर्व की तरफ राज्य राजमार्ग सख्या २१ पर भी छितरे रूप में दुकानें बनी हुई है। राज्य राजमार्ग सख्या २१ का बाई-पास जो दक्षिण की तरफ 'मेड़ता सिटी' की ओर जाने वाले मार्ग पर व्यवसायिक गतिविधियां संचालित हैं। सुभाष घाट से कोट को जाने वाली सड़क पर अधिकतर सामान्य व्यापार, कपड़ा, किराणा व अन्य दैनिक उपयोग की दुकानें स्थित है, यह बाजार भीड़ भरा व काफी व्यस्त रहता है, शहर में वर्तमान में लगभग ५०० खुदरा व्यापार की दुकानें स्थित है, दुकानों के सामने पार्किंग सुविधा उपलब्ध नहीं है और वाहन सड़क के मार्गाधिकार में ही पार्क किये जाते हैं। बस स्टेण्ड के पास नव निर्मित व्यावसायिक कॉम्पलेक्स के समीप टैम्पो आदि अव्यवस्थित रूप में यत्र-तत्र खड़े रहते हैं जो कि यातायात में बाधक बन जाते हैं। नये बस स्टेण्ड के अन्दर चारों ओर अनाधिकृत कच्ची दुकाने स्थित है, जिनसे बसों के आने-जाने में व्यवधान उत्पन्न होता है।

शहर में मून्दड़ा सर्किल जाने वाली मुख्य सड़क के पूर्व की तरफ कृषि उपज मंडी निर्मित है, इसी मुख्य सड़क पर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड कार्यालय के पूर्व दिशा में थोक व खुदरा सब्जी मंडी स्थित है, जिसका माली, सैनी सेवा संस्थान, पीपाड़ तथा व्यापारियों द्वारा दुकानें आवासीय भवनों में संचालित हो रही है, यहां पांच पेट्रोल पम्प, छः बैंक, एक.एफ.सी.आई. गोदाम, चारा मण्डी व छोटी होटलें आदि स्थित हैं।

'पीपाड़' शहर के क्षेत्रीय गाँवों के लोग 'पीपाड़' शहर में व्यापार करने आते हैं, यह क्रय-विक्रय का प्रमुख केन्द्र हैं, इससे यहां ग्रामीण खरीददारों की भीड़ लगी रहती है, प्रमुख व्यावसायिक केन्द्र होने से लोगों का इस स्थान से जुड़ाव बढ़ा है।

प्रकृति की सुंदरता को सजाए हुए जोधपुर का एक कस्बा 'पीपाड़ शहर' के इतिहास प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनायें

Nemichand Jain
Mob. : 9845013016

अध्यक्ष श्री श्वे. स्थानकवासी जैन श्रावक संघ हलसूर बेंगलुरु

Gurukrupa Bhavan No. 83, Ramkrishnan Mutt Road,
Ulsoor, Bangalore, Karnataka, Bharat - 560008

भारत को 'भारत' ही बोला जाए एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

धार्मिकता और प्रकृति का अद्भुत संगम 'पीपाड़ शहर'
के इतिहास प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनायें

D NAVARATHAN KAVAD JAIN
Mob. : 99400 94007

AARTHI JEWELLERY

708, Trunk Road, Poonamallee, Chennai, Tamil Nadu, Bharat - 600056

भारत को 'भारत' ही बोला जाए एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

पीपाड़ में बकराशाला

श्री जीवदया बकराशाला पीपाड़ लगभग १०० वर्षों पुराना है, वर्धमान स्था. जैन श्रावक संघ के तत्वाधान में चलता था, जिसमें २५-३० बकरे इकट्ठे होने पर 'जोधपुर' बकराशाला में भेज दिया जाता था।

लगभग २५ वर्ष पुर्व श्रीमती तिलादेवी जीवराज जी मुथा परिवार द्वारा ८ बिघा जमीन, पम्प सेट ट्यूबवैल के साथ एक नया भव्य बकराशाला बनाने का बीड़ा उठाया। श्री नेमीचंद जी लुणावत, जीवराज जी मुथा परिवार के वरिष्ठ सदस्य श्री दीपचंद जी मुथा आदि में मिलकर एक विधिवत ट्रस्ट 'श्री जैन जीवदया बकराशाला ट्रस्ट' स्थापना की, जिसमें इनकम टैक्स की धारा ८०जी के अंतर्गत छुट की सुविधा प्राप्त है। इसमें श्री पंकज कोठारी कोषाध्यक्ष हैं। श्री नेमीचंदजी लुणावत के अथक प्रयासों से बकराशाला में पांच चारा हॉल, तीन आवास कर्मचारियों के लिये, एक भव्य बड़ा हॉल बकरों के रहने के लिए व एक पानी का बड़ा टैंक, एक बकरा चिकित्सालय, एक साधु साध्वीजी भगवंत हेतु आराधना भवन, भव्य प्रवेश द्वार के साथ निर्माण करवाया गया, साथ में एक विशाल कॉर्पस फंड भी बनाया गया, जो राशी एफडी में रखकर उसके ब्याज से खर्चा चला रहे है। बकराशाला में लगभग २०० बकरा है। सुबह नवकारसी से पुर्व निरन्तर पंकज कोठारी, जो पिछले १० वर्षों से निरन्तर दैनिक सेवा में

लगे हुए है, ५० किलो धान कबूतरों को, चिड़ीया वगैरह पक्षियों को बाजरा व बकरों को दिया जाता है।

दीपचंद मुथा अध्यक्ष श्री जैन जीवदया बकराशाला शाला ट्रस्ट पीपाड़, श्री नेमीचंद जी लुणावत के अथक प्रयासों व श्री पंकज कोठारी की निरन्तर सेवा की भूरी-भूरी अनुमोदना है। 'मेरा राजस्थान' पत्रिका प्रबुद्ध पाठकों का अभिनंदन करते हुए बकराशाला में सहयोग सेवा देने का निवेदन करता है।

प्रकृति की सुंदरता को सजाए हुए जोधपुर का एक कस्बा
'पीपाड़ शहर' के इतिहास प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनायें

Khemchand Kankriya

Mob: 9480697272

Matruchhaya

KANKRIYA GROUP

Finance, Chemicals, Plastic Packaging (Manufacturing and import), Real estate and Investments

No. 19, VP Colony, 3rd Cross Street, Ayanavaram, Chennai, Tamil Nadu, Bharat - 600023
No. 1276, 14th Cross, 6th Main, Indiranagar II Stage, Bengaluru, Karnataka, Bharat - 560038.

भारत को 'भारत' ही बोला जाए

Remove 'INDIA' Name From The Constitution

पुण्यधरा पीपाड़ के गौरव कांतिलाल कोठारी

पीपाड़: लब्ध प्रतिष्ठित कोठारी परिवार के सुश्रावक श्रीमान् चम्पालाल जी हरकचन्द जी कोठारी के घर आंगन में जन्म लेकर कांतिलाल जी ने परिवार का गौरव बढ़ाया, आपके पूर्वजों ने व्यावसायिक दृष्टिकोण से हरसोर, नागौर, पीपाड़ शहर, जोधपुर के पश्चात् मुम्बई महानगर को अपनी कर्मभूमि बनाकर मारवाड़ एवं मुम्बई महानगर की शोभा अभिवृद्धि की है, आपने अपने पिताश्री और परिवार की गतिविधियों का संचालन करके और नए-नए कार्यक्रमों का क्रियान्वयन कर अपने पिताश्री व कोठारी परिवार की यश-कीर्ति बढ़ाई है।

श्रीमती निर्मला जी व कांतिलाल कोठारी

आपने अपने लघु भ्राता प्रेमचन्द कोठारी एवं स्व. रमणिकलाल जी कोठारी के साथ व्यावसायिक क्षेत्र में अनेक उपलब्धियां प्राप्त करते हुए संघ एवं समाज की सेवा में सदैव तत्पर रहे।

आपके परिवार ने पुण्य से प्राप्त लक्ष्मी का सदुपयोग करते हुए अपनी जन्मभूमि 'पीपाड़' में बालक-बालिकाओं के अध्ययन-अध्यापन एवं संस्कार निर्माण के लिए एक भव्य विद्यालय की स्थापना की, जो आज भी निरन्तर नन्हें मुन्ने बालक-बालिकाओं को संस्कार प्रदान करने में अहम भूमिका निभा रहे हैं, साथ ही सैकड़ों गौ-माताओं का भरण-पोषण और रख-रखाव के साथ गौशाला की स्थापना की, जहां पर निरन्तर गौसेवा का कार्य चल रहा है।

भारतवर्ष में अनेक स्थानों पर स्थानक निर्माण में आपका एवं आपके परिवार का महत्वपूर्ण योगदान रहा है, उसी क्रम में सूर्यनगरी-जोधपुर में सरदारपुरा क्षेत्र में कोठारी भवन स्थानक का निर्माण करवाया, इसमें रख-रखाव, सार-संभाल और नित्य-नए सुधार करवाकर, क्षेत्र के लोगों को धर्म-सहयोग देकर अनुग्रहीत कर रहे हैं। शासन-सेवी बनकर आप और आपका परिवार वस्तुतः अनुकरणीय अनुमोदनीय कार्य कर रहा है। आप संत-सेवी, संघ-सेवी, समाज हितैषी समाज हितचिन्तक हैं, आप मानते हैं कि समाज में जब तक सकारात्मक सोच नहीं बनेगी, वह उन्नति प्रगति नहीं कर सकेगा, आप जैसे उदारमना और सुज्ञ श्रावकरत्न समाज-सुधार के काम को आगे बढाते रहें, तो वह दिन दूर नहीं जब समाज का हर सदस्य अपने आचार-विचार व्यवहार से सजग तो बनेगा ही, प्रगति पथ पर आगे बढ़ता रहेगा।

कांतिलाल जी अपनी जन्मभूमि 'पीपाड़ सिटी' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि पीपाड़ एक छोटा कस्बा था, लेकिन अंग्रेजों ने समय से पहले ही शहर घोषित कर दिया गया, उनको शायद पता लग गया था एक दिन यह शहर वेटिकन सीटी बनकर रहेगा, जैसे युरोप में पुण्य नगरी Vatican city Pope's city है वैसे ही अंग्रेजों ने रेल्वे लाईन बिछाकर स्टेशन बनाकर उसका नामकरण 'पीपाड़ सिटी' कर दिया और वहां पर धार्मिक लोगों का निरंतर आकर बसने का ध्येय बन गया। व्यापार की दृष्टिकोण से आस-पास के १०० गांव, यहां से होलसेल के रेट पर सामान खरीदकर अपनी आजीविका अपने अपने गांव में कमाते हैं। जैनधर्म के तथा महेश्वरी और जाट, माली, राजपूत, ब्राह्मण, मोची, तेली, तंबोली, खटीक तथा मुस्लिम, सिंधी और रंगरेज (जो सूद खोर नहीं होते) उन्होंने अपना कार्य यहां विकसित किया। 'पाकिजा' फिल्म का गाना लिखने वाले गुलाम मोहम्मद और कैफ भोपाली यहां के रंगरेजो से मिले और वह गाना लिखा 'हमरी न मानो सैंया रंगरेजवा से पूछो, जिसने अशर्फि गज रंग दिना दुप्पटा मेरा। इन्हीं लोगों ने ले लीना दुप्पटा मेरा, इस गाने का संगीत खैय्याम साहब ने लिखा जो की बहुत मशहूर हुई ये फिल्म, यहां हिन्दू रंगरेज भी होते थे, उनका मोहल्ला रंगरेजीया बास कहा जाता था, आगे चलकर यह गीत लिखने वाले कांतीलाल कोठारी जी ने राजकपूर और हेमा मालिनी की पहली फिल्म 'सपनों का सौदागर' में पूरा फायनेन्स, साले साहब जवाहरलाल जी मुणोत के संग किया, जो सुपर हिट हुई और आप हेमा जी को ऐवर ग्रीन हिरोइन कहते रहे। स्कूलों का अंबार, कालेज भी बहुत खुले, सुपर प्रगती के पथ पर 'पीपाड़ सीटी' चल पड़ी है...

जय-जय राजस्थान! जय भारत!

पीपलाद माता का मन्दिर

जोधपुर से लगभग ६४ किलोमीटर दूर स्थित 'पीपाड़' नामक शहर में स्थित पीपलाद माता का मन्दिर प्रतिहार काल का प्रतीत होता है, इसकी बनावट कलात्मक है, इसके मुख्य मन्दिर के पीछे एक आलय में षडानन कार्तिकेय की प्रतिमा स्थापित है, जिससे अनुमान होता है कि मूल रूप से यह मन्दिर देवी मन्दिर नहीं था, वास्तव में यह मन्दिर पीपलाद माता के मन्दिर से भी प्राचीन है, जिसे राजा गंधर्वसेन ने बनाया था, इसकी बनावट ओसियां मंदिर के जैसी है।

कलात्मक स्तम्भों व इसके द्वारों की बनावट से अनुमान होता है कि यह मन्दिर ८ वीं शताब्दी में निर्मित हुआ होगा। मन्दिर में पीपलाद माता की प्रतिमा के बांयी ओर गणेशजी तथा दाहिनी ओर भैरव जी की प्रतिमा स्थापित है। भैरव जी की एक प्रतिमा गर्भगृह के बाहर स्तम्भ के पास भी स्थापित है। पीपलाद (पिप्पलाद) माता का एक प्रसिद्ध मन्दिर उदयपुर के 'ऊनवास' नामक गाँव में भी स्थित है।

श्रीमती सीता देवी चुन्नी लाल बरडिया राजकीय कन्या महाविद्यालय, पीपाड़ शहर

'पीपाड़' सिटी पश्चिमी राजस्थान में स्थित एक छोटा सा शहर है, पहले यहाँ उच्च शिक्षा का अभाव था, कुछ सम्मानित नागरिकों ने आगे आकर एक विशाल भवन और कॉलेज का एक अच्छा परिसर बनवाया जो लड़कियों की शिक्षा में आज महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

शिक्षा विकास समिति के तत्वाधान में निर्मित भवन में श्रीमती सीता देवी चुन्नी लाल बरडिया राजकीय कन्या महाविद्यालय की शुरुआत जुलाई १९९७ में मात्र ४० छात्राओं के साथ हुई थी, जो २०१६-१७ में बढ़कर ८३६ हो गई। कॉलेज में कला संकाय के साथ हिंदी साहित्य, संस्कृत, राजनीति विज्ञान, गृह विज्ञान और इतिहास वैकल्पिक विषय हैं, वाणिज्य संकाय की शुरुआत २०१०-११ में स्व-वित्त कार्यक्रम के रूप में हुई।

'हिंदी' साहित्य में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम २००६ में शुरू किया गया था, लेकिन उच्च शुल्क संरचना के कारण यह वहनीय नहीं रहा और पाठ्यक्रम को जारी नहीं रखा जा सका।

कॉलेज में उपलब्ध गतिविधियाँ और सुविधाएँ

कॉलेज विशाल भूमि पर स्थित है, जिसमें विशाल भवन और अच्छा फर्नीचर है।

खेल मैदान: एक अच्छा और विस्तृत खेल मैदान, जिसमें हॉकी, वॉलीबॉल, खो-खो और बैडमिंटन की सुविधाएं उपलब्ध हैं। कॉलेज के हॉकी खिलाड़ी पिछले पांच वर्षों से विश्वविद्यालय स्तर पर विजेता रहे हैं।

कैंटीन: कॉलेज परिसर में एक कैंटीन है जो उचित दरों पर स्वस्थ नाश्ता और चाय, कॉफी प्रदान करता है।

राष्ट्रीय समाज सेवा: एनएसएस की एक इकाई जिसमें १०० छात्र पंजीकृत हैं, समाज कल्याण के लिए पूर्ण समर्पण के साथ कार्य करता है, समय-समय पर निकटवर्ती ग्रामीण क्षेत्रों में शिविरों का आयोजन किया जाता है।

रेंजर गाइड: रेंजर गाइड की एक इकाई कार्यरत है, जिसमें २४ छात्र हैं, जो राज्य स्तर पर आयोजित शिविरों में भाग लेते हैं।

महिला प्रकोष्ठ: यह प्रकोष्ठ समाज में महिलाओं की समस्याओं से संबंधित

विभिन्न कल्याणकारी गतिविधियों का आयोजन करता है तथा छात्राओं को समाज में महत्वपूर्ण सक्रिय एवं सार्थक भूमिका के लिए तैयार करता है।

सांस्कृतिक और साहित्यिक गतिविधियाँ: कॉलेज में समय-समय पर पाठ्येतर गतिविधियाँ आयोजित की जाती है, जैसे एकल नृत्य, समूह नृत्य, वाद-विवाद, निबंध लेखन, तात्कालिक, गीत प्रतियोगिताएं जो छात्रों के समग्र व्यक्तित्व के विकास में मदद करता है।

धार्मिकता और प्रकृति का अद्भुत संगम 'पीपाड़ शहर'
के इतिहास प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनायें

Dr. Nihalchand Mehta
Super Specialist
Hepatologist and Gastro Surgeon
Mob. : 98290 26424

D-14 , Shastri Nagar, P&T circle, Jodhpur, Rajasthan, Bharat- 342003

भारत को 'भारत' ही बोला जाए एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

प्रकृति की सुंदरता को सजाए हुए जोधपुर का एक कस्बा
'पीपाड़ शहर' के इतिहासप्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनायें

KANHAIYALAL GYANCHAN MUNOT
BUSINESS ASSOCIATE
Mob. : 9374714627 / 8734054000

GM SECURITIES
Shares & Stock Broker
509, Goodluck Textile Market, Near Radhey Market,
Ring Road, Surat, Gujarat, Bharat - 395002
email : gmsecsurat@hotmail.com Tel. : 0261-2351250

A PERSON WHO KEEPS PATIENCE IS
LIKELY TO WIN IN SHARE MARKET

प्रकृति की सुंदरता को सजाए हुए
जोधपुर का एक कस्बा
'पीपाड़ शहर' के इतिहास प्रकाशन
पर हार्दिक शुभकामनायें

Kamal Jain

Director - Integrity and Chief Ethics Officer
Mob. : 98240 16611

KALPATARU PROJECTS INTERNATIONAL LTD.

Factory & Registered Office : 101, Part-III,
GIDC Estate, Sector - 28, Gandhinagar,
Surat, Gujarat, Bharat - 382028
Tel. : 79-232-14000 / 79-232-14109
email : kamalk.jain@kalpataruprojects.com

धार्मिकता और प्रकृति का अद्भुत संगम 'पीपाड़ शहर'
के इतिहास प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनायें

Ugamraj Pukhraj Mutha
Mob. : 98201 55610

Vinay Ugmaraj Mutha

Resi. : 1401, Sunrise Venetia, 14th Floor, 168/172 A,
Jagannath Shankar Seth Road, Girgaum, Near Ambe Wadi Post Office,
Mumbai, Maharashtra, Bharat - 400 004
email: muthavinay@yahoo.co.in

भारत को 'भारत' ही बोला जाए एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

बाबा रामदेव गोपाल गौशाला पीपाड़ सिटी

बाबा रामदेव गोपाल गौशाला की स्थापना सन २००० में की गई थी, इस गौशाला के निर्माण में मुख्य भूमिका गंगा सिंह चौहान, घेवरराम जी पटेल, रूप जी पटेल की रही, सन २००० में जब यहां अकाल पड़ा था उस समय यहां के दानवीर मांगीलाल सरगरा जी ने इस गौशाला को बनाने के लिए २५ बीघा जमीन दान के रूप में दी, यह गौशाला १३० बीघा जमीन पर फैला हुआ है, गायों के लिए पक्के ठाण और शालाएं बनी हुई हैं। गौशाला के भीतर एक तालाब है, लंबाई १२०० फुट, चौड़ाई ६०० फुट और गहराई १२ फुट है। गौशाला के भीतर तीन बड़े-बड़े गोदाम, पशुओं को पानी पीने के लिए १२ टाकें, चारों के लिए १४ खडी बनी हुयी हैं, ट्यूबेल भी लगे हुए है। पक्षी विश्राम घर भी बना हुआ है, जिसमें प्रतिदिन कबूतर व अन्य पक्षी आते हैं, पक्षियों के लिए प्रतिदिन ५० किलो दाना बिखेरा जाता है, गौशाला में भगवान कृष्ण व अन्य देवी देवताओं के मंदिर भी बने हुए हैं। वर्तमान में इसके अध्यक्ष राम स्वरूप भुतड़ा है और उनके सहयोगी के रूप में मूलसिंह राजावत, जयनारायण जांगिड़, सुरजमल सोनी, भगीरथ बिश्नोई, प्रकाश चौधरी, अमराराम पटेल व १४ गौपालक हैं।

नए साल में प्रभु दर्शन की तैयारी श्री सांवलिया सेठ में सिंह द्वार से ही लगेगी भक्तों की कतार

खाटूश्यामजी में वीआईपी दर्शन नहीं,

सालासर में ३०० कैमरे लगे, श्रीनाथजी में नया प्रवेश द्वार

अजमेर: नए साल में प्रदेश के ५ बड़े मंदिरों में ३१ दिसंबर से २ जनवरी तक करीब २० लाख भक्त दर्शन किए। मंदिर से जुड़े प्रबंधन एवं समितियों की ओर से विशेष व्यवस्था की गई थी, ताकि नए साल की शुरुआत पर भक्त अपने इष्टदेव के आराम से दर्शन कर सकें, मंदिरों में ३१ दिसंबर की रात से ही दर्शनों के लिए भीड़ लगनी शुरु हो गई थी, जो १-२ जनवरी तक रही।

ब्रह्म मंदिर, पुष्कर में भीड़ बढ़ी तो वन वे व्यवस्था से ही दर्शन कराए गए: विश्व प्रसिद्ध ब्रह्म मंदिर में देश-प्रदेश से लोग दर्शन करने पहुंचे। मंदिर समिति के सचिव एवं एसडीएम गौरव मित्तल का कहना है कि सभी व्यवस्थाएं माकूल रही, मंदिर के बाहर से ही रेलिंग के सहारे भक्त लाइन में लगे थे, दर्शनार्थी मुख्य गेट से प्रवेश किया और पीछे के गेट से बाहर निकले। सीसीटीवी कैमरे से २४ घंटे नजर रखी गई थी, मेले की तरह ही भीड़ नियंत्रित करने की व्यवस्था थी।

खाटूश्यामजी: वीआईपी दर्शन नहीं होंगे, ३ किमी पहले ही लगेगी कतार खाटूश्यामजी के आमजन को आराम से दर्शन हो सके, इसके लिए वीआईपी दर्शन बंद रहे, एसडीएम मोनिका सामोर का कहना था कि बाबा के जन्मोत्सव पर १५ लाख भक्तों ने दर्शन किए, नए साल पर रींगस रोड नगर पालिका के पास से डायवर्जन किया गया। करीब ३ किमी रेलिंग में भक्त कतार में चले, इसके बाद दर्शन हुए। नए साल पर प्रोटोकॉल को छोड़ सभी वीआईपी दर्शन बंद थे, १५२ बीघा की सरकारी पार्किंग में वाहन पार्क किया गया। ८०० पुलिस कर्मी और ५०० मंदिर के गार्ड व्यवस्थाओं को संभाला।

श्रीसालासर बालाजी के दर्शन के लिए कतार में आने वाले भक्तों को १५ मिनट में ही दर्शन हो गए सालासर बालाजी धाम की श्री हनुमान सेवा समिति के अध्यक्ष यशोदानंद पुजारी के अनुसार ३१ और १ तारीख के बीच बालाजी के दर्शन करने के लिए देश-प्रदेश से भक्त पधारे थे, ऐसी व्यवस्था की गई थी कि कतार में आने वाले भक्तों को मात्र १५ मिनट में दर्शन हो गए। मंदिर में खास सजावट की गई थी। ३०० सीसीटीवी कैमरों से सारे इंतजाम पर नजर रखी गई थी। १५० गार्ड और १०० पुलिस कर्मी व्यवस्थाओं को संभाला। भक्तों को पानी के पाउच का वितरण भी किया गया था, कई भक्तों ने भंडारे लगाए, प्रसाद वितरण किया गया।

21 वर्ष की उम्र में विवाह करने वाली कन्याओं को इक्कीस हजार सम्मान राशि

जयपुर जिले के २१ वर्ष की उम्र में विवाह करने वाली माहेश्वरी कन्याओं (अधिकतम ग्यारह) को श्रीमती शकुन्तला देवी राधेश्याम परवाल फाउण्डेशन की ओर से सम्मान राशि के रूप में इक्कीस हजार रूपये दिए जाएंगे।

पूर्वोत्तर राजस्थान प्रादेशिक माहेश्वरी सभा की दिनांक २९ दिसम्बर, २०२४ को जयपुर में सम्पन्न कार्यसमिति एवं कार्यकारी मंडल की संयुक्त बैठक में पूर्व प्रदेश अध्यक्ष एवं फाउण्डेशन के अध्यक्ष राधेश्याम परवाल द्वारा समाज की कन्याओं के विलंब से विवाह करने पर चिन्ता व्यक्त करते हुए उक्त घोषणा की गई है।

जयपुर जिला माहेश्वरी सभा के अध्यक्ष सुरेन्द्र बजाज (मो. ९८२९०२६४२७) अथवा जयपुर जिला माहेश्वरी महिला संगठन की अध्यक्षा श्रीमती उमा सोमानी (मो. ९८२९००५१३८) तथा फाउण्डेशन की मंत्री श्रीमती उमा परवाल (मो. ९३५२३३५१५९) से सम्पर्क किया जा सकता है।

- उमा परवाल
मंत्री

धार्मिकता और प्रकृति का अद्भुत संगम 'पीपाड़ शहर' के इतिहास प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनायें

Vijay Prakash Jain
Mob. : 94135-08747

Deepak Jain
Mob. : 94141-16848

BHERUDAS DHARAM CHAND JAIN

Chopata Bazar, Pipar City, Jodhpur,
Rajasthan, Bharat - 342601
Resi. : Mutho Ka Bass, Pipar City,
Dist. Jodhpur, Rajasthan, Bharat

लक्ष्मणगढ़ नागरिक परिषद का वार्षिक उत्सव

कोलकाता: लक्ष्मणगढ़ नागरिक परिषद द्वारा वार्षिक उत्सव धन्य धान्य ऑडिटोरियम में सफलतापूर्वक आयोजित किया गया, इस उत्सव का उद्घाटन ओम जालान बेंगाल एनर्जी, के कर कमलों द्वारा किया गया और दीप प्रज्वलन दीपक जालान, लिंक इंडिया ने किया। समारोह की अध्यक्षता शिव प्रकाश मित्तल ग्रीन पैनल ने किया, इस उत्सव का विशेष आकर्षण लक्ष्मणगढ़ गौरव सम्मान, जिसे परिषद द्वारा सुप्रसिद्ध उद्योगपति के जुपिटर वैगन के संस्थापक मुरारी लाल लोहिया तथा कोलकाता के प्रतिष्ठित गैस्ट्रो एंटरलॉजिस्ट डॉ. महेश गोयनका को प्रदान किया गया। श्री ओम जालान ने परिषद के कार्यों की सराहना करते हुए समाज से जुड़ी समस्याओं पर विचार किया और सेवा कार्यों को प्राथमिकता देने की अपील की। दीपक जालान ने लक्ष्मणगढ़ के विशेषताओं को साझा करते हुए परिषद के सेवा प्रकल्पों की सराहना की, मुरारी लाल लोहिया ने सभी को अपनी प्रेरणादायक निजी जीवन यात्रा से अवगत कराया एवं परिषद को धन्यवाद दिया इस सम्मान के लिए। डॉ महेश गोयनका ने समाज में व्याप्त कई समस्याओं पर विचार रखा। गौरतलब है कि परिषद द्वारा २३ मेधावी विद्यार्थियों का अभिनंदन भी किया गया। परिषद के अध्यक्ष राजेश मित्तल ने परिषद के गतिविधियों के बारे में अवगत कराया। परिषद उपाध्यक्ष अशोक चूड़ीवाला ने मानव सेवा परमो धर्म के पथ पर चल रही परिषद की गतिविधियों को विस्तार पूर्वक बताया।

परिषद सचिव संदीप तोदी ने कोलकाता एवं लक्ष्मणगढ़ में चल रहे कई प्रकल्पों के बारे में बताया।

उत्सव को सफल बनाने में सक्रिय भूमिका रही जुगल किशोर जाजोदिया, राजेंद्र व्यास, संतोष जाजोदिया, सुरेंद्र चमड़िया, राजेंद्र सांगानेरीया, अंकित काबरा, आनंद राठी, विजय जालान, अभिषेक सावलदावाला, केतन चूड़ीवाला, श्रीगोपाल व्यास, रूपेश सोमानी, रवि वर्मा, श्रीमती शारदा लखोटिया, श्रीमती सुषमा राठी, श्रीमती बीणा चूड़ीवाला, श्रीमती ऋतु चमड़िया, श्रीमती प्रीति राठी, श्रीमती कुसुम सोमानी, श्रीमती प्रिया व्यास, रुचि राठी, श्रीमती रेणु काबरा, श्रीमती वर्षा सोमानी, श्रीमती नीलम जालान, श्रीमती अंजू वर्मा, श्रीमती शालिनी अग्रवाल। मंच संचालन रवि वर्मा ने किया।

धार्मिकता और प्रकृति का अद्भुत संगम
'पीपाड़ शहर' के इतिहास प्रकाशन पर
हार्दिक शुभकामनायें

Dr. V.C. Katariya
M.B.B.S. DCH, D.P.H
Consultant Pediatrician & Neonatologist
(Associate Director)

nelson hospital

Clinic: 103, D.B. Katariya Chambers, Gandhibagh, Nagpur, Maharashtra, Bharat- 440022 / Ph.: 0712-2776622
Plot No. 32, Behind Hitavada Press, Dhantoli, Nagpur, Maharashtra, Bharat - 440012
Ph:. 0712-2432000, 2433000, 2434000 Emergency No. 7507701177

भारत को 'भारत' ही बोला जाए
एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

श्री बाबा गंगारामजी की कहानी का लाइव परफॉरमेंस

मुंबई: गोरेगांव स्पोर्ट्स क्लब के तत्वाधान में ५ जनवरी २०२५, रविवार को झुंझुंनूवाले विष्णु अवतारी श्री बाबा गंगारामजी की असीम अनुकम्पा से भव्य पंचदेव दरबार सहित अविस्मरणीय संगीतमय भावपूर्ण 'श्री बाबा गंगाराम लीला' का सजीव मंचन एवं गंगा आरती गोरेगांव स्पोर्ट्स क्लब, मलाड (पश्चिम), मुंबई के प्रांगण में बड़े हर्षोल्हास से मनाया गया, महोत्सव का शुभारंभ शाम ५.०० बजे अखण्ड ज्योति प्रज्जवलन से हुआ।

महोत्सव में विश्व विख्यात सैंड आर्टिस्ट और कहानीकार नितीश भारती (India's Got Talent & Asia's Got Talent Fame) द्वारा श्री पंचदेव मन्दिर की पवित्र रज से झुंझुनूवाले विष्णु अवतारी श्री बाबा गंगारामजी की भक्तिमय लीला की असाधारण प्रस्तुति की गयी। विश्व में पहली बार आयोजित रेत के माध्यम से कहानी कहने की इस अविस्मरणीय एवं अद्भुत लीला को सभी भक्तों ने बहुत आनंद लिया और रज को प्रसाद स्वरुप अपने घर ले गए। कोलकाता के केशव मधुकर और मुंबई के राकेश बावलिया ने भावपूर्ण भजनों की प्रस्तुति दी गयी।

महोत्सव में वाराणसी में होने वाली आरती के समान पवित्र दिव्य 'गंगा आरती' का आयोजन भी किया गया था। आरती के लिए कई पंडितजन विशेष रूप से वाराणसी से पधारे थे।

गोरेगांव स्पोर्ट्स क्लब के अध्यक्ष डॉ. विनय जैन के अनुसार क्लब धार्मिक कार्यक्रम द्वारा नयी पीढ़ी को संस्कृति धरोहर और बाबा गंगारामजी की अद्भुत और चमत्कारी महिमा से भक्तों को अवगत कराने का प्रयास किया गया था।

श्री बाबा गंगारामजी का विश्व विख्यात भव्य मंदिर, राजस्थान में शेखावाटी अंचल

के झुंझुनू में स्थित है, इस पावन मंदिर में विष्णु अवतारी श्री बाबा गंगाराम सहित, शिव परिवार, माता लक्ष्मी, हनुमानजी और माँ दुर्गा विराजमान है, इसलिए यह मंदिर श्री पंचदेव मंदिर के नाम से भी प्रसिद्ध है। मंदिर प्रांगण में भक्त शिरोमणि श्री देवकीनंदन एवं माता गायत्रीदेवी का संगमरमर से बना मनमोहक आशीर्वाद मंदिर भी स्थित है। मंदिर के भावपूर्ण दर्शन मात्र से ही भक्तों द्वारा की गयी सारी मनोकामनाएं पूरी होती है, इस अवसर पर भक्तगण अपनी आस्था और श्रद्धा अर्पित कर अक्षय पुण्य के भागी बनें। गौरतलब है की इसी साल १६ और १७ अप्रैल को झुंझुनू राजस्थान स्थित श्री पंचदेव मंदिर का भव्य स्वर्ण जयंती समारोह मनाया जायेगा, जिसमें लाखों भक्त दर्शन करेंगे।

अग्रोहा विकास ट्रस्ट मुम्बई द्वारा अग्रवाल मेला सम्पन्न

मुम्बई: अग्रोहा विकास ट्रस्ट, मुम्बई की क्षेत्रीय समिति क्रमांक-५ द्वारा मालाड पश्चिम में स्थित आदित्य लान में अग्रवाल मेला का आयोजन अध्यक्ष दिनेश अग्रवाल व महिलाध्यक्षा प्रेमलता अग्रवाल के सान्निध्य में किया गया, मेले में सभी प्रकार की दुकानों/स्टॉल्स की संख्या १२२ थी, जिसका पूरे मुम्बई व मुम्बई के बाहर से भी पधारे हुए अग्रवाल परिवारों ने लाभ उठाया, इस अवसर पर संस्था के राष्ट्रीय अध्यक्ष उत्तम प्रकाश अग्रवाल (सीए), मुम्बई अध्यक्ष सचिन अग्रवाल, मंत्री अल्केश अग्रवाल, कोषाध्यक्ष रवि अग्रवाल, मुख्य अतिथि पूर्व राज्यमंत्री महाराष्ट्र व वर्तमान विधायक श्रीमती विद्या ठाकुर एवं नगरसेवक दीपक ठाकुर के साथ अन्य अतिथियों में अग्रबंधू सेवा समिति मुम्बई के अध्यक्ष् अमरीशचन्द अग्रवाल, ट्रस्टी कान बिहारी अग्रवाल, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल (मन्नू सेठ), मानद् मंत्री उदेश अग्रवाल, कर्मठ सदस्य सुभाष अग्रवाल (गोकुल धाम), उपाध्यक्ष बृजमोहन अग्रवाल तथा महिलाध्यक्षा सुधा अग्रवाल ने दीप प्रज्ज्वलित कर मेले का शुभारम्भ किया तथा अपनी उपस्थिति से आयोजन को गरिमा प्रदान की।

आयोजन को सफल् बनाने में श्रीमती अंजली प्रकाश गुप्ता, मंत्री सीमा अग्रवाल, कोषाध्यक्ष दीपक जाजोदिया तथा समिति के अन्य सभी पदाधिकारियों व सदस्यों ने भरपूर सहयोग किया तथा उपस्थित परिवारों ने चटपटे व्यंजनों के स्टालों का भरपूर लुत्फ उठाया।

आयोजन का मुख्य उद्देश्य मुम्बई में बसे अग्रवाल परिवारों को संगठित करना था तथा भविष्य में इसी प्रकार के वृहद आयोजन करने की योजना भी बनाई है, इस प्रकार के संगठन से मुम्बई में भव्य अग्रवाल भवन का निर्माण करने का संकल्प किया गया जिससे अग्र परिवार शुभ अवसरों पर इसका लाभ उठा सकेगें।

धार्मिकता और प्रकृति का अद्भुत संगम
'पीपाड़' के इतिहास प्रकाशन पर
हार्दिक शुभकामनायें

Kantilal Kothari
Mob.: 9821056889

Kothari Realty

Commerce House, 140, N. Master Rd. Kala Ghoda,
Mumbai, Maharashtra, Bharat - 400001

भारत को 'भारत' ही बोला जाए Remove 'INDIA' Name From The Constitution

धार्मिकता और प्रकृति का अद्भुत संगम 'पीपाड़ शहर'
के इतिहास प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनायें

सुभाष भंडारी
Mob. : 98231 75900

३०१ मातोश्री टावर, देवरानकर नगर,
अमरावती, महाराष्ट्र- ४४४६०५

भारत को 'भारत' ही बोला जाए एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

धार्मिकता और प्रकृति का अद्भुत संगम 'पीपाड़ शहर'
के इतिहास प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनायें

Jagdish Parihar
Mob. : 98251 30640

Pramod Parihar
Mob. : 78746 60000
9265146164

Gajendra Parihar
Mob. : 98251 23660
76000 30640

श्री **Balaji** *TEX PRINT PVT. LTD.*

J-106, India Textile Market, Ring Road, Surat, Gujarat, Bharat -395002
Ph. : 0261-2326660 / 0261-2363489

प्रकृति की सुंदरता को सजाए हुए
जोधपुर का एक कस्बा 'पीपाड़ शहर'
के इतिहास प्रकाशन पर
हार्दिक शुभकामनायें

Vijayraj Katariya

Satish
Mob. : 9414325794

Vivek
Mob. : 9414391440

Shah Nihalchand Padamchand
Mfg. of : 2x1, TERRY RUBIA, RUBIA & VOILE

Works: 23, B/Plot No.7, Mahaveer Udhyoug Nagar,
Pali - Mawar, Rajasthan, Bharat - 306401

Office: 75, Dhan Mandi,
Pali - Mawar, Rajasthan, Bharat - 306401

भारत को 'भारत' ही बोला जाए एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

प्रकृति की सुंदरता को सजाए हुए जोधपुर का एक कस्बा
'पीपाड़ शहर' के इतिहास प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनायें

अमृत मुथा
Mob. : 9422157974

मिना मुथा
Mob. : 9175034343

मुथा साड़ी संसार
फॅन्सी साड़ीयों का भव्य शोरुम

ग्राहको का विश्वास ही हमारी पहचान है।

बनारसी, साऊथ कॉटन, हँडलुम, कोटा,
सिंथेटीक साडीयाँ व चादरो का भव्य स्टॉक

राजापेठ चौक, अमरावती, महाराष्ट्र, भारत - ४४४६०१
Ph. : 9422157974

भारत को 'भारत' ही बोला जाए एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

बहुत ही जल्द नए भवन में अंग्रेजी माध्यम के छात्रों की पढ़ाई होगी

-विनोद टिबड़ेवाला अध्यक्ष राजस्थानी सेवा संघ

मुंबई: जे.बी. नगर, अंधेरी पूर्व में स्थापित राजस्थानी सेवा संघ के प्रांगण में २६ जनवरी २०२५ को घोषित समयानुसार सुबह ९:०० बजे गणतंत्र दिवस पर स्कूल कॉलेज के प्रिंसिपल, छात्र-छात्राओं व राजस्थानी सेवा संघ के पदाधिकारी ने मिलकर मनाया। सर्वप्रथम झंडा वंदन राजस्थानी सेवा संघ के अध्यक्ष विनोद टिबडेवाला के कर कमलों द्वारा हुआ, तत्पश्चात श्री घनश्याम पोद्दार विद्यालय (माध्यमिक विभाग व प्राथमिक विभाग), श्री गौरीशंकर केडिया अंग्रेजी माध्यम, श्रीनिवास बगड़का कॉलेज (जूनियर) आर्ट्स कॉमर्स एंड साइंस, श्रीमती परमेश्वरीदेवी दुर्गादत्त टिबड़ेवाला एस.पी.डी.टी. कॉलेज ऑफ मेनेजमेंट एण्ड रिसर्च, श्री राजस्थानी सेवा संघ लॉ कॉलेज, श्री प्रेमचंद केडिया किडजेरिया एंड डेकेयर के छात्र-छात्राओं ने नृत्य, गीत, भाषण के साथ अति सुंदरता से प्रस्तुति दी और सभी आगंतुकों का मन मोह लिया।

पदाधिकारीगण...

वरिष्ठ पत्रकार व संपादक, मैं भारत हूं फाउंडेशन के अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष, राजस्थानी रीक्रिएशन क्लब के सांस्कृतिक मंत्री व प्रवक्ता बिजय कुमार जैन के निवेदन पर उपस्थित छात्र-छात्राओं, शिक्षक, प्राध्यापक व आगुंतकों ने 'जय भारत' के नारे से आसमाँ को गुंजायमान कर दिया।

छात्र-छात्राओं के साथ...

अध्यक्ष श्री विनोद टिबड़ेवाला ने कहा कि जो भी छात्र-छात्राएं आज के दिन इतनी सुंदरता से प्रस्तुति दी है, उन्हें राजस्थानी सेवा संघ की तरफ से रुपए ५०० प्रति छात्र-छात्राओं को परितोषित स्वरूप दिया जाएगा, साथ ही अंग्रेजी माध्यम के छात्र-छात्राओं को कुछ ही महीनों में राजस्थानी सेवा संघ के प्रांगण में बने नए भवन में स्थानांतरित कर दिया जाएगा और पुराने भवन का नवनिर्माण किया जाएगा।

वरिष्ठ पत्रकार व संपादक मैं भारत हूं फाउंडेशन (अंतर्राष्ट्रीय संस्थान) के राष्ट्रीय अध्यक्ष व राजस्थानी रीक्रिएशन क्लब के सांस्कृतिक मंत्री एवं प्रवक्ता बिजय कुमार जैन ने अपने वक्तव्य में कहा कि बच्चों! आप देश के भविष्य हो, आपसे पूछना चाहूंगा कि देश का क्या नाम होना चाहिए 'इंडिया या भारत', उपस्थित सभी छात्र-छात्राओं, शिक्षक प्राध्यापक के साथ पधारे हुए सभी गणमान्यों ने जोरदार आवाज में कहा कि देश का नाम केवल 'भारत' ही रहना चाहिए।

आयोजित राष्ट्र को समर्पित कार्यक्रम में सर्वश्री विनोद टिबड़ेवाला, उमा विशाल टिबड़ेवाला, अनिल प्रेमचंद केडिया, डॉ. दिनानाथ केडिया, डॉ. करुणा केडिया, दीनदयाल मुरारका, गुप्ता जी, बिजय कुमार जैन व आदिराज के साथ स्कूल कॉलेज के छात्र-छात्राएं, शिक्षक, प्राध्यापक के साथ डॉ. वालेचा की उपस्थिति से कार्यक्रम सफल हुआ। जय भारत!

हमारे देश का नाम केवल 'भारत' ही रहना चाहिए

मोहन भागवत- सरसंघचालक प्रमुख राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

गुवाहाटी: आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत ने कहा कि हमारे देश का नाम प्राचीन काल से 'भारत' था, इसे बोलने, लिखने और कहने में हर जगह लाना होगा।

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ प्रमुख मोहन भागवत, गुवाहाटी में सकल जैन समाज के कार्यक्रम में भाग लेने पहुंचे थे, संघ प्रमुख मोहन भागवत ने अपने संबोधन में 'भारत नाम सम्मान' अभियान को लेकर कहा कि सदियों से हमारे देश का नाम 'भारत' रहा है, दुनिया में कहीं पर भी जाएं तो हमारे देश का नाम 'भारत' ही रहना चाहिए,

हम बोलने में, कहने में, लिखने में सर्वत्र 'भारत' ही कहें, उन्होंने कहा किसी को समझ में नहीं आए चिंता ना करें, उसकी जरूरत होगी तो समझ लेगा, हमको जरूरत नहीं है, उसको समझाने की, श्री मोहन भागवत ने लोगों से आग्रह करते हुए कहा कि 'भारत' नाम का ही उपयोग किया जाना चाहिए, लोगों को इसकी आदत डालनी चाहिए, उन्होंने कहा, 'भारत' का नाम प्राचीन समय से चला आ रहा है, इसे आगे भी जारी रखना चाहिए।' जय भारत!

With Best Compliments from

SACCHIDANAND L MALANI
Engineers & Contractors

Mob. : 9422162213/8600047213

Specialist in Asphalting of Roads, Bridges & Earthen Dams

Murtizapur, District. Akola,
Maharashtra, Bharat- 444107
email : office.slmalani@gmail.com

भारत को 'भारत' ही बोला जाए एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

लहराएगा तिरंगा अब सारे आस्मां पर,
भारत का नाम होगा सबकी जुबान पर
गणतंत्र दिवस की शुभकामनाएं

HINDUSTAN FERRO ALLOY IND. PVT. LTD.

HFAIPL
KANTILAL DINESHKUMAR OSWAL

Hindustan Ferro Alloy Industries Pvt. Ltd.

Sr. No. 37/1/1, "Samco House",
Dhayari-Narhe Road, Narhe, Tal. Haveli,
Dist-Pune, Maharashtra, Bharat - 411041
Mob. : 9822035805

भारत को 'भारत' ही बोला जाए एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

महावीर इंटरनेशनल मुंबई सेंटर द्वारा चिकित्सा शिविर का आयोजन

मुंबई: महावीर इंटरनेशनल मुंबई सेंटर ने ५ जनवरी २०२५ को सेठ चिमनलाल हाई स्कूल, सांताक्रूज, मुंबई में चिकित्सा शिविर का सफलतापूर्वक आयोजन किया। शिविर वीर डॉ. नेमीचंद छाजेड़ के मार्गदर्शन में आयोजित किया गया था, शिविर उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि सीए. पीयूष छाजेड़, विनोद अडे (वरिष्ठ पुलिस अधिकारी, वकोला पुलिस स्टेशन),अधिवक्ता सुनील भडेकर (उच्च न्यायालय) ने शिविर में भाग लिया, कार्यक्रम में महावीर इंटरनेशनल ट्रस्ट और जैन सेवा संघ के सम्मानित सदस्यों ने भाग लिया, जिनमें महावीर इंटरनेशनल ट्रस्ट से वीर डॉ. नेमीचंद छाजेड़, वीर पारसमल गोलेचा, वीर सुरेश बापना, वीर विपुल जानी व श्री जैन सेवा संघ से गौतम मेहता, निहालचंद मुणोत, अशोक हुंडिया, कांतिलाल मेहता, रोशनलाल पगाड़िया, सुमेर सुराणा, मनीष बोहरा, विशाल बोहरा, सुनील कोठारी, दिनेश बाफना, आर्यन कोठारी, दर्शन बोहरा, शिवसेना शाखा प्रमुख संजय भगत उपस्थित थे। शिविर स्व. उगमराज जी लुणावत की याद में श्री जैन सेवा संघ द्वारा प्रायोजित किया गया था, विभिन्न चिकित्सा सेवाओं का लाभ उठाते हुए शिविर से कुल ५६८ मरीज लाभान्वित हुए।

आंखों की जांच में १२४, मोतियाबिंद ऑपरेशन में ३८, मुफ्त चश्मे वितरित किए गए १०, मधुमेह जांच १४०, ब्लड प्रेशर चेकअप १४०, हड्डियों के घनत्व की जांच ४०, एक्यूप्रेशर उपचार ४०, श्रवण सहायता मशीनें उपलब्ध कराई गई, ८ सामान्य जांच १२, ईसीजी परीक्षण किए गए १६, २ व्हीलचेयर उपलब्ध करवाए, २

सीलिंग पंखे भी। सभी योगदानकर्ताओं, प्रायोजकों और स्वयंसेवकों के अटूट समर्थन और समर्पण ने इस शिविर को भव्य रूप से सफल बनाया।

अग्रबंधु सेवा समिति मुम्बई द्वारा कम्बलों का वितरण

मुम्बई: अग्रबंधु सेवा समिति मुम्बई द्वारा अयोध्या में प्रभु श्री रामलला की गर्भगृह में प्राण प्रतिष्ठा का एक वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में तथा मुम्बई शहर में वर्तमान तापमान को दृष्टिगत करते हुए जनोपयोगी कार्यों की श्रृंखला में संस्थाध्यक्ष अमरीशचंद अग्रवाल एवं महिलाध्यक्षा सुधा लक्ष्मीनारायण अग्रवाल एवं ट्रस्टी लक्ष्मीनारायण अग्रवाल की प्रेरणा, मानद् मंत्री उदेश अग्रवाल एवं कोषाध्यक्ष गोपालदास गोयल के मार्गदर्शन में हजारों की संख्या में जरूरतमंदों को कम्बलों का वितरण संस्था के कार्यालय से किया गया, इस अवसर पर संयुक्त मंत्री बृजकिशोर अग्रवाल व कर्मठ सदस्य राजेन्द्र अगग्राल एवं महिला समिति मंत्री मधु अग्रवाल, उपाध्यक्ष ज्योति अग्रवाल, संयुक्त मंत्री बबीता गोयल व कर्मठ सदस्याओं में नेहा जैन, नूतन अग्रवाल व जया गोयल ने भी वितरण की व्यवस्था सम्भाली।

ट्रस्टी कानबिहारी अग्रवाल ने 'मेरा राजस्थान' पत्रिका को बताया कि इस वितरण का लाभ कार्यालय के आसपास के क्षेत्र, मालाड, गोरेगांव, काँदीवली तथा सोसायटी में काम करने वाले व्यक्तियों/महिलाओं ने भारी संख्या में लाभ उठाया।

उपरोक्त जानकारी मीडिया प्रभारी एवं संयुक्त मंत्री अनिल आर. अग्रवाल ने 'मेरा राजस्थान' पत्रिका को बताया कि संस्था इस प्रकार के जनोपयोगी सेवा कार्यों के लिए सदैव तत्पर रहती है, इसके साथ-साथ जरूरतमंद विद्यार्थियों एवं मरीजों की मेडिकल सहायता भी पूरे वर्ष करती रहती है।

विश्व प्रसिद्ध ८४ कोशीय दधीचि परिक्रमा में आमंत्रण

इंदौर: नैमिषारण्य क्षेत्र की विश्व प्रसिद्ध ८४ कोशीय दधीचि परिक्रमा महामहोत्सव में इंदौर भी आमंत्रित है, १५ दिवसीय यह परिक्रमा युगों से चली आ रही का यह कहना है कि नैमिषारण्य के व्यास पीठाधीश्वर अनिल शास्त्री जी का, महर्षि दधीचि सेवा ट्रस्ट द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम में व्यास पीठाधीश्वर अनिल

शास्त्री ने यह भी कहा कि लोक कल्याण के लिए भारत के ऋषि-मुनि देहदान में भी पीछे नहीं रहे। प्रथम सतयुग में लोक कल्याण हेतु देह दान करने वाले महर्षि दधीचि इसका उदाहरण है, उन्होंने जो परिक्रमा की थी, वह ८४ कोशीय यात्रा आज भी जारी है, त्रेतायुग में भगवान राम ने भी यह परिक्रमा की थी।

महर्षि दधीचि सेवा ट्रस्ट के अध्यक्ष शंकर लाल शर्मा ने 'मेरा राजस्थान' पत्रिका को बताया कि कई धर्मावलंबियों ने परिक्रमा के लिए पंजीयन कराया, यात्रा एक मार्च से प्रारंभ होगी, इसका समापन होली पूर्णिमा पर महर्षि दधीचि तीर्थ मिश्रित में होगा, अध्यक्ष शंकर लाल शर्मा ने यह भी कहा कि व्यास पीठाधीश अनिल शास्त्री जी के मार्गदर्शन में इस यात्रा में चलने वाले संत समाज की संपूर्ण व्यवस्था की जा रही है, परिक्रमा हेतु वाहन व्यवस्था, रात्रि विश्राम हेतु टेंट, दोनों समय भोजन व्यवस्था की जाएगी।

११ पड़ाव रहते हैं

प्रत्येक दिन चलने के पश्चात रात्रि विश्राम पुरातनकाल से चले आ रहे ११पड़ाव पर होता है, इन पड़ाव पर विश्राम व्यवस्था के साथ संतों के प्रवचन तथा भजनों के कार्यक्रम होंगे, अंतिम ४ दिन की यात्रा महर्षि दधीचि तीर्थ मिश्रित की होगी।

लहराएगा तिरंगा अब सारे आस्मां पर,
भारत का नाम होगा सबकी जुबान पर
गणतंत्र दिवस की शुभकामनाएं

Subhash Agarwal
Mob. : 9821083665

Flat 203/204, Palash Bldg. No 19, Opp. Prachi Hospitol, Vasant Vihar, Dist. Thane, Maharashtra, Bharat - 400610

भारत को 'भारत' ही बोला जाए एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

धार्मिकता और प्रकृति का अद्भुत संगम
'पीपाड़ शहर'
के इतिहास प्रकाशन पर
हार्दिक शुभकामनायें

INDUS
Generating Values

Meghraj Lunawath
Managing Partner
Mob. : 98842 09999 / 93810 00005

MK Finance Corporation

5C Ega Trade Centre, 809 Poonamallee High Road, Kilpauk,
Chennai, TamilNadu, Bharat- 600010 / Tel: 2640 1166 / 2642 2525
email: info@induscity.in / meghraj@induscity.in

सारे जहाँ से अच्छा हिंदुस्तान हमारा
हम बुलबुले है इसकी ये गुलसिता हमारा!
गणतंत्र दिवस की शुभकामनाएं

Alok Kedia
Mob: 09811054206

Unipack Packaging Pvt. Ltd.

Plot No. 9, Mahila Udaymi Park-II,
Toy City Road, Dist. Gautam Budh Nagar,
Greater Noida, Uttar Pradesh, Bharat - 201304

भारत को 'भारत' ही बोला जाए एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

प्राकृतिक पंचतत्वों से जुड़ी हुई है भोजन प्रणाली- दीनदयाल मुरारका

मुंबई: नयी भोजन प्रणाली पर प्रवासी हेल्थ वेलनेस सेंटर गोरेगांव पूर्व में एक चर्चासत्र आयोजित किया गया, जिसमें देश में नई भोजन प्रणाली के प्रमुख सूत्रधार बी.वी. चौहान एवं सरोज चौहान ने लोगों को नयी भोजन पद्धति के बारे में सविस्तार जानकारी दी, उनका ऐसा कहना था कि यदि हम भोजन पर कंट्रोल कर लेते हैं, तो कोई भी बीमारी हमें नहीं होगी, हमारा जीवन प्राकृतिक रूप से स्वस्थ रहने के लिए बना हुआ है, किंतु हमारे द्वारा की जाने वाली भोजन की अनियमित के कारण हमारे शरीर में कई रोगों का जन्म होता है। लाइफ स्टाइल, बीमारियों की दवाएं बीमारी को ठीक करने में सक्षम नहीं होती, विशेष रूप से डायबिटीज, ब्लड प्रेशर की दवाई सिर्फ इनके लक्षणों को दबा देती है, उन्हें ऊपर आने से रोकती हैं ताकि पेशेंट को इसकी तकलीफ दिखाई ना दे, किंतु यदि हम अपने जीवन पद्धति में थोड़ा सा बदलाव लाते हैं और नयी भोजन प्रणाली को स्वीकार करते हैं तो यह बीमारियां जड़ से खत्म हो सकती है, बहुत से लोगों ने इन बीमारियों को रिवर्स करने में सफलता पाई है, उन्होंने अपना खुद का उदाहरण दिया कि उन्हें बहुत प्रकार की बीमारियां थी, उन सब बीमारियों से निजात उन्होंने नई भोजन पद्धति को अपनाकर पाया।

नई भोजन पद्धति का मतलब प्लांट बेस्ड फुड खाना चाहिए, यानी सभी प्रकार की हरी सब्जियां, सलाद, सभी प्रकार के फ्रूटस, अंकुरित चना, मोठ,मुंग इत्यादि चीजों को भोजन में शामिल किया जाए, संभव हो सके कच्चा खाना खाना चाहिए, हो सके तो दूध एवं दूधजन्य पदार्थ, ब्रेड बिस्कुट,बेकरी से संबंधित सभी पदार्थ, प्रोसेस पैकेट में बंद फूड इत्यादि संभव हो सके तो बिल्कुल भी नहीं खाना चाहिए।

कार्यक्रम में कृष्णकुमार झुनझुनवाला ने शाल श्रीफल देकर सम्मानित किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन प्रदीपभाई शाह ने किया, कार्यक्रम के आयोजन में राजूभाई सरवैय्या का विशेष योगदान रहा। चर्चासत्र में मीना देवी झुनझुनवाला, दीनदयाल मुरारका, देवमणि पांडे, सुभाष काबरा, नरेंद्र मौर्य एवं अन्य अतिथिगण विशेष रूप से उपस्थित थे। कृष्णकुमार झुनझुनवाला ने सभी उपस्थित महानुभावों का आभार प्रदर्शन किया।

सृष्टि के रचयिता भगवान विश्वकर्मा

अलग-अलग ग्रंथों में विश्वकर्मा की वंशावली के सम्बन्ध में अलग-अलग जानकारी मिलती है, ऐसा क्यों है, कितने विश्वकर्मा हुए हैं?

सर्वप्रथम नारायण की आज्ञा से ब्रह्माजी ने इस पृथ्वी का निर्माण किया तो उन्हें इसे स्थिर रखने की चिन्ता हुई, जब उन्होंने इसके लिए नारायण से स्तुति की तो स्वयं नारायणजी ने विराट विश्वकर्मा का रूप धारण कर इस डगमगाती पृथ्वी को स्थिर किया, पृथ्वी के स्थिर हो जाने के पश्चात विश्वकर्मा ने विभिन्न लोकों की रचना की।

समस्त सृष्टि के रचयिता ब्रह्माजी ने विभिन्न युगों में प्रलय के पश्चात सृष्टि की पुन:रचना की तथा हर युग में विश्वकर्मा ने अपना योगदान दिया, इस कारण अलग-अलग समय के अनुसार अवतार लिया। विश्वकर्मा कोई नाम नहीं है यह तो पदवी ''उपाधि'' मात्र है, जिस-जिस ऋषि-महर्षि ने शिल्प वेद पढ़कर नये विज्ञान का आविष्कार किया वह ऋषि-महर्षि आचार्य के द्वारा 'विश्वकर्मा' पद पर अभिशिष्ट हो, संसार में विश्वकर्मा के नाम से प्रसिद्ध हो जाता है, जिस प्रकार आदिशंकराचार्य जी के पश्चात उनके मठ पर अभिशिष्ट प्रत्येक मठाधीश क्रमश: परम्परा से शंकराचार्य ही कहलाते हैं, चाहे उनका निजी नाम कुछ भी क्यों न हो, इस प्रकार से आरम्भ काल से आज पर्यन्त अनेक विश्वकर्मा हो गये हैं, सारे विश्वकर्माओं की निश्चित संख्या मालुम करना तो असंभव है लेकिन मुख्य 'विश्वकर्माओं' का विवरण इस प्रकार है:

जिस परमात्मा ने समस्त ब्रह्माण्ड को रचा और शिल्पविद्या की मूलपुस्तक अथर्ववेद का प्रकाशन किया वे अनादि 'विश्वकर्मा' हैं

२.जिस परमात्मा ने अंगिरा को शिल्पविद्या का अधिकारी समझ उनके हृदय में शिल्पविद्या की मूल पुस्तक अथर्ववेद का प्रकाशन किया, हमारे वंश में आदि विश्वकर्मा भगवान अंगिरा हुए और सृष्टि के आरम्भ में महर्षि अंगिरा की उत्पत्ति अग्नि नामक परमात्मा से हुई जो अग्नि शिल्प विद्या का मूल साधन हैं यथा ये ब्रह्मा मानस पुत्रों में से थे। अग्नि के पुत्र अंगिरा के आग्नेय संज्ञा वाले आठ पुत्र हुए बृहस्पति, उत्थ्य, आपत्यद्ध, पथस्य, शासन, धोर, विरूप, सवर्त और सुधन्वा। अंगिरा वंश में आदि शिल्पाचार्य विश्वकर्मा हुए, विश्वकर्मा, संस्कृत साहित्य में अनेक अर्थों में प्रयुक्त हुआ है। प्रथम अर्थ उस विराट शक्ति का बोधक है जिसने सृष्टि को रचा द्वितीय अर्थ है अंगिरा वंश के भुवन का पुत्र विश्वकर्मा, जो शिल्प के प्रवर्तक हुए तथा तृतीय अर्थ है विश्वकर्मा उपाधि, जो विभिन्न कार्यों में दक्ष होने के कारण अनेक व्यक्तियों को प्रदान की गई इसके अतिरिक्त आत्मा, वाणी, प्राण, आदित्य, त्वष्टा तथा प्रजापति के अर्थ में भी विश्वकर्मा शब्द का प्रयोग हुआ है। प्रथम तीन प्रकार के विश्वकर्माओं का वर्णन मिले-जुले रूप में करने से विश्वकर्मा का यथार्थ स्वरूप हृदयंगम नहीं हो सका, अत: हमें उसके यथार्थ स्वरूप को समझने का प्रयत्न करना है। ब्रह्म ऋषि अंगिरा के आप्त्य ऋषि हुए और आप्त्य के पुत्र भुवन तथा भुवन के पुत्र विश्वकर्मा हुए। आश्वलायन ''सर्वानुक्रमणिका'' व्याख्याकार षडगुरू भाष्य के अष्टम् अध्याय में लिखा है कि भुवन नाम आप्त्य पुत्र का है और भुवन का पुत्र होने के कारण विश्वकर्मा का अंगिरस वंश व ऋषि गौत्रत्व है। ऋग्वेद दशम मण्डल के सूक्त, यजुर्वेद अध्याय १७ के मंत्र, एतरेय ब्राह्मण के भाष्यकार सायणाचार्य ने भी विश्वकर्मा का, भुवन पुत्र के रूप में अनेक जगह उल्लेख किया गया है। भुवन का यही पुत्र विश्वकर्मा सब शास्त्रों में देवताओं का शिल्पी कहलाया है, विश्वकर्मा और उसकी सन्तान के विद्वान लेखक ने विश्वकर्मा को भुवन का पुत्र माना है।

इन सब प्रमाणों से यह सिद्ध हो जाता है कि विश्वकर्मा भुवन के पुत्र, आप्त्य के पौत्र तथा अंगिरा के वंश में हुए। वेद तथा ब्राह्मण ग्रन्थों में केवल भुवन पुत्र विश्वकर्मा के ही प्रमाण मिलते हैं। विश्व मेदिनी शेष पृष्ठ ३४ पर...

जिन्हें कर्म में विश्वास है,
विश्वकर्मा जी उनके पास हैं
विश्वकर्मा जयंती की शुभकामनाएं

Shreeram Jangid
Mob: 9825037209

SHREERAM
TIMBER MERCHANT

Mfg. of Laminated Flush Doors, Wooden Doors,
Wooden Door & Window Frame

203-Limbu Vadi, 3 Rasta, LS No. 162/2,
Vill.- Koyli Vadodara, Gujarat, Bharat -391330

email : shreeramtm@gmail.com / www.shreeramdoors.org

याद रखेंगे वीरों तुमको हरदम, यह बलिदान तुम्हारा है,
हमको तो है जान से प्यारा यह गणतंत्र हमारा है
गणतंत्र दिवस की शुभकामनाएं

In&Out CONVENIENCE STORE Discover Convenience
Bharat Petroleum Pure for Sure

Dealer: Bharat Petroleum Corp.ltd.

मल्लू बाबू का प्रतिष्ठान

मोहनराम
रामनिवास

अमरनाथ रूँगटा
कैलाशपति रूँगटा

खलिलाबाद, जि. संत कबीर नगर, उत्तर प्रदेश, भारत- २७२१७५
भ्रमणध्वनि. ९४१५०३७६०६, ९२३५६१२८४९ कार्यालयः ०५५४७-३५८६२२
Email : mohanramramniwas@gmail.com

भारत को 'भारत' ही बोला जाए Remove 'INDIA' Name From The Constitution

सारे जहाँ से अच्छा हिंदुस्तान हमारा
हम बुलबुले है इसकी ये गुलसिता हमारा।
गणतंत्र दिवस की शुभकामनाएं

Manoj Mahnot Jain
Mob: 9342016454/ 7204005903

Tushar Mahnot Jain
Mob: 9740935026

Robot Mining Equipments (P) Ltd.

Dealers & Importers Of : Mining & Drilling Tools,
Carbide Tips, Carbide Scrap, Drill Rods & Expansive Mortar

T.R. Mill (P) Ltd. Compound, 5 th Main Road,
Chamrajpet, Bangalore, Karnataka, Bharat - 560018
e-mail : chamrajpet007@gmail.com

भारत को 'भारत' ही बोला जाए एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

याद रखेंगे वीरों तुमको हरदम, यह बलिदान तुम्हारा है,
हमको तो है जान से प्यारा यह गणतंत्र हमारा है
गणतंत्र दिवस की शुभकामनाएं

RAMESH CO.
DISTRIBUTOR OF TATA STEEL

TATA ASTRUM HR SHEETS AND COILS
TATA Steelium SUPER CR SHEETS
TATA ASTRUM SUPER HR SHEETS

2, N.C. Dutta Sarani, 'Sagar Estate',
4th Floor, Kolkata, West Bengal, Bharat- 700001
Mob.: 9831037701
email: rcosales@bihanisteel.com
website: www.bihanisteel.com

भारत को 'भारत' ही बोला जाए एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

पीपाड़ का ऐसा लाडला जो कम उम्र में मोक्ष को प्राप्त हो गया

बसंतराजजी जैन का जन्म २८ अगस्त १९६८ को 'पीपाड़' शहर में हुआ, आपने स्कूली शिक्षा रामरख मालानी स्कूल से १९८३ में पूरी की, बचपन से ही आप शांत, गंभीर और मेधावी थे, कक्षा में हमेशा प्रथम आते, १२ वर्ष के थे तब आपके पिता का स्वर्गवास हो गया।

आपने हॉस्टल में रह कर १९८७ में जोधपुर यूनिवर्सिटी से बी.कॉम. ऑनर्स की पढ़ाई पूरी की और मुंबई में एलफिंस्टन जैन हॉस्टल में रह कर १९८९ में प्रथम प्रयास में ही २१ वर्ष की उम्र में सीए परीक्षा पास की, सीए बनने के बाद अपने बड़े भाई फतेहचंद जैन की सीए प्रैक्टिस फर्म में शामिल हुए। १९९१ में ज्ञानचंदजी मुणोत की सबसे छोटी पुत्री सुनंदा के साथ आपका विवाह हुआ, आपके प्रणीत और हर्ष दो पुत्र हैं, बड़े बेटे प्रणीत आपके ही नक्शे कदम पर चल कर प्रथम प्रयास में २०१८ में २१ वर्ष की उम्र में सीए की डिग्री हासिल की, छोटा पुत्र हर्ष सीए फाइनल की पढ़ाई कर रहा है, कड़ी मेहनत व अनुशासित जीवन शैली और सच्चाई यही आपके जीवन का बीज मंत्र था, आपने छोटी उम्र में बहुत ऊंचाइयों को छुआ, कई सामाजिक संस्थाओं से जुड़े हुए थे, सालाना खर्चा देकर अनाथ बच्चों को गोद लिये, विधवा औरतों को सिलाई मशीन दान करते रहे, पीपाड़ गौशाला और अन्य संस्था में सहयोग करते रहे, सेठ भीकम चंद मुथा स्कूल में बड़ा हॉल बनाकर सहयोग किया, हर जरूरतमंद की मदद करने में हमेशा आगे रहते थे, किसी को खाली हाथ नहीं लौटाते, जैन धर्म, देव, गुरु और धर्म के प्रति जबरदस्त श्रद्धा रही, श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ मुंबई के अध्यक्ष थे, गजेंद्र निधि के ट्रस्टी थे। अ.भा. जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के कोषाध्यक्ष रहे, एवरशाइन जैन संघ के कोषाध्यक्ष थे, जीतो व ओसवाल बंधु समाज जैसी संस्थाओं में सक्रिय रूप से जुड़े रहे, पीपाड़ जैन संघ के ट्रस्टी थे, गोरेगांव स्पोर्ट्स क्लब के सदस्य एवं क्लब की टैक्सेशन कमेटी को सक्रिय सहयोग प्रदान करते थे।

भारत और लगभग ४० विदेशी राष्ट्रों की यात्राएं की, पुराने गाने सुनने और गाने के बहुत शौकीन, राजनीति, भूगोल, इतिहास में गहरी रुचि, नेतृत्व का गुण समाहित था। सादगी, सरलता और हसमुख स्वभाव के कारण सबके प्रिय मात्र ५२ वर्ष की कम उम्र में दुनिया को अलविदा कर गए, आपके जाने से संघ समाज और परिवार में अपूरणीय क्षति हुई। ॐ शांति! जय भारत!

पृष्ठ ३२ से... कोष के अनुसार सुधन्वा विश्वकर्मा थे उनके तीन पुत्र हुए, उनमें से ऋभू शिल्पी हुए, ब्रम्हाण्ड पुराण में अंगिरा के सात पुत्रों में से सुधन्वा के अलावा आप्त्य के एक भुवन नामक पुत्र हुआ जो भुवन ऋषि के नाम से विख्यात हुए। आश्वलायन सर्वानुक्रमणिका व्याख्याकूत श्री षड् गुरूभाष्य के आठवें अध्याय में लिखा है कि भुवन ऋषि के भौमन विश्वकर्मा हुए।

विश्वकर्मा भगवान अंगिरा वंशीय होने के आधार पर हम शिल्पी अंगिरा वंशी हैं, सबमें मुख्य होने से ज्यादा प्रसिद्ध ये ही हैं। ऋषि अंगिरा, उपाध्य, भुवन व भौमन, ये सारे के सारे शिल्पी और मंत्र अष्टा ऋषि हुए हैं, भृगु पुत्र शुक्लाचार्यजी और ऋषि सायं की बेटी सोमया नाम की स्त्री से सूर्य तेज के समान त्वष्टा नामक पुत्र हुए यही शिल्प विद्या के द्वारा विश्वकर्मा हुए, महाभारत में मय नामक विश्वकर्मा हुए।

धर्म ऋषि के पोते अष्टम् वसु प्रभास को अंगिरा की पुत्री व देवताओं के गुरू बृहस्पति की बहिन विश्रुता/भुवना ब्याही गई, इनके पुत्र विश्वकर्मा हुए। भुवनपुत्र विश्वकर्मा ही आदि शिल्पाचार्य है। काल की दृष्टि से भुवन पुत्र विश्वकर्मा ही आदि शिल्पाचार्य हैं और वे ही सर्वप्रथम हुए हैं। मनु, मय, त्वष्टा, शिल्पी और देवज्ञ, श्री विश्वकर्मा के ये पंचपुत्र पंचविधाता के नाम से विख्यात हैं, इनके पांच शिल्प कर्म यज्ञकर्म है जो पवित्र एवं लोक हितकारी हैं। शिल्प देवकर्म, ब्राह्मण कर्म हैं, इन शुभ शिल्पकर्मों के करने वाले सभी शिल्पकार पूज्य एवं वंदनीय हैं। भगवान विश्वकर्मा सही अर्थ में देवता और शिल्प विज्ञान के आदि प्रवर्तक हैं जिन्होंने श्रम और नियम का प्रवर्तन कर जगत का मनोहर रूप बनाया है, ये ही सर्वप्रथम श्रमिक, नियामक हैं जिन्होंने श्रम और कठोर साधना से पंचतत्वों की रचना कर सम्यक सृष्टि का निर्माण नियमन किया है। एतदर्थ वेदों से लेकर महाकवि तुलसी कृत रामायण पर्यंत सभी मान्य ग्रन्थों में इनका उल्लेख मिलता है, बड़े आदर के साथ ऋषि मुनि और महात्माओं ने जगनियंता, विराट, विष्णु, शिव, त्वष्टा, नारायण, विश्वरूप, कश्यप, वाचस्पति, हिरण्यगर्भ, परमब्रह्म, जगदगुरू, शिल्पाचार्य, देवाचार्य, विश्वकर्मा विशारद, विश्वायु और सर्वज्ञ आदि सम्मान सूचक शब्द कहकर इनकी स्तुति गायी है।

विश्वकर्माजी की हम सभी अपने वंश के आराध्य देव के रूप में पूजा करते हैं, वे स्वयं किसकी संतान हैं और उनका क्या परिचय है?

विश्वकर्मा शब्द अनेकार्थी है, आत्मा, परमात्मा, सूर्य अथर्ववेद, ऋषि आदि अनेक अर्थों में विश्वकर्मा शब्द प्रयोग किया जाता है, यहां हम निर्माण के देवता विश्वकर्मा विषय पर लिख रहे हैं। देव श्रेणी के महापुरूषों प्राचीन कालीन ऋषि मुनियों आदि की वंशावली पुराणों में मिलती है, निर्माण का देवता आदिकालीन ऋषियों महर्षियों की श्रेणी में आता है।

धर्म ऋषि के पोते अष्टम वसु प्रभासजी को अंगिरा की पुत्री विश्रुता, जो ब्रह्मा वादिनी थी ब्याही गई, जो भुवना नाम से भी प्रसिद्ध है। प्रभास वसू के पुत्र विश्वकर्मा नाम से विख्यात हुए। माघ मास में शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी के पुण्य दिन पुनर्वसु नक्षत्र के अठाइसवें अंश में विश्वकर्माजी ने जन्म लिया। भविष्य पुराण, स्कन्द पुराण के अतिरिक्त वशिष्ठ ने भी विश्वकर्मा की जन्मतिथि का स्पष्ट उल्लेख किया है।

इसका आधार मदनरत्न वृद्ध वशिष्ठ पुराण का यह श्लोक है:-

माघे शुक्ल त्रयोदश्यां दिवा पुण्ये पुनर्वसौ
अष्टाविंशांति में जातो विश्वकर्मा भवानि च

अर्थात्: शिवजी बोले कि पार्वती! माघ मास के शुक्ल पक्ष में त्रयोदशी तिथि को पुनर्वसु नक्षत्र के अठाइसवें अंश में विश्वकर्मा के रूप में जन्म धारण करता है, इस प्रमाण में न केवल मासव तिथि का उल्लेख मिलता है अपितु नक्षत्र और उसके अंश की भी जानकारी है, भारत भर में सर्वाधिक स्थानों पर इसी दिन भगवान विश्वकर्मा जी का जन्म दिवस भी मनाया जाता है।

छपते - छपते

पीपाड़ शिक्षा विकास समिति के कर्णधार - सीए. पारसमल जी बरडिया (स्व.)

पीपाड़ में शिक्षा विकास समिति के तत्वाधान में स्व. पारसमलजी बरड़िया के वर्षों से किये अथक प्रयासों से श्रीमती सीता देवी चुन्नीलाल बरड़िया राजकीय कन्या महाविद्यालय के विशाल भवन परिसर का निर्माण कराया गया। स्व. पारसमलजी शिक्षा विकास समिति पीपाड़ शहर के कर्णधार थे एवं कई वर्षों तक इसके अध्यक्ष पद पर रहे। पीपाड़ के पहले व्यक्ति जिन्होंने मुंबई आकर सीए की शिक्षा ग्रहण की और पीपाड़ से सीए की शिक्षा के लिए आने वाले विद्यार्थियों के प्रबल प्रेरक रहे, लगातार तीन पीढ़ियों में सैकड़ो युवक सीए बने और वर्तमान में भी यह क्रम चल रहा है। साथ ही कई सामाजिक संस्थाओं में राष्ट्रीय व अन्य पदों पर भी कार्यरत रहे।

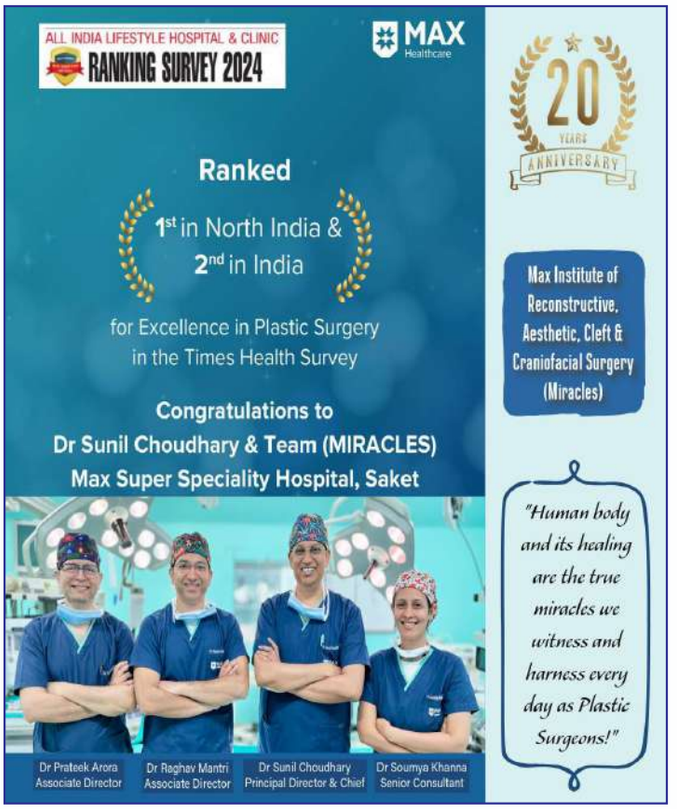

आचार्य श्री रघुनाथ जैन भवन

स्व. सिरेकंवर बाई एवं स्व. जुगराज जी मुणोत के सुपुत्र: स्व. ज्ञानचंद, सीए. निहालचंद, डॉ. पदमचंद परिवार पीपाड़ सिटी का एक धार्मिक एवं समाज सेवा हेतु समर्पित परिवार। समय समय पर सामाजिक कार्यों में सक्रिय सहयोग: 'कोट' खरीदी में योगदान, समाज भवन मुथा की बास में कमरा निर्माण, ओसवाल लोडे साजन भवन निर्माण में यथोचित योगदान, स्कूल नंबर २ में कमरा निर्माण। आचार्य रघुनाथ जैन स्मृति भवन के निर्माण में कमल किशोर जैन, सोहनलाल मुणोत एवं मुथा विजय प्रकाश जैन परिवार के साथ मिलकर विशिष्ट योगदान रहा। वर्तमान में भी समाज उपयोगी/जीव दया के विभिन्न कार्यों में निरंतर सहयोग देना आदि प्रवर्तियों में संलग्न हैं।

पीपाड़ में शेषनाग भगवान की प्रतिमा निद्रासन मुद्रा में

पीपाड़ के विकास में स्व. चंपालालजी के सुपुत्र कांतिलालजी एवं प्रेमचंद कोठारी का योगदान

डॉ. अमृत सोनी
नियोनेटोलॉजिस्ट व समाजसेवी
पीपाड़ सिटी निवासी-जोधपुर प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ६३७५५०८८३७

अमृत जी का जन्म और प्रारंभिक शिक्षा 'पीपाड़ सिटी' में ही संपन्न हुई है, उच्च शिक्षा एमबीबीएस व एमडी मेडिकल की पढ़ाई आपने 'जोधपुर' से ग्रहण की, 'जोधपुर' शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात आपने लीबिया, कुवैत, आबूधाबी जैसे कई देश में अपनी मेडिकल सेवाएं प्रदान की है, आप एक बाल रोग विशेषज्ञ और नवजात शिशु विशेषज्ञ हैं। वर्तमान में आपने सेवानिवृत्ति ले ली है और 'जोधपुर' में बसे हुए हैं। आपको संगीत का बहुत शौक है, आप बांसुरी, गिटार, मेन्डोलीन जैसे कई वाद्य यंत्र बजाते हैं। संगीत का शौक आपको आपके पिताजी से प्राप्त हुआ है, क्योंकि आपके पिताजी भंवरलाल जी एक भजन गायक थे, आप बचपन से ही उनके साथ भजन संध्या और जागरण में जाते थे, वहीं से आपको संगीत के प्रति रुचि निर्माण हुई। आपके दो पुत्र हैं छोटा पुत्र करण अमेरिका के आयोवा प्रांत में एक पैलिएटिव केयर विशेषज्ञ डाक्टर है। बड़ा पुत्र कुणाल फ्लोरिडा में डेटा साइंटिस्ट है।

अमृत जी अपनी जन्मभूमि 'पीपाड़' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि पहले और आज के 'पीपाड़' में बहुत ही अंतर आ गया है, पहले 'पीपाड़' से थोड़ी दूर निकलते ही जंगल प्रारंभ हो जाता था, पर आज दूर-दूर तक बस्ती है, इसका क्षेत्रफल और जनसंख्या दोनों ही बढ़ गया है, आर्थिक दृष्टि से बात की जाए तो यहां हर तरह का व्यापार होने लगा है, कृषि भी है पर पहले की अपेक्षा कम है, पहले यह ट्रेडिंग का हब था, आसपास के गांव के लोग खरीदारी के लिए यहीं आते थे, यहां कुछ लाइम इंडस्ट्रीज भी लगी हुई है। आवागमन के साधन अच्छे हैं, 'जोधपुर' यहां से १ घंटे की दूरी पर है, जहां के लिए हमेशा बस व्यवस्था उपलब्ध है। यहां की कला संस्कृति बहुत ही समृद्ध है, यहां गणगौर का त्यौहार बहुत ही भव्य रूप से मनाया जाता है, उसी की तरह मुस्लिम समुदाय द्वारा ताजिया बड़े ही धूमधाम से निकाला जाता है। दशहरे के समय यहां रामलीला मैदान में भव्य 'रामलीला' का मंचन होता है, यहां की 'होली' बहुत ही प्रसिद्ध है, जहां 'गैर' नृत्य व 'चंग' बजाया जाता है, जो बहुत ही भव्य वातावरण निर्माण करता है। लक्ष्मीनाथ मंदिर में नरसिंह जयंती पर नरसिंह अवतार को प्रकट किया जाता था और जन्माष्टमी पर भव्य झांकियां निकाली जाती थी, यहां की ऐतिहासिक चीजों की बात की जाए तो 'कोट' एक ऐतिहासिक स्थान है जो ठाकर साहब का ठिकाना हुआ करता था, यहां का 'सापासर' तालाब बहुत ही प्रसिद्ध है, वहीं हमने तैरना सीखा, हम स्टेशन तक पैदल ही घूमने निकल जाते थे, कभी साइकिल पर जाते थे, बड़े ही मौज मस्ती वाले दिन थे, यहां का सामाजिक वातावरण बहुत ही उत्तम है, हर धर्म समाज के लोग आपस में मिलजुल कर रहते हैं, ऐसी अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'पीपाड़' की...

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि बिल्कुल अपने देश का नाम केवल 'भारत' ही रहना चाहिए, एक नाम एक पहचान केवल भारत। जय भारत!

- मेरा राजस्थान

दुलीचंद सोनी

राष्ट्रीय महामंत्री अखिल भारतीय मेड़ क्षत्रिय स्वर्णकार समाज
पीपाड़ सिटी निवासी
भ्रमणध्वनि: ९४१४३१९३२५

दुलीचंद जी अपनी जन्मभूमि व कर्मभूमि 'पीपाड़ सिटी' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि पहले और आज के 'पीपाड़' में बहुत अंतर आ गया है, पहले यह 'बिलाड़ा' तहसील के अंतर्गत आता था, आज 'पीपाड़ सिटी' एक तहसील बन गया है, पिछले कुछ दशकों में यहां बहुत तेजी से विकास हुआ है, जब से भामाशाह, उद्योगपतियों व स्थानीय नागरिकों के सहयोग से यहां शिक्षा विकास समिति का गठन किया गया है, तब से यहां बहुत तेजी से विकास हुआ है, पहले यहां माध्यमिक तक का ही विद्यालय था, पर आज उच्च माध्यमिक विद्यालय और महाविद्यालय भी है, कन्याओं के लिए अलग से महाविद्यालय स्थापित है जो पुलिस थाने के सामने है, इसके अलावा अन्य कई विद्यालय और उच्च माध्यमिक विद्यालय यहां स्थापित हैं, शैक्षणिक संस्थाएं कार्यरत हैं। 'पीपाड़' के विकास में प्रवासी पीपाड़ वासियों का बहुत बड़ा योगदान रहा है। आज यहां सभी सरकारी कार्यालय, कोर्ट, तहसील कार्यालय, उपखंड कार्यालय स्थापित है। सामाजिक दृष्टिकोण से भी यह क्षेत्र बहुत ही उत्तम है। 'पीपाड़' तहसील के अंतर्गत ३५ वार्ड आते हैं। यहां माली समाज की संख्या सबसे अधिक है, लगभग ६-७ हजार परिवार बसे हुए हैं, उसके बाद सबसे अधिक संख्या मुस्लिम समुदाय की है लगभग ३०%, इसके बाद ओसवाल, सोनी, ब्राह्मण व अन्य समुदाय के लोग बसे हैं, सभी के बीच आपसी सामंजस्य बहुत ही उत्तम है, भौगोलिक दृष्टिकोण से भी यह क्षेत्र बहुत बढ़ गया है, पहले यह सीमित क्षेत्रफल में बसा हुआ था, आज यहां का क्षेत्रफल बढ़ गया है। अस्पताल व अन्य सुविधाएं भी उत्तम हैं। धार्मिक रूप से भी यह समृद्ध है, यहां सबसे पौराणिक मंदिर शेषनाथ जी का मंदिर है, जो लक्ष्मीनाथ जी के नीचे स्थित है, यह मंदिर लगभग हजार साल पुराना है। तालाब के किनारे शांतिनाथ जी का जैन मंदिर भी लगभग ५०० साल पुराना है, यहां का 'सापासर' सरोवर तालाब बहुत ही ऐतिहासिक और पौराणिक है, कहते हैं कि यह जगह एक सांप की कहानी से जुड़ी हुयी है, इसीलिए इस स्थान का नाम 'सांपासर' तालाब पड़ गया। इस तालाब के तीन तरफ मंदिर है अलग-अलग समाज की और खाखीजी जी की बगीची बनी हुई है, छतरियां स्थापित हैं तो एक तरफ दरगाह बना हुआ है। 'पीपाड़' का सबसे पुराना मस्जिद जामा मस्जिद है और भी कई दरगाह बने हुए हैं। राठोलाइ नाडी है, यह भी बहुत पुरानी है, इसके पास हनुमान जी का प्राचीन मंदिर बना हुआ है, यहां पर एक ऐतिहासिक बावड़ी है, जिसे भूतों की बावड़ी के नाम से जाना जाता है, यहां पर भी प्राचीन हनुमान जी का मंदिर है, वर्तमान में नगर पालिका द्वारा इसका जिर्णोद्धार किया जा रहा है। पीपलाद माताजी का मंदिर भी विशेष रूप से उल्लेखनीय और मान्यता प्राप्त है और रूपजी का मंदिर भी है। बाजार में इच्छापूर्ण गजानंद जी का मंदिर भी स्थित है, हर नव विवाहित जोड़े को यहां दर्शन के लिए लाया जाता है, यहां सार्वजनिक श्मशान भूमि भी बनी है जो 'हिंदू महासभा' द्वारा संचालित है, यहां 'हिंदू महासभा' का कार्यालय स्थापित है, जो भारत में दूसरा सबसे बड़ा कार्यालय है, जिसकी स्थापना १९४४ में लक्ष्मीनारायण उपाध्याय जी ने की थी, यहां धर्मशाला भी संचालित है, ऐसी अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'पीपाड़' में...

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का नाम 'भारत' ही रहना चाहिए, 'भारत' ही हमारी संस्कृति है, इंडिया तो अंग्रेजों द्वारा थोपा गया नाम है।

दुलीचंद जी मूलतः 'पीपाड़' के ही निवासी हैं। आपका जन्म और प्रारंभिक शिक्षा यहीं संपन्न हुई है, उच्च शिक्षा आपने 'जोधपुर विश्वविद्यालय' से ग्रहण की है। 'पीपाड़' में आपका आभूषणों का व्यवसाय है, आप प्रारंभ से ही राजनीति से जुड़े रहे, युवा मोर्चा और मंडल अध्यक्ष रहे हैं, ६ बार पार्षद भी रहे हैं भाजपा से। भाजपा पार्टी के आप नगरपालिका प्रकोष्ठ के जिला अध्यक्ष की भूमिका निभा रहे हैं। कृषि मंडी के उपाध्यक्ष भी रहे हैं। 'हिंदू महासभा' द्वारा संचालित स्मशान भूमि के व्यवस्थापक भी हैं और अखिल भारतीय मेड़ क्षत्रिय स्वर्णकार समाज के राष्ट्रीय महामंत्री पद पर भी सक्रिय हैं। जय भारत! **- मेरा राजस्थान**

सीए. राजेंद्र बरड़िया

चार्टर्ड अकाउंटेंट और समाजसेवी
पीपाड़ सिटी निवासी-मुंबई प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८२१०९२७६०

राजेंद्र जी अपनी जन्मभूमि पर 'पीपाड़' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि पहले और आज के 'पीपाड़' में बहुत ही परिवर्तन आया है, पहले 'मुंबई से पीपाड़' जाने के लिए कई साधन का उपयोग करना पड़ता था, पर आज मुंबई से जोधपुर के लिए डायरेक्ट ट्रेन व अन्य सुविधाएं हैं और जोधपुर से 'पीपाड़' मात्र १ घंटे की दूरी पर है, सड़क व्यवस्था बहुत अच्छी हो गई है। आवागमन के साधन बहुत बढ़ गए हैं, आज 'पीपाड़' बहुत ही स्वच्छ गांव के रूप में देखा जाता है, यहां के खानपान, पेठे, नमकीन बहुत ही अच्छे होते हैं, बचपन में हमारे पिताजी नाडी पर स्थित शांति नाथ जी के मंदिर में दर्शन के लिए ले जाते थे, वहां का रमणीय वातावरण बहुत ही अच्छा लगता था, यहां का सामाजिक वातावरण भी बहुत ही उत्तम है, हर समाज के लोग आपसी प्रेम व्यवहार के साथ निवास करते हैं। आर्थिक दृष्टिकोण से भी यह क्षेत्र बहुत ही समृद्ध है, ऐसी अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'पीपाड़' में...

पीपाड़ में शिक्षा विकास समिति के तत्वाधान में मेरे पिताजी स्व. पारसमलजी द्वारा बरड़िया महाविद्यालय के विशाल भवन परिसर का निर्माण कराया गया।

राजेंद्र जी मूलतः 'पीपाड़' के निवासी हैं। आपका जन्म 'पीपाड़' में और पूर्ण शिक्षा 'मुंबई' में संपन्न हुई है, यहां आप चार्टर्ड अकाउंटेंट की प्रैक्टिस में कार्यरत हैं, साथ ही आप सामाजिक कार्यों में सक्रिय रहते हैं, जीतो अपेक्स मुंबई के ऑडिटर है, 'जीतो' की अन्य संस्थाओं में भी ऑडिटर के रूप में कार्यरत हैं। आपकी धर्मपत्नी वर्षा जी एक समाजसेविका हैं, जो स्वयं की वृद्ध आश्रम 'नई दिशा' पिछले २० सालों से संचालित कर रही हैं, आप भी 'पीपाड़' की ही निवासी हैं, आपका पीपाड़ से विशेष लगाव है। जय भारत! **- मेरा राजस्थान**

गणपतराज चौधरी
व्यवसायी व समाजसेवी
पीपाड़ सिटी निवासी-चेन्नई प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९४४४४५५१२९

गणपतराज जी अपनी जन्मभूमि 'पीपाड़' सिटी की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि पिछले ६० सालों में 'पीपाड़ सिटी' बहुत ही बदल चुका है और हर क्षेत्र में यहां प्रगति दिखाई देती है। पहले यहां सुविधाएं नहीं के बराबर थी, आज सारी सुविधाएं उपलब्ध हैं, बड़े-बड़े विद्यालय, महाविद्यालय खुल गए हैं, डिग्री कॉलेज स्थापित हैं, लड़कियों के लिए अलग से कॉलेज है, शिक्षा के क्षेत्र में प्रगति हुई है, साथ ही सड़क व्यवस्था भी उत्तम हो गई है, आवागमन के साधन बढ़ गए हैं, यहां से जोधपुर ६२ किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। 'पीपाड़' रेलवे स्टेशन है और यहां से जोधपुर के लिए हमेशा बस व्यवस्था उपलब्ध रहती है, जोधपुर से गोटन व मेड़ता के लिए मेन लाइन से ट्रेन 'पीपाड़ रोड' स्टेशन होकर जाती हैं। यहां का सामाजिक वातावरण बहुत ही उत्तम है, ३६ कौम के लोग बसे हुए हैं, एक दूसरे से आपसी सामंजस्य बहुत ही अच्छा है। व्यापारिक दृष्टिकोण से भी क्षेत्र उत्तम है, यहां हर तरह का व्यापार होने लगा है, कुछ दूरी पर लाईम हाइड्रो निर्माण की फैक्ट्री है। यहां खेती-बाड़ी भी अच्छी है, इंदिरा नगर का पानी आने से खेती में उपज अच्छी होती है, यहां जीरा, गेहूं, बाजरी, मूंग, मोठ जैसे कई अनाज की पैदावार होती है, यहां अनाज मंडी और सब्जी मंडी भी बनी हुई है। धार्मिक दृष्टिकोण की बात की जाए तो यहां हर धर्म के मंदिर हैं, जैन समाज के दो-तीन मंदिर है, माहेश्वरी समाज का मंदिर है, जैन समाज के अलग-अलग संप्रदाय के पाच स्थानक है। तालाब के किनारे सबसे पुराना लगभग ४०० साल पुराना पार्श्वनाथ जी का मंदिर है, २०० साल पुराना शांतिनाथ जी का मंदिर है, 'पीपाड़ सिटी' में एक तालाब और दूसरी वाडी है जो तालाब का ही छोटा रूप है, तालाब के किनारे चारों ओर मंदिर बने हुए हैं। 'पीपाड़' में कई गौशालाएं हैं और एक 'बकराशाला' भी है, यहां से १० किलोमीटर पर 'कापरड़ा जैन तीर्थ' हैं, आसपास और भी कई पर्यटन स्थल हैं, ऐसी अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'पीपाड़ सिटी' में...

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का एक ही नाम रहना चाहिए 'भारत'।

गणपतराज जी मूलत: राजस्थान के जोधपुर जिले में स्थित 'पीपाड़ सिटी' के निवासी हैं। आपका जन्म और शिक्षा यहीं संपन्न हुई है, पिछले ५० सालों से आप 'चेन्नई' में बसे हैं और फाइनेंस के व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। एस.एस. जैन सभा के सदस्य हैं, पीपाड़ संगठन से भी जुड़े हुए हैं, अन्य कई संस्थानों में सक्रिय हैं। जय भारत!

- मेरा राजस्थान

सीए. शांतिलाल जैन
अध्यक्ष ओसवाल बड़ी न्याती
पीपाड़ निवासी
भ्रमणध्वनि: ९९८३२२३१५६

शांतिलाल जी अपनी जन्मभूमि 'पीपाड़ सिटी' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि पहले और आज के 'पीपाड़' में बहुत अधिक फर्क आ गया है, पहले यह छोटा सा कस्बा था, आज शहर के साथ तहसील बन गया है, जिसके अंतर्गत ३३ पंचायत, एसडीएम कार्यालय, तहसील कार्यालय जैसे कई सरकारी कार्यालय स्थापित हैं। पहले साधन सीमित थे, आज हर तरह के साधन सुविधा उपलब्ध हैं, शिक्षा के लिए बड़े-बड़े स्कूल, कॉलेज, कन्या महाविद्यालय खुल गए हैं। अस्पताल जिलास्तर का बन गया है। आवागमन के लिए रोडवेज बसों की उत्तम सुविधा है। आर्थिक दृष्टिकोण से भी यह क्षेत्र उत्तम है, रिटेल का कारोबार बड़े पैमाने पर होता है। मैन्युफैक्चरिंग में लाइमस्टोन हाइड्रेट लाइम की फैक्ट्रियां हैं। पहले यहां की खेती बारिश के पानी पर निर्भर थी, यह क्षेत्र जुजारि नदी के पास बसा हुआ है, यह नदी पुष्कर से निकलती है और लूणी नदी में समाहित होती है। पहले यहां कुओं का जल स्तर ऊंचा था पर डैम के कारण यहां का जलस्तर बहुत ही कम हो गया है, पानी की समस्या होने लगी है। यहां की खेती बाड़ी में रायडा, गेहूं की फसल अधिक होती है, पहले सौंफ और लाल मिर्च की खेती अधिक होती थी, जिसका निर्यात भी होता था। यहां रंगाई-छपाई का काम बड़े पैमाने पर होता है, यहां के खानपान में खिजुरिया मिठाई प्रसिद्ध है। धार्मिक स्थलों की बात की जाए तो जब से 'पीपाड़' शहर बना, तब से यहां पर पीपलाद माता का मंदिर स्थापित है। माहेश्वरी समाज द्वारा लक्ष्मीनाथ जी का मंदिर संचालित है। जैन समाज का पार्श्वनाथ जी का मंदिर व तालाब किनारे शांतिनाथ तीर्थंकर जी का मंदिर, इसके अलावा अन्य कई देवी-देवताओं के मंदिर हैं, कहते हैं कि यह नगरी संत पीपा जी द्वारा बसाई गई थी, यहां का प्राकृतिक वातावरण बहुत ही उत्तम है। 'सापासर' सरोवर उल्लेखनीय है, जिसमें हनुमान जी का मंदिर है, जो छिपा समाज द्वारा संचालित है, यहां के राजा महाराजाओं के समय यह क्षेत्र निजाम ठिकाने के अंतर्गत आता था, जहां पर उनके दरबार लगते थे, वह स्थान जो 'कोट' के नाम से जाना जाता है उसे ओसवाल समाज द्वारा खरीदा गया, जहां पर ओसवाल विकास केंद्र स्थापित है, ऐसी अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'पीपाड़ शहर' की...

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का नाम सिर्फ और सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए।

शांतिलाल जी का जन्म व प्रारंभिक शिक्षा 'पीपाड़ सिटी' में संपन्न हुई है, तत्पश्चात कॉलेज की शिक्षा जोधपुर व सीए की शिक्षा मुंबई में हुई है। माता-पिता की सेवा एवं पैतृक भूमि से लगाव के कारण 'पीपाड़' को ही अपनी कर्मभूमि बनाया, यहां आप कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। पूर्व में पीपाड़ नगर पालिका के अध्यक्ष रहे हैं, वर्तमान में ओसवाल बड़ी न्यास के अध्यक्ष हैं, अन्य कई सामाजिक संस्थाओं से जुड़े हैं। जय भारत!

- मेरा राजस्थान

सीए. शांतिलाल गुंदेचा

चार्टर्ड अकाउंटेंट व समाजसेवी
पीपाड़ सिटी निवासी-बेंगलुरु प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८७००२७२९२

शांतिलाल जी अपनी जन्मभूमि 'पीपाड़ सिटी' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि पहले और आज के 'पीपाड़ सिटी' में काफी बड़ा अंतर आ गया है, पहले बिजली-सड़क-पानी की असुविधा थी, पीने के पानी के लिए कुएं का सहारा था और अंधेरे से लड़ने के लिए लालटेन का सहारा लेना पड़ता था, पहले यहां ग्राम पंचायत थी, पहले लैंप पोस्ट लगे, आज बिजली सड़क की व्यवस्था अच्छी है, पानी की समस्या आज भी है, यहां का जलस्तर नीचे चला गया है। यहां ओसवाल, माहेश्वरी, जाट, ब्राह्मण माली आदि हर समुदाय के लोग बसे हुए हैं और हर एक की अलग-अलग बस्ती है, यहां से कुछ किलोमीटर दूरी पर 'रिया' नामक स्थान है, हमारे पूर्वज वहां से आए, आज भी 'रिया' में हमारा पुस्तैनी घर है। 'रिया और पीपाड़ सिटी' एक जैसा ही था। आज हमारा 'पिपाड़' निरंतर प्रगति कर रहा है, हर तरह की सुविधा उपलब्ध है, पहले यहां हाई स्कूल तक ही विद्यालय थे, आज यहां लड़कियों के अलग से विद्यालय, महाविद्यालय, अंग्रेजी माध्यम के विद्यालय व अन्य कई शैक्षणिक संस्थान खुल गए हैं, यहां के पुराने विद्यालयों में रामरख मालानी माध्यमिक विद्यालय है, हमारे समय में यहां के प्रधानाध्यापक व्यास जी हुआ करते थे, जिन्होंने बच्चों की शैक्षणिकता के साथ-साथ व्यक्तित्व विकास पर विशेष ध्यान दिया, उनके शिक्षा का प्रभाव आज भी हमारे व्यक्तित्व में दिखाई देता है। यहां की भौगोलिक स्थिति भी बहुत ही उत्तम है, यह बहुत ही सुंदर गांव है, जिसके एक तरफ नाड़ी है तो दूसरी तरफ तालाब है, तालाब के किनारे सनातन समाज, जैन समाज के मंदिर बने हुए हैं, तो एक तरफ मस्जिद भी बनी हुई है। 'पीपाड़ सिटी' की सीमा पहले लूनी नदी तक थी, पर आज उससे अधिक बढ़ गई है। यहां के लोगों के बीच भाईचारा भी बहुत ही उत्तम है, व्यापारिक दृष्टिकोण से भी यह क्षेत्र उत्तम है, आसपास के छोटे-छोटे गांव के लोग 'पीपाड़ सिटी' आकर बस गए हैं और उद्योग व्यापार में लगे हैं। यहां लाइमस्टोन की फैक्ट्रियां हैं और हर तरह का व्यापार होता है, जिससे यहां की आर्थिक स्थिति उत्तम हुयी है। यहां का खान-पान भी बहुत अच्छा है, विशेषकर प्रभु जी मिठाई वाले के नाम की खजुरिया मिठाई बहुत प्रसिद्ध है जो विदेशों में भी निर्यात होती है। धार्मिक दृष्टिकोण से भी यह क्षेत्र बहुत ही उन्नत है, यहां जैन समाज का मंदिर, सामाजिक भवन बना हुआ है। मंदिरों में पार्श्वनाथ तीर्थंकर और शांतिनाथ तीर्थंकर का है, न्याती अतिथि भवन, उपासरा आदि बने हुए हैं। अन्य समाज के भी भवन और मंदिर हैं। सनातन समाज के भी कई मंदिर हैं। आज यहां के लोग देश के विभिन्न भागों में बसे हैं, फिर भी सभी का जुड़ाव अपने 'पीपाड़ सिटी' से बना हुआ है, यहां के विकास में यहां के भामाशाहों का बहुत योगदान रहा है, ऐसी अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'पीपाड़ सिटी' में...

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित ही अपने देश का नाम केवल 'भारत' ही रहना चाहिए। 'भारत' हमारा ऐतिहासिक नाम है, प्राचीन ग्रंथ और इतिहास में भी वर्णित है, कि भरत चक्रवर्ती के नाम से इस देश का नाम 'भारत' पड़ा।

शांतिलाल जी मूलत: राजस्थान स्थित 'पीपाड़ सिटी' के निवासी हैं, आपका जन्म व शिक्षा यहीं संपन्न हुई है, उच्च शिक्षा आपने 'जोधपुर विश्वविद्यालय' से ग्रहण की है, आपने अपने समय में बी. कॉम में टॉप रैंक बनाकर गोल्ड मेडल हासिल किया था, शिक्षा के लिए और पूरे राजस्थान के टॉपर में आपका भी नाम सम्मिलित था। सीए की शिक्षा आपने 'मुंबई' से ग्रहण की। ५० सालों तक मुंबई में रहकर चार्टर्ड अकाउंटेंट के रूप में कार्यरत है। वर्तमान में बेंगलुरु में बसे हैं और यथासंभव सामाजिक क्षेत्र में सक्रिय रहते हैं। जय भारत!

- मेरा राजस्थान

सीए. करमचंद कांकरिया

चार्टर्ड अकाउंटेंट व समाजसेवी
पीपाड़ सिटी निवासी-मुंबई प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९३२२२४२६१३

करमचंद जी अपनी जन्मभूमि 'पीपाड़ सिटी' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि पहले और आज के 'पीपाड़' में बहुत ही अंतर आ गया है, पहले यह सीमित क्षेत्रफल में फैला था, आज कई किलोमीटर के दायरे में फैल गया है, जनसंख्या भी बढ़ गई है, आसपास के गांव के लोग भी यहां आकर बस गए हैं। विद्यालय, महाविद्यालय, अस्पताल की भी व्यवस्था पहले से उत्तम है, कुछ विद्यालय यहां बहुत ही पुराने हैं। यहां का सामाजिक माहौल बहुत ही अच्छा है, हर धर्म समाज के लोग यहां बसे हुए हैं, लोगों के बीच आज भी अपनापन और प्रेम भाव है। 'पीपाड़ सिटी' धर्म और शिक्षा के लिए विशेष रूप से जाना जाता है, व्यापारिक दृष्टिकोण से भी यह क्षेत्र बहुत ही उत्तम है, हैंडलूम से जुड़ा कपड़ों का कारोबार है, तो लाइम स्टोन की इंडस्ट्रीज हैं, यहां खेती-बाड़ी भी उत्तम है, सब्जी मंडी, अनाज मंडी दोनों ही है। यहां के धार्मिक स्थिति की बात की जाए तो कई प्राचीन और ऐतिहासिक मंदिर है, जिनमें तालाब के किनारे शांतिनाथ जी का मंदिर, गांव के बीच तीर्थंकर पार्श्वनाथ जी का मंदिर व दादा गुरुदेव जी की दादाबाड़ी बनी हुई है, यहां कई स्थानक भी बने हुए हैं। सनातन समाज के भी कई मंदिर हैं, आर्य समाज का मंदिर, हिंदू महासभा स्थापित है। प्राकृतिक वातावरण भी यहां का बहुत ही उत्तम है। नदी, तालाब और हरियाली से भरा हुआ, अनेक विशेषताओं के साथ है हमारा 'पीपाड़' शहर...

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि यह बहुत ही अच्छा अभियान है, इस अभियान का मैं पूर्ण समर्थन करता हूं, अपने देश का एक ही नाम, एक ही पहचान रहनी चाहिए 'भारत'।

करमचंद जी मूलतः 'पीपाड़ सिटी' के निवासी हैं, आपका जन्म व प्रारंभिक शिक्षा 'पीपाड़' में संपन्न हुई है, उच्च शिक्षा 'रायचूर' से और सीए की शिक्षा 'मुंबई' से ग्रहण की है। १९८६ से आप 'मुंबई' में बसे हुए हैं और चार्टर्ड अकाउंटेंट के रूप में सक्रिय हैं, साथ ही सामाजिक कार्य में भी सक्रिय रहते हैं। जैन समाज के विभिन्न संस्थाओं से जुड़े हैं। जय भारत!

- मेरा राजस्थान

अमृतलाल जैन
व्यवसायी व समाजसेवी
पीपाड़ सिटी निवासी-मुंबई प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८९२२ ६०७०२

अमृतलाल जी अपनी जन्मभूमि 'रिया सेठों की-पीपाड़ सिटी' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि 'पीपाड़' एक प्रगतिशील शहर बन रहा है, जिसने आज बड़े शहर का रूप ले लिया है, यहां हर क्षेत्र में परिवर्तन आ रहा है, विशेषकर शिक्षा के प्रति लोगों में अधिक जागरूकता आई है, यहां कई विद्यालय, महाविद्यालय बने हुए हैं, पूरे 'जोधपुर' जिले का पहला कन्या महाविद्यालय यहां के प्रवासी राजस्थानियों द्वारा बनाया गया था। यह धर्म नगरी के रूप में भी जानी जाती है, आचार्य श्री हस्तीमल जी और आचार्य श्री हीराचंद जी म.सा. की जन्मस्थली है, यहां पर कई दिक्षाएं हुई हैं और चातुर्मास होते रहते हैं, यहां कई जैन मंदिर, सनातन समाज के मंदिर हैं, जिसमें से तो कई सैकड़ों वर्ष पुराने हैं। व्यापारिक दृष्टिकोण से भी यह क्षेत्र बहुत ही उत्तम है, एक समय यहां लाल मिर्च की पैदावार सबसे अधिक होती थी, वर्तमान में यहां लाइमस्टोन की कई फैक्ट्रियां हैं, पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत जी की यह कर्मस्थली रही है, इसलिए उनको यहां से विशेष लगाव है। प्राकृतिक रूप से भी यह क्षेत्र बहुत ही उत्तम है, यहां तालाब, नाड़ी आदि भी हैं।
यहां से चार-पांच किलोमीटर दूरी पर स्थित है 'सेठों की रिंया' की सेठों की रिंया एक ऐतिहासिक गांव है, मारवाड के ढाई घर में १ घर रिंया सेठ का था जिस समय जोधपुर रियासत में अकाल पड़ा तो यहां के सेठ ने जोधपुर से लेकर रिंया तक धन से लदी हुई बैलगाड़ी की लाइन लगा दी थी, यहां पर वायण माता जी का मंदिर भी बहुत ही पुराना है, जिसकी २०२० में पुर्ननिर्माण व प्राण प्रतिष्ठा की गई थी। प्राकृतिक रूप से भी यह क्षेत्र बहुत ही उत्तम है, ऐसी अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'पीपाड़ सिटी' की।
'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है की निश्चित रूप से अपने देश का नाम केवल 'भारत' ही रहना चाहिए और यह कार्य तो बहुत पहले हो जाना चाहिए था, आचार्य श्री विद्यासागर जी ने भी नरेंद्र मोदी जी को यही कहा था कि अपने देश का एक ही नाम रहना चाहिए 'भारत'।
अमृतलाल जी का जन्म और शिक्षा 'रिया सेठों की - पीपाड़ सिटी' में संपन्न हुई है। १९८७ से आप मुंबई में बसे हुए हैं और व्यावसायिक कमर्शियल क्षेत्र में सक्रिय हैं, अन्य कई संस्थानों से भी जुड़े हुए हैं, 'जीतो' 'जीसीएएफ' के सदस्य हैं, जैन सेवा संघ व शिक्षा समिती पीपाड़ के सहसचिव एवं मुंबई की ११५ वर्ष पुरानी सेठ जी. एम. जैन होस्टल मुंबई के ट्रस्टी की भी भूमिका निभा रहे हैं। जय भारत!

- मेरा राजस्थान

धनरूपचंद मेहता
अध्यक्ष बेंगलुरु शांतीनगर जैन संघ
पीपाड़ सिटी निवासी-बेंगलुरु प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९३४१२२१०८४

धनरूप जी अपनी जन्मभूमि 'पीपाड़ सिटी' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि पहले और आज के 'पीपाड़' में बहुत ही परिवर्तन आ गया है, पहले यहां पानी की तकलीफ बहुत थी, तालाब का सहारा लेना पड़ता था और आज तो घर-घर में पानी की व्यवस्था है, सुविधाएं भी कम थी आवागमन के साधन भी बहुत सीमित थे, पर आज हर तरह की व्यवस्था उत्तम है। स्कूल, कॉलेज, अस्पताल भी अच्छे हो गए हैं, यहां का सामाजिक वातावरण भी बहुत ही उत्तम है, हर धर्म व समाज के लोग आपस में मेल-मिलाप के साथ रहते हैं, धार्मिक दृष्टिकोण से भी यह क्षेत्र बहुत ही उत्तम है, यहां चातुर्मास समय-समय पर होते रहे है, दीक्षाएं भी हुई हैं, यहां बाजार के मध्य में पार्श्वनाथ तीर्थंकर का मंदिर है तो सापासर तालाब के किनारे शांतिनाथ जी का मंदिर है, फिर सनातन समाज का लक्ष्मी नारायण जी का मंदिर, मोगरिया हनुमान जी का मंदिर भी है। प्राचीन बावड़ी भी स्थित है, यहां से १५ किलोमीटर दूरी पर स्थित है 'कापरड़ा जैन तीर्थ' जो एक प्रसिद्ध स्थान है। आवागमन की व्यवस्था अच्छी है, विशेषकर 'जोधपुर' से बस व्यवस्था बहुत ही अच्छी है। व्यापारिक दृष्टिकोण से भी यह क्षेत्र उत्तम है। यहां की लाल मिर्च और बोर भी प्रसिद्ध है। यहां कपड़ों की रंगाई-छपाई का कारोबार बड़े पैमाने पर होता है, यहां आस-पास लाइमस्टोन केमिकल की कई फैक्ट्रियां हैं। खान-पान की चीजों में यहां प्रभु जी के मिठाई विशेष प्रसिद्ध है, यहां आने वाला हर कोई इसका आनंद अवश्य उठाता है, ऐसी अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'पीपाड़ सिटी' में...
'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का नाम केवल 'भारत' ही रहना चाहिए, जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव जी के पुत्र भरत चक्रवर्ती के नाम से इस देश का नाम 'भारत' पड़ा, अतः यही हमारी वास्तविक पहचान है जिसे हमें बनाए रखना चाहिए।
धनरूप जी मूलतः राजस्थान में स्थित 'पीपाड़' के निवासी हैं, आपका जन्म सम्पूर्ण व शिक्षा यहीं संपन्न हुई है, २० सालों तक आप मुंबई में बसे रहे और पिछले २० सालों से बेंगलुरु में बसे हैं, यहां ऑटो मोबाइल के कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। 'पीपाड़ सिटी' में आपके द्वारा गुरु हस्ती, गुरु हीरा द्वार बनवाया जा रहा है, जिसका उद्घाटन अभी बाकी है। बेंगलुरु शांतीनगर जैन संघ के अध्यक्ष हैं, अन्य कई संस्थानों में भी सक्रिय हैं। जय भारत!

- मेरा राजस्थान

भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाना चाहिए

सीए. शांतिलाल मेहता

समाजसेवी
पीपाड़ सिटी निवासी-मुंबई प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८९२ ४९२०५१

शांतिलाल जी अपनी जन्मभूमि पर 'पीपाड़ सिटी' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि पहले और आज के 'पीपाड़' में काफी बदलाव आ गया है, शिक्षा, आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक हर क्षेत्र में यहां बदलाव देखा जा सकता है, पहले यह एक छोटे से क्षेत्रफल में बसा हुआ था, गांव था और आज यह टाउन बन गया है। सामाजिक वातावरण में बहुत बदलाव आया है, पहले लोगों के पास एक दूसरे के लिए समय रहता था, पर आज काम में व्यस्त रहने लगे हैं, क्योंकि यहां की आर्थिक स्थिति बहुत ही अच्छी हुयी है, हर तरह का व्यापार होने लगा है, इंडस्ट्रीज भी लगी हुई है। शिक्षा के क्षेत्र में 'पीपाड़' बहुत ही आगे है, यहां पहले अधिकतर चार्टर्ड अकाउंटेंट की पढ़ाई करते थे, पर आज डॉक्टर, इंजीनियर व अन्य क्षेत्रों में भी लोग अग्रसर हैं, एक समय ऐसा था कि पूरे राजस्थान में सबसे अधिक चार्टर्ड अकाउंटेंट का गांव 'पीपाड़' को ही माना जाता था, यहां का प्राकृतिक वातावरण भी बहुत उत्तम है पर गाड़ियों की संख्या अधिक होने से यहां ट्रैफिक होने लगती है, आसपास के छोटे-छोटे गांव का मुख्य केंद्र 'पीपाड़' है, जो व्यावसायिक रूप से समृद्ध है, यहां की लाल मिर्च बहुत प्रसिद्ध है, जो अन्य राज्यों में भी जाती है, यह धार्मिक क्षेत्र भी कहा जाता है, यहां जैन मंदिर व सनातन मंदिर है, यहां का तालाब व नाड़ी उल्लेखनीय है। यहां सभी धर्म समाज के लोग बसे हुए हैं, सभी त्यौहार बड़े ही धूमधाम से मनाए जाते हैं, यहां कई गौशाला हैं और एक बकराशाला भी है, ऐसी अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'पीपाड़ सिटी' में...

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम केवल 'भारत' ही रहना चाहिए, जो भरत चक्रवर्ती के नाम से पड़ा है, 'भारत' हमारा ऐतिहासिक नाम है, जो हमें हमारी संस्कृति से जोड़े रखता है, अतः अपने देश का एक ही नाम, एक ही पहचान रहनी चाहिए 'भारत'।

शांतिलाल जी का जन्म व प्रारंभिक शिक्षा 'पीपाड़ सिटी' में ही संपन्न हुई है, बीकॉम की शिक्षा आपने 'जोधपुर' से ग्रहण की, १९६९ में आपका मुंबई आना हुआ और चार्टर्ड अकाउंटेंट की पढ़ाई आपने यहीं से ग्रहण कर कई वर्षों तक प्रेक्टिस करने के पश्चात, आज सेवानिवृत्त हैं और सामाजिक कार्यों में सक्रिय हैं, विभिन्न संस्थाओं में सलाहकार की भूमिका निभा रहे हैं। जय भारत!

- मेरा राजस्थान

दुलीचंद भंडारी

सहसचिव ओसवाल बंधु समाज मुंबई
पीपाड़ सिटी निवासी-मुंबई प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९७५७३८१००१

दुलीचंद जी अपनी भूमि 'पीपाड़' के प्रति अपने भावों को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि पिछले ४० सालों में 'पीपाड़' में बहुत अंतर आ गया है, पहले यह छोटे से क्षेत्रफल में बसा हुआ था, पर आज यह चारों तरफ फैल गया है, बस्तियां बढ़ गई है, जनसंख्या बढ़ गई है और उसी की तुलना में सुविधा और व्यवस्थाएं भी बन गई हैं। समृद्ध लोगों ने अपने बंगले बना लिए हैं। आज यहां बड़े-बड़े स्कूल कॉलेज अस्पताल खुल गए हैं, शिक्षा व्यवस्था यहां की बहुत ही अच्छी है, आवागमन के साधन अच्छे हैं। यहां का भौगोलिक वातावरण बहुत ही उत्तम है, प्राचीन तालाब, बावड़ी, हवेलियां आज भी वैसी ही हैं, ठिकाना जिसे 'कोट' कहा जाता है जो वर्तमान में ओसवाल लोढे साजन के अंतर्गत संचालित है। 'पीपाड़' को धार्मिक नगरी भी कहा जाता है, यह आचार्य श्री हस्तीमल जी और आचार्य श्री हीरामुनी जी की जन्म भूमि है। 'पीपाड़' शहर में हमेशा ही गुरु भगवंतों के चातुर्मास होते रहते हैं, यहां कई दिक्षाएं भी हुई हैं, यहां कई धार्मिक और सामाजिक भवन भी बने हुए हैं, तालाब के किनारे जैन मंदिर सनातन मंदिर बने हुए हैं। आर्थिक दृष्टिकोण से भी यह क्षेत्र आज बहुत ही उत्तम है, आसपास के गांव के लोग खरीदारी के लिए यहीं आते हैं, यहां कई तरह के व्यापार होते हैं और इंडस्ट्रीज भी है, यहां का सामाजिक वातावरण भी बहुत ही उत्तम है, आज भी लोगों में वही अपनापन और प्रेम भाव है, हर धर्म समाज के लोग आपस में मेल-मिलाप के साथ निवास करते हैं और भी कई विशेषताएं हैं हमारे 'पीपाड़' में...

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि यह बहुत ही अच्छा अभियान है, इस अभियान का मैं पूर्ण समर्थन करता हूं।

दुलीचंद जी का पैतृक निवास स्थान 'पीपाड़' शहर से १७ किलोमीटर दूरी पर स्थित 'खेजड़ला' है, आपका जन्म और प्रारंभिक शिक्षा यहीं संपन्न हुई है, तत्पश्चात आपका परिवार 'पीपाड़' आकर बस गया। १९८३ में आप मुंबई आकर बसे और यहां पहले इस्टेट एजेंट के व्यवसाय से जुड़े, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। ओसवाल बंधु समाज मुंबई के सह सचिव हैं, मुंबई में आयोजित होने वाले चातुर्मास में व्यवस्थापक की भूमिका निभाते हैं और व्यक्तिगत रूप से भी कई सामाजिक कार्य करते रहते हैं। शांत क्रांति जैन संघ, एवरशाईन जैन संघ, भारत विकास परिषद व भारतीय जैन संघटना संस्था में सक्रिय हैं। जय भारत!

-मेरा राजस्थान

भारत को 'भारत' ही बोला जाना चाहिए

- बिजय कुमार जैन, वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक

विनीत कोठारी

व्यवसायी व समाजसेवी
पीपाड़ सिटी निवासी-जोधपुर प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९४१४१३५५११

विनीत जी अपने जन्मभूमि 'पीपाड़ सिटी' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि पहले और आज के 'पीपाड़' में रात दिन का अंतर आ गया है, विशेषकर भौगोलिक क्षेत्र में बदलाव आया है, पहले 'पीपाड़' छोटे से क्षेत्रफल में बसा हुआ था अब चारों तरफ बस्तियां बढ़ गई हैं, आसपास के गांव के लोग भी 'पीपाड़' आकर बस गए हैं, पहले यहां की जनसंख्या ५०००० के करीब थी, आज यहां की जनसंख्या लाख के करीब है, उसी के अनुसार यहां विकास भी हुआ है, शिक्षा के क्षेत्र में विशेष प्रगति आई है, पहले एक या दो विद्यालय हुआ करते थे, आज कई विद्यालय और महाविद्यालय हैं, चार्टर्ड अकाउंटेंट के लिए पूरे जोधपुर जिले में 'पीपाड़' शहर का नाम विशेष उल्लेखनीय है। आवागमन की व्यवस्था बहुत ही अच्छी हो गई है। यहां की आर्थिक स्थिति की बात की जाए तो यहां आज हर तरह का व्यापार होने लगा है, कुछ इंडस्ट्रीज भी लग गई है, छपाई का काम भी बड़े पैमाने पर होता है। पर्यटन के क्षेत्र में भी आसपास के स्थान हैं, जहां लोग जाना पसंद करते हैं, यहां से १० किलोमीटर दूरी पर स्थित 'खेजड़ला' नामक स्थान पर मकराना के पत्थर पाए जाते हैं, साथ ही यह क्षेत्र किले के लिए जाना जाता है। अध्यात्मिक क्षेत्र में भी 'पीपाड़' अग्रसर है, यह आचार्य श्री हस्तीमल जी और आचार्य श्री हीरामुनी जी की जन्म भूमि है। 'पीपाड़' शहर साधुसंतों के चातुर्मास से हमेशा लाभान्वित होता रहा है। 'कापरड़ा जैन तीर्थ' भी यहां से कुछ दूरी पर स्थित है, 'पीपाड़' में भी सबसे प्राचीन मंदिर पार्श्वनाथ जैन मंदिर है, जिसमें स्थापित तीर्थंकर की प्रतिमा १०८ प्रतिमाओं में से एक हैं, आज भी यहां प्राचीन गढ़, तालाब, हवेलियां मौजूद हैं, ऐसी अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'पीपाड़ शहर' की...

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम सिर्फ और सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए।

विनीत जी मूलतः 'पीपाड़ सिटी' के निवासी हैं, आपका जन्म व सम्पूर्ण शिक्षा यहीं संपन्न हुई है। वर्तमान में आप 'जोधपुर' में बसे हैं और रियल इस्टेट व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं, जोधपुर में श्री स्थानकवासी जैन श्रमण संघ के सदस्य हैं। जय भारत! **- मेरा राजस्थान**

अशोक कांकरिया

अध्यक्ष पीपाड़ एसोसिएशन चेन्नई
पीपाड़ निवासी-चेन्नई प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८४०१४४४१८

अशोक जी अपनी पैतृक भूमि 'पीपाड़ सिटी' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि पहले और आज के 'पीपाड़' में बहुत अंतर आ गया है, पहले यह गांव जैसा था और आज शहर की तरह आधुनिकरण हो रहा है, यह धार्मिक और शैक्षणिक नगरी के रूप में जाना जाता है, यहां हर वर्ष किसी न किसी गुरु महाराज का चातुर्मास होता है, जिसमें लोग बड़ी संख्या में उपस्थित होते हैं। पिछले कई वर्षों से यहां हर वर्ष एक 'दिक्षा' होती है, जिसमें मेरे हिसाब से हमारे 'पीपाड़' में ही सबसे अधिक होती है। चार्टर्ड अकाउंटेंट की संख्या में भी 'पीपाड़' का नाम सर्वोपरि आता है, यहां और भी कई बड़े-बड़े स्कूल, कॉलेज, अस्पताल खुल गए हैं, जिनमें से तो कई विद्यालय यहां के दानदाताओं और भामाशाह के सहयोग से स्थापित किए गए हैं। व्यापारिक क्षेत्र में भी यह उत्तम है। आसपास के ५२ बाजार 'पीपाड़' में ही लगते हैं, यह क्षेत्र लाल मिर्च के लिए विशेष रूप से जाना जाता है और यहां की खजुरिया व पेठा की मिठाई व नमकीन प्रभु जी बड़े वाले का प्रसिद्ध है। चांदी की पायल यहां की प्रसिद्ध है। यहां कपड़ों का बहुत बड़ा व्यापार होता है, इसीलिए यहां कपड़ा मंडी, अनाज मंडी और सब्जी मंडी भी है। 'जोधपुर' के बाद 'पीपाड़' सबसे बड़ा शहर है, इसीलिए इसे 'मिनी जोधपुर' भी कहा जाता है। सामाजिक दृष्टिकोण से भी यह बहुत ही उन्नत है, यहां ३६ कौम के लोग बसे हुए हैं, सभी का आपस में मेल-मिलाप बहुत ही उत्तम है। यहां के मंदिरों की बात की जाए तो पार्श्वनाथ तीर्थंकर जी का और शांतिनाथ तीर्थंकर जी का पुराना मंदिर है, इसके अलावा तिरुपति बालाजी का मंदिर, कांटे वाले भैरव जी का पर्चा बहुत प्रसिद्ध है, यहां जैन समाज के स्थानक भी बने हुए हैं, प्राकृतिक दृष्टिकोण से भी बहुत ही उत्तम है। 'सापासर' तालाब यहां की शोभा को बढ़ाते हैं, ऐसी अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'पीपाड़' शहर में...

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का एक ही नाम, एक ही पहचान रहनी चाहिए 'भारत'।

अशोक जी मूलतः राजस्थान के जोधपुर जिले में स्थित 'पीपाड़ सिटी' के निवासी हैं। आपका जन्म और शिक्षा 'चैन्नई' में संपन्न हुई है, यहां आप कारोबार से जुड़े हुए हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। चैन्नई में स्थित 'पीपाड़ संगठन' के छह कार्यकाल में सचिव रहे हैं और पिछले दो कार्यकाल से अध्यक्ष पद पर सक्रिय हैं। अन्य कई संस्थानों से भी जुड़े हुए हैं। जय भारत! **- मेरा राजस्थान**

एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

- बिजय कुमार जैन, वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक

भारत को 'BHARAT' ही बोलेंगे

जय भारत! आपणों राजस्थान

Remove INDIA Name From The Constitution

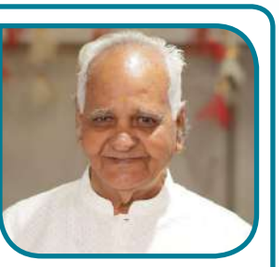

बसंतराज गांधी
व्यवसायी व समाजसेवी
पीपाड़ सिटी निवासी-मुंबई प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९७५७०९९२२२

बसंतराज जी अपनी जन्मभूमि 'पीपाड़ सिटी' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि पहले और आज के 'पीपाड़' में बहुत ही अंतर आया है, पहले यह एक छोटा सा कस्बा था, पहले यह ग्राम पंचायत के अंतर्गत आता था, फिर यहां नगर पालिका स्थापित हुई, आज यह तहसील बन गया है, यहां कई सरकारी कार्यालय मौजूद हैं, दिन-प्रतिदिन यहां का विकास हो रहा है, यह धार्मिक क्षेत्र के रूप में भी जाना जाता है, यहां दो जैन मंदिर हैं जिनमें प्रतिमा तीर्थंकर पार्श्वनाथ जी और तीर्थंकर शांतिनाथ जी की है, यहां दादा गुरुदेव जी की दादाबाड़ी भी है। आसपास अन्य कई देवी-देवताओं के भी मंदिर हैं। यहां का लक्ष्मी नारायण जी का मंदिर बहुत ही प्राचीन है, यहां तालाब और नाडी है, तालाब के किनारे आस पास कई देवी-देवताओं के मंदिर हैं, नदी के किनारे हनुमान जी का प्राचीन मंदिर है, यहां पर रामदेवरा आश्रम है जो यहां के लोगों के बीच विशेष मान्यता रखता है। प्राकृतिक रूप से भी यह क्षेत्र बहुत ही सुंदर है, यहां की आर्थिक स्थिति की बात की जाए तो जब से यहां लाइमस्टोन की फैक्ट्री स्थापित हुई है, तब से यहां के विकास को गति मिली है, यहां से कुछ दूरी पर बिरला जी की सीमेंट फैक्ट्री है, यह क्षेत्र कपड़ा व सोना चांदी व्यवसाय के लिए विशेष रूप से जाना जाता है, आसपास के लोग किराना माल की खरीदारी के लिए 'पीपाड़' ही आते हैं, पहले जो लोग जोधपुर जाते थे, यहां की खेती-बाड़ी भी पहले की अपेक्षा उत्तम है, यहां का सामाजिक वातावरण बहुत ही उल्लेखनीय है, हर धर्म समाज के लोग आपसी मेल-मिलाप के साथ रहते हैं, शिक्षा और अस्पताल की व्यवस्था अच्छी है, ऐसी अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'पीपाड़ सिटी' में...

भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं संदर्भ में आपका कहना है कि १००% अपने देश का तो एक ही नाम रहना चाहिए 'भारत'।

बसंतराजजी का जन्म और शिक्षा 'पीपाड़ सिटी' में ही संपन्न हुई है। 'पीपाड़' में शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात आपने 'पीपाड़' में ही छोटा व्यवसाय प्रारंभ किया, तत्पश्चात भारतीय खाद्य निगम का डिस्ट्रीब्यूशन का काम प्रारंभ किया, यहां से आप 'रतलाम' मध्य प्रदेश गए, वहां भी कारोबार किया, बाद में १९७८ में आप 'मुंबई' आकर बसे और आपने बिल्डींग कंस्ट्रक्शन का कारोबार प्रारंभ किया जो आज आपके पुत्र विनोद जी संभाल रहे हैं। आर्थिक उन्नति के लिए आपने बहुत परिश्रम किए हैं, वर्तमान में आप सामाजिक कार्यों में सक्रिय रहते हैं, राजस्थान सेवा समिति के सदस्य हैं, अन्य कई संस्थानों से भी जुड़े हुए हैं। जय भारत!

- मेरा राजस्थान

प्रमोद कुमार जवाहरलाल मुणोत
व्यवसायी व समाजसेवी
पीपाड़ सिटी निवासी-मुंबई प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८२३०७८५७०

प्रमोद जी अपनी पैतृक भूमि 'पीपाड़ सिटी' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि 'पीपाड़' एक बहुत ही सुंदर और ऐतिहासिक गांव है, आज भी यहां कई प्राचीन चीज मौजूद हैं जो 'पीपाड़' को ऐतिहासिक बनाता है, यहां का सामाजिक वातावरण भी बहुत ही उत्तम है, लोगों का आपस में बहुत ही प्रेम व्यवहार है, एक दूसरे के सहयोग के लिए तत्पर रहते हैं, यहां हर धर्म समाज के लोग बसे हैं। सौहार्दपूर्ण वातावरण हमेशा बना रहता है। जैन मंदिर, सनातन मंदिर, स्थानक, दादाबाड़ी बने हुए हैं। जीव दया के क्षेत्र में भी 'पीपाड़' के निवासी अग्रणी हैं, यहां गौशाला, बकराशाला भी है, यहां का तालाब बहुत ही सुंदर है, जिसके चारों ओर मंदिर व बगीची है, यह एक रमणीय स्थान है, विकास की बात की जाए तो आज यहां स्कूल, कॉलेज, अस्पताल, कन्या विद्यालय खुल गए हैं। यहां पर मेरी दादी मनोहर बाई मुणोत के नाम से श्रीमती मनोहरबाई मुणोत राजकीय अस्पताल का निर्माण हमारे परिवार से सेठ मगनमलजी मुणोत एवं सेठ जवाहरलालजी मुणोत द्वारा किया गया है। आवागमन की भी व्यवस्था बहुत उत्तम है और भी कई विशेषताएं हैं हमारे 'पीपाड़ सिटी' में...

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का एक ही नाम, एक ही पहचान रहनी चाहिए 'भारत'।

प्रमोद जी मूलतः 'पीपाड़' के निवासी हैं। आपका जन्म अमरावती व सम्पूर्ण शिक्षा 'अमरावती व ग्वालियर' व उच्च शिक्षा इलेक्ट्रिकल इंजिनियरींग सूरत में संपन्न हुई है, वर्तमान में आप 'मुंबई' में बसे हुए हैं और फिल्म वितरण एवं प्रदर्शन के क्षेत्र में कार्यरत है, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी यथासंभव सक्रिय रहते हैं। राज्य व राष्ट्रीय स्तर पर फिल्म संगठनों एवं फेडरेशन में कार्यरत है। श्री ओसवाल लोढे साजन विकास केंद्र पीपाड़ के आजीवन ट्रस्टी व जवाहरलाल मुणोत पब्लिक ट्रस्ट अमरावती/नागपुर में मेनेजिंग ट्रस्टी के रूप में कार्यरत हैं। जय भारत!

- मेरा राजस्थान

सीए. निहालचंद मुणोत

सचिव श्री जैन सेवा संघ मुंबई

पीपाड़ सिटी निवासी-मुंबई प्रवासी

भ्रमणध्वनि: ९८२००६८२३७

निहालचंद जी अपनी जन्मभूमि 'पीपाड़' सिटी की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि पहले और आज के 'पीपाड़' में बहुत अंतर आ गया है, समय के साथ यहां हर क्षेत्र में विकास हुआ है। शिक्षा, स्वास्थ्य व अन्य क्षेत्रों में वृद्धि हुई है, पहले यहां की सबसे पुरानी 'सेठ रामरख मालानी हाई स्कूल' थी, आज यहां ५० से भी अधिक विद्यालय खुल गए हैं, जिनमें अंग्रेजी माध्यम के भी विद्यालय हैं, यहां का सबसे पहले अस्पताल १९५६ में सेठ मगनमलजी मुणोत एवं सेठ जवाहरलालजी मुणोत परिवार द्वारा निर्माण कराया गया था, जो वर्तमान में सरकार द्वारा संचालित है। यहां का सामाजिक वातावरण बहुत ही उत्तम है, हर धर्म व समाज के लोग बसे हुए हैं, सभी के बीच आपसी सामंजस्य अच्छा है, यहां माली समाज का बाहुल्य है, वर्तमान में यहां जैन समाज के २५० परिवार बसे हुए हैं, यहां समाज द्वारा श्री पार्श्वनाथ जैन मंदिर, श्री शांतिनाथ जैन मंदिर बना हुआ है, इसके अलावा स्थानक, धार्मिक स्कूल व सामाजिक भवन एवं संस्थाएं बनी हुई हैं। आज यहां के जैन समाज के अधिकतर परिवार देश के विभिन्न भागों में जाकर बस गए हैं, जिनमें मुंबई, चेन्नई, सूरत, रायचूर, बेंगलुरु, नागपुर, अमरावती प्रमुख हैं जब की 'पीपाड़' में आसपास के गांवों के लोग आकर बसने लगे हैं। प्राकृतिक वातावरण यहां का बहुत ही अच्छा है, हरियाली है, यहां दो तालाब हैं, जिसमें एक छोटा तालाब है, जिसे 'नाडी' कहा जाता है। यहां की विशेषताओं की बात की जाए तो यहां सात गौशालाएं एवं एक बकराशाला है। तालाब के किनारे एक आश्रम है जिसे 'खाखीजी की बगेची' के नाम से जाना जाता है, इसके अलावा श्री लक्ष्मी नारायण मंदिर, बालाजी मंदिर, देवी-देवताओं के मंदिर बने हुए हैं, पहले पीपाड़ नगर पंचायत कार्य करती थी आज नगर पालिका के अंतर्गत कार्य होता है, तहसील होने के कारण इसके अंतर्गत कई गांव आते हैं और यहां तहसील कार्यालय, कोर्ट, रजिस्ट्रेशन ऑफिस, बैंक जैसे कई निजी और सरकारी संस्थाएं खुल गए हैं। व्यापार की बात की जाए तो यहां ट्रेडिंग से जुड़ा कारोबार होता है, कृषि क्षेत्र होने के कारण यहां कई फसलों की उपज भी होती है, विशेषकर लाल हरी मिर्च विख्यात है, इसका निर्यात भी किया जाता है। अनाज की कृषि मंडी भी बनी हुई है, यहां समाज बंधुओं के लिए जैन भोजनशाला है, यहां से १०-१२ किलोमीटर दूरी पर 'कापरड़ा जैन तीर्थ' है। शिक्षा के क्षेत्र में 'पीपाड़' हमेशा से ही आगे रहा है, यहां से अब तक ३०० से भी अधिक चार्टर्ड अकाउंटेंट बने हैं,सीए में प्रमुख रूप से श्री पारसमलजी बरडिया एवं श्री उगमराजजी लुणावत का नाम आदरपूर्वक स्मरण करना चाहूंगा, जिन्होंने 'पीपाड़' के शैक्षणिक, सामाजिक, धार्मिक क्षेत्रों में वर्षों तक नि:स्वार्थ भाव से सेवाएँ प्रदान की हैं। इस क्षेत्र ने बहुत से भामाशाह दिए हैं, जिन्होंने अपने सामाजिक कार्यों के माध्यम से 'पीपाड़' सिटी का नाम रोशन किया है। भामाशाहों की सूची में कई दशकों पहले सेठ रामरखजी मालाणी का नाम अग्रणी था व वर्तमान में कल्पतरू समुह के संस्थापक श्री मोफतराजजी मुणोत का नाम सर्वोपरि है, जिन्होंने शैक्षणिक, सामाजिक, धार्मिक, चिकित्सकीय क्षेत्रों में अनेकों वर्षों से योगदान दे रहे हैं, इसके अलावा उन्होंने क्षेत्र के अनेक व्यक्तियों को अपने विशाल समुह में रोजगार दिया है, यहाँ शिक्षा विकास समिति पीपाड़ शहर के तत्वाधान में लड़कियों के लिए महिला कॉलेज श्रीमती सीतादेवी चुनीलाल बरडिया राजकीय कन्या महाविद्यालय एवं सेठ भीकमचंद मुथा राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय का निर्माण कराया गया। इसी तरह राजस्थान प्रगति मंडल के तत्वाधान में श्रीमती सुगनीदेवी पुखराज मुणोत राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय नं. २ का निर्माण कराया गया। कोठारी परिवार ने श्री चम्पालाल हरखचंद कोठारी राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय नं.१ का निर्माण करवाया। ऐसी अनेकों विशेषताएं हैं हमारे 'पीपाड़' सिटी की...

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का एक ही नाम, एक ही पहचान रहनी चाहिए 'भारत'।

निहालचंद जी मूलत: 'पीपाड़ सिटी' के निवासी हैं, आपका जन्म और माध्यमिक शिक्षा यहीं हुयी है, तत्पश्चात उच्च शिक्षा आपने 'जोधपुर' से ग्रहण की है। १९६४ में आपका मुंबई आना हुआ और सीए की शिक्षा आपने यहीं से प्राप्त की, कई वर्षों तक 'कल्पतरु' में कार्य किया। आप सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। शिक्षा विकास समिति पीपाड़ शहर एवं राजस्थान प्रगति मंडल के सदस्य रहे हैं। श्री जैन सेवा संघ मुंबई के सचिव हैं। श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ अंधेरी पश्चिम के आजीवन सदस्य हैं। जय भारत!

- मेरा राजस्थान

सोहनलाल मुणोत

व्यवसायी व समाजसेवी

पीपाड़ निवासी-अहमदाबाद प्रवासी

भ्रमणध्वनि: ९८९८०३२१०८

सोहनलाल जी अपनी जन्मभूमि 'पीपाड़' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि पहले और आज के 'पीपाड़' में बहुत ही अंतर आ गया है, दिन-प्रतिदिन यहां की जनसंख्या बढ़ती जा रही है, यहां की बस्तियां आज मुख्य गांव से बाहर तक फैल गई हैं, इसका क्षेत्रफल बढ़ गया है। प्राकृतिक रूप से यह क्षेत्र बहुत ही सुंदर है, यहां का 'सापासर' तालाब और प्राचीन बावड़ी है जो यहां की शोभा को बढ़ाते हैं। धार्मिक दृष्टिकोण से भी यह क्षेत्र उत्तम है, यहां पार्श्वनाथ तीर्थंकर जी का मंदिर, शांतिनाथ तीर्थंकर जी का मंदिर व लक्ष्मी नारायण मंदिर व शहर के बीचों बीच स्थित है ठाकर साहब का ठिकाना, जिसे 'कोट' कहा जाता है और यह वर्तमान में जैन समाज के अंतर्गत है, पीपाड़ में कई गौशालाएं हैं, जिनमे से एक चम्पालाल कोठारी द्वारा निर्मित अपंग गौ वंशो के लिए हैं। शिक्षा के क्षेत्र में यह हमेशा से ही अग्रणी रहा है, यहां ऐसे भी गुरुजी हुए जिनसे शिक्षा प्राप्त कर यहां के विद्यार्थी सीए, व्यापारी, उद्योगपति, इंजीनियर व अन्य क्षेत्र में अपनी पहचान बनाए हुए हैं, एक समय तो ऐसा था की सबसे अधिक सीए वाला गांव 'पीपाड़' को कहा जाता था, यहां आज भी बड़े-बड़े शैक्षणिक संस्थान विद्यालय, महाविद्यालय स्थापित हैं, आर्थिक दृष्टिकोण से भी यह क्षेत्र बहुत ही उन्नत है, यहां लाल मिर्च की पैदावार सबसे अधिक होती है, जिसका निर्यात भी किया जाता है, अनाज मंडी और सब्जी मंडी भी बनी हुई है, यहां आस-पास कई **शेष पृष्ठ ३७ पर...**

पृष्ठ ३६ से... इंडस्ट्रीज भी लगे हैं, जिससे यहां की आर्थिक स्थिति को काफी मजबूती मिली है। यहां के खानपान में खजुरिया मिठाई बहुत ही प्रसिद्ध है और भी कई विशेषताएं हैं हमारे पीपाड़ में ...

भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत', राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का नाम केवल 'भारत' ही रहना चाहिए।

सोहनलाल जी मूलतः 'पीपाड़' के निवासी हैं। आपका जन्म व शिक्षा 'पीपाड़' में ही संपन्न हुई है, लगभग ५० सालों से आप 'अहमदाबाद' में बसे हुए हैं और कारोबार से जुड़े रहे, वर्तमान में आपके पुत्र व्यापार संभाल रहे हैं, आपका एक पुत्र युएसए में तथा दूसरा पुत्र दुबई में है और तीसरा पुत्र यहां आपके साथ व्यापार में संलग्न हैं, आप कई सामाजिक संस्थाओं से भी जुड़े हैं, उपाश्रय कमेटी के कार्यकारी सदस्य, महावीर शिक्षण संस्थान और ज्ञानशाला से जुड़े हैं। जय भारत!

- मेरा राजस्थान

नेमीचंद चौरडिया

अध्यक्ष श्री श्वे. स्थानकवासी जैन श्रावक संघ हलसूर, बेंगलुरु
पीपाड़ सिटी निवासी-बेंगलुरु प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८४५०१३०१६

नेमीचंद जी अपनी जन्मभूमि 'पीपाड़ सिटी' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि पहले के मुकाबले आज का 'पीपाड़' बहुत ही उन्नति कर रहा है, हर क्षेत्र में यहां विकास हो रहा है। स्कूल, कॉलेज, अस्पताल की संख्या बढ़ गई है, व्यवस्थाएं भी अच्छी हुयी हैं, आवागमन की सुविधा है। व्यापार उद्योग के क्षेत्र में यहां विशेष प्रगति हुई है, हर तरह का व्यापार होता है, विशेषकर कपड़ा, किराणा का कारोबार बड़े पैमाने पर होता है और लाइमस्टोन की आसपास फैक्ट्रियां भी बहुत हैं, खेती में भी अच्छी उपज है, यहां धान और सब्जी की बहुत बड़ी मंडी है, यहां जीरा, गेहूं, बाजरा, मूंग, मोठ जैसे अनाज अधिक होते हैं। यह धार्मिक और सामाजिक क्षेत्र में भी उत्तम है, हर धर्म व समाज के लोग बसे हैं, कह सकते हैं कि ३६ कौम के लोग बसे हुए हैं। हर समाज की अपनी सामाजिक व धार्मिक संस्थाएं बनी हुई हैं। धार्मिक दृष्टिकोण से भी यह क्षेत्र बहुत ही उत्तम है। जैन समाज के गु रु भगवंतों के चातुर्मास यहां हर वर्ष होते रहते हैं। दीक्षाएं भी होती रहती हैं। यहां पार्श्वनाथ तीर्थंकर और शांतिनाथ तीर्थंकर जी का मंदिर, दादाबाड़ी व स्थानक बने हुए हैं। सनातन समाज का लक्ष्मीनाथ जी का मंदिर, हनुमान जी का मंदिर, बालाजी का मंदिर विशेष उल्लेखनीय है, प्राकृतिक दृष्टिकोण से भी यह क्षेत्र उत्तम है, नदी, तालाब यहां की सुंदरता को और अधिक बढ़ा देते हैं, पूरे 'पीपाड़ सिटी' में कई गौशाला हैं, जिसमें चिरडानी गोपाल गौशाला विशेष प्रसिद्ध है, जहां हमारे परिवार द्वारा प्याऊ, कबूतरों के लिए रैन बसेरा आदि बनवाया गया है। 'पीपाड़ सिटी' पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत जी के लिए बहुत ही प्रिय है, क्योंकि यह उनकी कर्मस्थली रही है, ऐसी अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'पीपाड़ सिटी' में...

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का नाम केवल 'भारत' ही रहना चाहिए।

नेमीचंद जी मूलतः 'पीपाड़ सिटी' के तहसील में स्थित 'चिरडानी' के निवासी हैं, आपका जन्म और प्रारंभिक शिक्षा यहीं संपन्न हुई है, पिछले ५० सालों से आप 'बेंगलुरु' में बसे हैं, पेपर व ब्रोकर के कार्य में संलग्न हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। 'बेंगलुरु' में स्थापित श्री पीपाड़ शहर जैन महासंघ के पूर्व अध्यक्ष रहे हैं, अन्य कई संस्थानों से जुड़े हैं, राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री श्री भैरोंसिंह शेखावत, श्री गजेंद्रसिंह शेखावत व पी. पी. चौधरी जी जैसे राजनीतिज्ञों से आपके पारिवारिक संबंध रहे हैं। जय भारत!

- मेरा राजस्थान

अशोक मेहता

व्यवसायी व समाजसेवी
पीपाड़ सिटी निवासी-चेन्नई प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८४१०३५३९९

अशोक जी अपनी जन्मभूमि 'पीपाड़ सिटी' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि 'पीपाड़' जोधपुर जिले का एक प्रमुख शहर है, जिसे गांव और शहर का मिलन कहा जा सकता है। आज यहां स्कूल, कॉलेज, अस्पताल हर तरह की व्यवस्था उत्तम है। यहां का सामाजिक वातावरण बहुत ही अच्छा है, हर समाज के लोग बसे हुए हैं, 'माली' समाज की संख्या अधिक है। प्राकृतिक दृष्टिकोण से भी यह क्षेत्र उत्तम है, यहां तालाब है जिसके किनारे जैन सनातन समाज के मंदिर बने हुए हैं, यहां का सबसे पुराना जैन मंदिर पार्श्वनाथ तीर्थंकर जी का है, जो लगभग ६०० साल पुराना है, इसके अलावा अन्य जैन मंदिर और दादाबाड़ी बने हुए हैं। व्यापारिक दृष्टिकोण से भी यह क्षेत्र उत्तम है। मिर्च, जीरा, सौंफ के पैदावार अधिक होती है, जिसका निर्यात भी किया जाता है, यहां अनाज मंडी भी बनी हुई है, यहां का सबसे पुराना स्थान जहां ठाकर साहब का दरबार लगता था, आज 'कोट' के रूप में विख्यात है। ऐसी अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'पीपाड़ सिटी' में...

अशोक जी का जन्म और प्रारंभिक शिक्षा 'पीपाड़ सिटी' में ही संपन्न हुई है, उच्च शिक्षा आपने 'चेन्नई' से ग्रहण की है, यहां आप कंस्ट्रक्शन, ऑटोमोबाइल के कारोबार से जुड़े हैं। सामाजिक कार्यों में सक्रिय रहते हैं। शिक्षा विकास समिती पीपाड़ शहर के तत्वाधान मे निर्मित एवं राज्यसरकार द्वारा संचालित सीतादेवी, चुन्नीलाल बरडिया कन्या महाविद्यालय, जिसमें १४०० बालिकाएं शिक्षा ग्रहण कर रही हैं, के अध्यक्ष पद पर सक्रिय हैं। मेडिकल रिलीफ एसोसिएशन से भी जुड़े हैं। शंकर नेत्रालय बोर्ड व राजस्थानी संगठन के कार्यकारिणी सदस्य हैं। जय भारत!

- मेरा राजस्थान

विजय प्रकाश मुथा

अध्यक्ष श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ
पीपाड़ सिटी निवासी
भ्रमणध्वनि: ९४१३५०८७४७

विजय जी अपनी जन्मभूमि 'पीपाड़ सिटी' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि पहले और आज के 'पीपाड़' में बहुत ही अंतर आ गया है, हर तरफ आधुनिकरण का प्रभाव दिखाई देता है। यहां के आर्थिक, सामाजिक, भौगोलिक हर क्षेत्र में परिवर्तन आया है, पहले यहां कुएं बहुत हुआ करते थे, पानी भरपूर मात्रा में मिलता था, नदी बहती थी, कहते हैं कि दो बार यहां बाढ़ भी आई थी, यहां से १० किलोमीटर दूरी पर 'जालीवाडा बांध' बनाया गया, जिससे यहां की नदी में पानी आना बंद हो गया और यहां के कुओं का भी जलस्तर धीरे-धीरे कम होता गया, आज यहां पानी की बड़ी समस्या है। पानी की व्यवस्था अच्छी होने पर यहां खेती भी अच्छी होती थी, विशेषकर यहां सब्जियां अधिक होती थी। यहां के कृषक माली समाज के अधिक संख्या में हैं, उनका पेशा ही सब्जियों की कृषि पर ही निर्भर था, पर आज उनकी आय पर बहुत प्रभाव पड़ा है। आज भी यहां सब्जियों की पैदावार होती है पर जितनी होनी चाहिए थी, उतनी नहीं हो पाती। यहां की आर्थिक स्थिति की बात की जाए तो यहां लाइम स्टोन, कच्चे माल की कई फैक्ट्रियां हैं साथ ही यहां हर तरह का व्यापार होता है। जैन समाज में साधु संतों के हाथों में जो भिक्षा पात्र होता है, जैन समाज के साधु संत के लिए गोचरी के पात्र जिसे सामान्य भाषा में पात्रा कहते हैं यहां पर बनाये जाते है उसका हस्त उद्योग पीपाड़ सिटी में ही स्थित है, जो पूरे भारत में निर्यात किया जाता है। 'पीपाड़ सिटी' ने बहुत बड़े-बड़े उद्योगपति दिए हैं जो देश दुनिया में अपना नाम रोशन कर रहे हैं। 'पीपाड़ सिटी' को धार्मिक नगरी के रूप में भी जाना जाता है, यहां बड़े-बड़े आचार्य, साधु संत हुए हैं, जिनकी यह जन्मस्थली और कर्मस्थली है। जैन समाज के आचार्य श्री हस्तीमल जी और वर्तमान आचार्य हीराचंद जी की जन्मस्थली है, यहां समय-समय पर जैन समाज और सनातन समाज के चातुर्मास होते रहते हैं, यहां कई दिक्षाएं हुई है। यहां शांतिनाथ जी का मंदिर व चिंतामणी तीर्थंकर जी का मंदिर, दादाबाड़ी स्थानक बने हुए हैं। लक्ष्मीनाथ जी का मंदिर बहुत ही प्राचीन है, हनुमान जी की बावड़ी भी विशेष उल्लेखनीय है। यहां का 'सापासर' तालाब बहुत ही उल्लेखनीय है, जहां हर तरह के धार्मिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। गणगौर का मेला भी यहीं लगता है और हर समाज अपने धार्मिक कार्यों की शुरुआत यहीं करता है। सामाजिक दृष्टिकोण से भी यह क्षेत्र बहुत ही उत्तम है, हर धर्म समाज के लोग आपसी सद्भाव व प्रेम भावना के साथ निवास करते हैं। शिक्षा का यह हमेशा से ही केंद्र रहा है, यहां आज बड़े-बड़े विद्यालय और शैक्षणिक संस्थान खुल गए हैं। बीएड, आईटी का महाविद्यालय है, जिलास्तर का अस्पताल है, पर अभी अस्पताल में उतनी सुविधा नहीं है। नेत्र चिकित्सालय अलग से बना हुआ है। प्राकृतिक वातावरण यहां का बहुत ही उत्तम है, यह क्षेत्र रजवाड़ा के समय निमाज ठिकाना के अंतर्गत आता था, आज भी उस ठिकाना को श्री ओसवाल लोडे साजन द्वारा खरीदा गया, जिसे आज विकास केंद्र 'कोट' के नाम से जाना जाता है, इसमें महल धणी का मंदिर बना हुआ है और भी कई विशेषताएं हैं हमारे 'पीपाड़ सिटी' में...

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत', राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का नाम केवल 'भारत' ही रहना चाहिए, तीर्थंकर ऋषभदेव जी के पुत्र भरत चक्रवर्ती के नाम से इस भूखंड का नाम 'भारत' पड़ा है।

विजय जी का जन्म व सम्पूर्ण शिक्षा 'पीपाड़ सिटी' में संपन्न हुई है, यहां आप फुटवियर व्यापार से जुड़े हैं साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ पीपाड़ सिटी व रघुनाथ भवन के अध्यक्ष हैं, जैन भोजन शाला के मंत्री पद पर कार्यरत हैं। जैन समाज के अन्य संस्थाओं में भी सक्रिय हैं। जय भारत!

- मेरा राजस्थान

प्रकाशचंद मुणोत

व्यवसायी व समाजसेवी
पीपाड़ सिटी निवासी-नागपुर प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ८२६२९०७९५०

प्रकाश जी अपनी पैतृक भूमि 'पीपाड़ सिटी' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि 'पीपाड़ सिटी' के निवासी आज शिक्षा और व्यापार के कारण देश के विभिन्न भागों में बस गए हैं, यहां का सामाजिक वातावरण बहुत ही उत्तम है, जैन समाज, माहेश्वरी समाज व अन्य धर्म और समाज के लोग भी बसे हुए हैं। आज यह क्षेत्र शहर और गांव का मेल है, यहां हर तरह की व्यवस्थाएं अच्छी है। आवागमन के साधन अच्छे हैं। स्कूल, कॉलेज, अस्पताल की व्यवस्था उत्तम है। यहां रंगरेज का काम बड़े पैमाने पर होता है। रंगाई, छपाई, ब्लॉक प्रिंट कपड़ों से जुड़े लघु उद्योग स्थापित हैं, यहां आज हर तरह का व्यापार होने लगा है, इसीलिए यहां की आर्थिक स्थिति उत्तम है, आसपास के गांव के लोग भी खरीदारी के लिए यहीं आते हैं। प्राकृतिक रूप से यह क्षेत्र बहुत ही सुंदर है, हरियाली भी दिखाई देती है, यहां तालाब और छोटी नाड़ी भी है। यहां के ऐतिहासिक चीजों की बात की जाए तो यहां जैन मंदिर स्थानक, दादाबाड़ी बनी हुई है। सनातन समाज के भी कई मंदिर हैं जो बहुत पुराने हैं, यहां से ८ किलोमीटर दूरी पर स्थित है 'कापरड़ा जैन तीर्थ', जो प्रसिद्ध है, हिंदू महासभा का कार्यालय एक दिल्ली में तो दूसरा 'पीपाड़' में है और भी कई विशेषताएं हैं हमारे 'पीपाड़ सिटी' में...

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है की निश्चित रूप से अपने देश का नाम केवल 'भारत' ही रहना चाहिए।

प्रकाश जी मूलतः 'पीपाड़' शहर के निवासी हैं। आपका परिवार कई वर्षों से 'नागपुर' में बसा हुआ है, आपका जन्म व शिक्षा 'नागपुर' में ही संपन्न हुई है यहां आप किराणा व्यवसाय से जुड़े हैं और सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। पिछले ३०-३५ सालों से आप आरएसएस से जुड़े हुए हैं। जय भारत!

- मेरा राजस्थान

समाजसेवा का दुसरा नाम- श्री उगमराज मगराजजी लुणावत (स्व.)

श्री उगमराज मगराजजी लुणावत (स्व.)

भारतीय चार्टर्ड एकाउंटेंट्स संस्थान, अखिल भारतीय कर प्रैक्टिशनर्स महासंघ और सेल्स-टैक्स प्रैक्टिशनर्स एसोसिएशन द्वारा आयोजित विभिन्न राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में एक सक्रिय भागीदार, अपने मूल स्थान 'पीपाड़' शहर के लिए सामाजिक गतिविधियाँ, 'पीपाड़' शहर के विकास के लिए स्थानीय लोगों के साथ वर्ष १९६९ में शिक्षा विकास समिति का गठन किया, १९६९ से १९७६ तक कोषाध्यक्ष रहे, वर्ष १९७५ में कोषाध्यक्ष के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान लड़कियों के लिए प्राथमिक विद्यालय का निर्माण किया और सरकार को सौंप दिया। वर्ष १९७७ में पीपाड़ सिटी के सभी चार्टर्ड अकाउंटेंट के साथ मिलकर 'राजस्थान प्रगति मंडल' का गठन किया, राजस्थान प्रगति मंडल के संस्थापक महासचिव बने, इसी बैनर तले 'श्रीमती सुगनीदेवी पुखराज मुणोत' के नाम से मिडिल स्कूल का निर्माण करवाया और वर्ष १९८२ में इसे राजस्थान सरकार को सौंप दिया, आज यह स्कूल उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बन गया है।

अपने पिता की प्रेरणा से ओसवाल समाज के लिए 'पीपाड़' में ओसवाल सदन के निर्माण की योजना बनाई और वर्ष १९८९ में ओसवाल सदन का निर्माण शुरू हुआ और १९९२ में यह बनकर तैयार हुआ, जिसमें २६ कमरे, ७ हॉल और ओसवाल समाज के उपयोग के लिए रसोई घर की जगह है, यह एक महत्वाकांक्षी परियोजना थी, जिसे पूरा किया गया, जिसमें वे शुरू से लेकर अंत तक पूरी तरह से जुड़े रहे।

उगम जी विभिन्न सामाजिक एवं सांस्कृतिक निकायों से जुड़े रहे जैसे कि श्री जैन सेवा संघ बॉम्बे १९९१ से ही विभिन्न गतिविधियों के आयोजन हेतु एक माननीय महासचिव के रूप में कार्यरत रहे।

- ट्रस्टीशिप - जालवाड़ स्थानक, अंधेरी, मुंबई १९९९ से २००३ तक
- ट्रस्टीशिप - रुषभ फाउंडेशन चैरिटेबल ट्रस्ट
- श्री जैन सेवा संघ, मुंबई के संस्थापक सचिव १९९१ से...
- ऑल इंडिया फेडरेशन ऑफ टैक्स प्रैक्टिशनर्स के १९७७ से आजीवन सदस्य।
- सेल्स टैक्स प्रैक्टिशनर्स एसोसिएशन के १९७८ से आजीवन सदस्य।
- ओसवाल मित्र मंडल के १९७० से आजीवन सदस्य।
- स्थानकवासी समाज, दिल्ली के आजीवन सदस्य।
- सेल्स-टैक्स बार एसोसिएशन, मुंबई के आजीवन सदस्य।
- अम्ब्रेला मर्चेंट्स एसोसिएशन, मुंबई के मानद सलाहकार।
- अंधेरी रिक्रिएशन क्लब, मुंबई के माननीय सदस्य।
- श्री महावीर फाउंडेशन मुंबई के सदस्य।
- जैन समाज के लिए 'महावीर भवन' के निर्माण की योजना बना रहे थे, आप एक ऐसे व्यक्तित्व थे जिनमें दूरदर्शिता, उत्साह, दृढ़ संकल्प, समर्पण और सामाजिक तथा व्यावसायिक जीवन के प्रति समर्पण था।
- उगमराज जी का अपने पैतृक स्थान पीपाड़-सिटी से हमेशा गहरा नाता रहा और ०३/१२/२०२३ को अपनी अंतिम सांस तक अपने पैतृक स्थान पीपाड़-सिटी के लिए सामाजिक कार्य करते रहे और अंतिम परियोजना दिसंबर २०२२ में अपने भाई के साथ 'आराधना भवन' जैन उपासरा का निर्माण किया और जो ३०-११-२४ को पूरा हुआ और ०४-१२-२०२४ को आधिकारिक रूप से खोला गया, जिसका उपयोग बड़े पैमाने पर समाज द्वारा आने वाले वर्षों के लिए और आने वाली पीढ़ियों में जैन धर्म को स्थापित करने के लिए किया जा रहा है।

वे ५४ वर्षों तक, अपनी अंतिम सांस तक छाजेड़ एण्ड दोशी, चार्टर्ड अकाउंटेंट्स मुंबई के साथ भागीदार रहे। **- मेरा राजस्थान**

पीपाड़ का लाडला वैज्ञानिकता के क्षेत्र में चमकते सबसे कम उम्र के युवा वैज्ञानिक व शोधकर्ता

डॉ. रौनक लुणावत

पीपाड़ सिटी/मुंबई/अमेरिका: डॉ. रौनक लुणावत एक आणविक वायरोलॉजिस्ट हैं, जिनके पास सेल और जीन थेरेपी, कैंसर-जीवविज्ञान, प्रतिरक्षा विज्ञान और सेलुलर चयापचय में १० से अधिक वर्षों का अनुभव है। ड्रेक्सेल विश्वविद्यालय से माइक्रोबायोलॉजी और इम्यूनोलॉजी में पीएचडी की डिग्री रखने वाले, वर्तमान में वूक्सी एडवांस्ड थैरेपीज़ में वायरोलॉजी में एक शोध वैज्ञानिक के रूप में कार्यरत हैं, जो एएवी और एंटिवायरल-आधारित उपचारों, वायरल सुरक्षा परख और सीएआर-टी सेल पीढ़ी में अनुसंधान और विकास प्रयासों का नेतृत्व करते हैं, पहले अभिनव लिवर-ऑन-ए-चिप मॉडल विकसित करना भी शामिल था, इससे पहले ड्रेक्सेल में पोस्ट-डॉक्टरल फेलो के रूप में डॉ. लुणावत ने हेपेटाइटिस बी वायरस और सेलुलर ग्लूकोज चयापचय के बीच परस्पर क्रिया को समझने में महत्वपूर्ण योगदान दिया, कई सहकर्मी-समीक्षित प्रकाशन लिखे हैं और फ्रंटियर्स और जर्नल ऑफ़ मेडिकल वायरोलॉजी और सेलुलर माइक्रोबायोलॉजी जैसी पत्रिकाओं के लिए सक्रिय समीक्षक हैं, एशलैंड विश्वविद्यालय, ओहियो, यूएसए में हेल्थकेयर प्रोग्राम में रणनीतिक एआई के वैज्ञानिक सलाहकारों के रूप में भी काम कर रहे हैं। डॉ. लुणावत की नेतृत्वकारी भूमिकाओं में एस.आई.ई.एस. कॉलेज में छात्र परिषद के महासचिव के रूप में कार्य करना और कई पुरस्कार प्राप्त करना शामिल है, जिनमें एस.आई.ई.एस. कॉलेज, मुंबई द्वारा 'छात्र उत्कृष्टता' पुरस्कार और एच.बी.वी. अंतर्राष्ट्रीय अनुदान-मेलबर्न, ऑस्ट्रेलिया शामिल हैं, प्रसिद्ध समाजसेवी 'पीपाड़ सिटी' निवासी स्व. उगमराज जी के पौत्र व व्यवसायी सुभाष लुणावत के आप सुपुत्र हैं।

सीए. सुभाष लुणावत
चार्टड़ अकाउंटेट व समाजसेवी
पीपाड़ सिटी निवासी-अहमदाबाद प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९४२६५८५७२९

सुभाष जी अपनी पैतृक भूमि 'पीपाड़ सिटी' के विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि मेरे बचपन का 'पीपाड़' और आज के 'पीपाड़' में रात दिन का अंतर आ गया है। 'पीपाड़' हमेशा से ही शैक्षणिक केंद्र रहा है, मेरे पिताजी ने १९६७ में सीए की शिक्षा ग्रहण की थी, उसके बाद अगले दो सालों में २५ के लगभग चार्टर्ड अकाउंटेंट हुए थे, जो आज मुंबई, चेन्नई व भारत के अन्य क्षेत्रों में कार्यरत हैं। 'पीपाड़ सिटी' को चार्टर्ड अकाउंटेंट का गढ़ कहा जाता है। यहां का धार्मिक क्षेत्र भी हमेशा ही उत्तम रहा है, हर वर्ष कई दिक्षाएं होती हैं और चातुर्मास हमेशा से ही होता रहा है। 'जोधपुर' के बाद 'पीपाड़' सबसे बड़ा शहर है, यह कई आचार्यों की जन्मभूमि भी है, यहां पार्श्वनाथ तीर्थंकर और शांतिनाथ तीर्थंकर जी का मंदिर है, हर समाज के अपने-अपने स्थानक बने हुए हैं और एक उपासरा है। जैन अतिथि भवन भी बना हुआ है, इसके अलावा जय नवरत्न भवन, ओसवाल समाज भवन बना हुआ है। छतरी तालाब भी बने हुए हैं, यहां से कुछ किलोमीटर दूरी पर 'कापरड़ा जैन तीर्थ' तीर्थंकर पार्श्वनाथ जी को समर्पित बहुत ही भव्य व सुंदर जैन तीर्थ है। यहां का सामाजिक माहौल भी उत्तम है, हर धर्म समाज के लोग बसे हुए हैं, यहां जैन, माली, माहेश्वरी, सोनी, मुस्लिम हर समाज के लोग बसे हैं, लोगों के बीच आपसी सौहार्दवाला वातावरण है। 'पीपाड़ सिटी' से कई भामाशाह हुए हैं, जिन्होंने 'पीपाड़' के विकास के लिए महत्वपूर्ण योगदान दिया है, जिनमें मेरे पिताजी स्व. उगमराज जी लुणावत, स्व. पारसमल जी बरड़ीया एवं मोफतराज जी मुणोत जैसी कई हस्तियां हैं। व्यापारिक दृष्टिकोण से भी यह क्षेत्र बहुत ही उत्तम है, यहां आस-पास से ५०-६० गांव के लोग खरीदारी के लिए आते हैं। यहां की लाल मिर्च बहुत प्रसिद्ध है। अनाज और सब्जी मंडी बनी हुई है, पहले यहां ग्राम पंचायत कार्य करती थी, आज यहां नगरपालिका है। बिजली विभाग बना हुआ है। तहसील कार्यालय है। आरटीओ ऑफिस जैसे कई सरकारी कार्यालय हैं। आवागमन की भी सुविधा उत्तम है, यहां बसों की उत्तम सुविधा है, ऐसी अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'पीपाड़ सिटी' में...

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का एक ही नाम, एक ही पहचान रहनी चाहिए 'भारत'। यह हमारे देश का प्राचीन नाम है, हमारी संस्कृति की पहचान है।

सुभाष जी का जन्म और प्रारंभिक शिक्षा 'पीपाड़ सिटी' में ही संपन्न हुई है, पिछले कई वर्षो से आप अहमदाबाद में बसे हुए हैं। आपने चार्टर्ड अकाउंटेंट की शिक्षा ग्रहण की है, वर्तमान में इंफ्रास्ट्रक्चर, फाइनेंस से के क्षेत्र में सक्रिय हैं, साथ ही आप सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। जय भारत! **- मेरा राजस्थान**

जगदीश प्रसाद परिहार
संरक्षक पीपाड़ प्रगति मंडल सूरत
पीपाड़ निवासी-सूरत प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९२६५१४०४४२

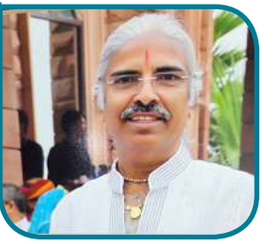

जगदीश जी अपनी जन्मभूमि 'पीपाड़ सिटी' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि पहले और आज के 'पीपाड़ सिटी' में रात-दिन का अंतर आ गया है, पहले यहां हमेशा सुख शांति और गांव जैसा माहौल रहता था, पर आज यहां हर कोई पैसे के पीछे लगा हुआ है। आधुनिकरण का सारा प्रभाव दिखाई देता है, आज यह शहर बनते जा रहा है। विकास की बात की जाए तो यहां सरकारी और सामाजिक संस्थाओं द्वारा 'पीपाड़ शहर' के विकास में बहुत बड़ा योगदान दिया जाता रहा है और आज भी दिया जा रहा है, स्कूल, कॉलेज, अस्पताल की उत्तम व्यवस्था है, पूरे 'पीपाड़' शहर में पांच गौशाला है, यहां के हनुमान गौशाला में ३७५ गाये हैं और 'पीपाड़' शहर में आवारा भटकने वाले गोवंश के रखरखाव के लिए भी समाज द्वारा प्रयास किया जा रहा है, पहले यहां ग्राम पंचायत थी, आज तहसील बन गई है, जिसके अंतर्गत कई गांव आते हैं, सारे सरकारी विभाग 'पीपाड़ सिटी' में हैं। सामाजिक दृष्टिकोण से भी यह क्षेत्र बहुत ही उत्तम है, हर धर्म व समाज के लोग आपस में मेल-मिलाप के साथ रहते हैं। व्यापारिक दृष्टिकोण से भी यह बहुत तेजी से प्रगति कर रहा है, यहां कपड़ा व किराणा का कारोबार होता है लाइमस्टोन की कई खाने हैं, कृषि के क्षेत्र में भी यहां कई फसलें होती हैं, यहां अनाज मंडी, सब्जी मंडी बनी हुई है, यहां की सब्जी मंडी बहुत बड़ी है। धार्मिक दृष्टिकोण से भी यह क्षेत्र उत्तम है, यहां लक्ष्मीनाथ जी का मंदिर बहुत ही पुराना है। जैन समाज के कई मंदिर और स्थानक बने हुए हैं। माहेश्वरी समाज का माहेश्वरी भवन बना हुआ है, यहां का तालाब बहुत ही उल्लेखनीय है, सरकार द्वारा यहां के तालाब का नवीनीकरण किया जा रहा है, जिसे 'सुभाष घाट' के नाम से जाना जाता है। आवागमन के लिए भी यह क्षेत्र उत्तम है, ऐसी अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'पीपाड़ सिटी' में...

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि १००% अपने देश का एक ही नाम, एक ही पहचान रहनी चाहिए 'भारत', इंडिया तो अंग्रेजों द्वारा थोपा गया नाम है, हमारी पहचान 'भारत' से थी और 'भारत' से ही रहनी चाहिए।

जगदीश जी मूलतः राजस्थान स्थित 'पीपाड़ सिटी' के निवासी हैं। साधारण परिवार में जन्मे जगदीश जी शिक्षा समाप्ति के पश्चात पीपाड़ में ही व्यक्तिगत सिलाई का कार्य प्रारंभ किया, गौ माता व तिरुपति बालाजी की कृपा से सूरत में आकर कपड़ों का व्यापार प्रारंभ किया। आज राजस्थान में सबसे बड़े कपड़ा एजेन्ट के रुप में आपका नाम लिया जाता हैं। विश्व की सबसे बड़ी गौशाला गोधाम पथमेड़ा के राष्ट्रीय अध्यक्ष रह चुके हैं। साथ ही सूरत में स्थापित 'पीपाड़ प्रगति मंडल' के संरक्षक है, अन्य कई संस्थानों से भी जुड़े हुए हैं। गौ सेवा के प्रति आप हमेशा चिंतनशील रहते हैं। जय भारत! **- मेरा राजस्थान**

कन्हैयालाल ज्ञानचंद मुणोत

कोषाध्यक्ष ओसवाल जैन सजनान संघ सूरत
पीपाड़ सिटी निवासी-सूरत प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९३७४७१४६२७

कन्हैयालाल जी अपनी जन्मभूमि 'पीपाड़ सिटी' के विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि मेरी प्रारंभिक शिक्षा 'पीपाड़' में ही संपन्न हुई है, शिक्षा के लिए यह हमेशा से ही उत्कृष्ट क्षेत्र रहा है, यहां हमारे समय में बच्चों को प्रारंभ में ३ साल तक पंडित जी के पास शिक्षा ग्रहण करने के लिए भेजा जाता था, जिसके कारण गणित मजबूत होता था, इसीलिए 'पीपाड़' सबसे अधिक चार्टर्ड अकाउंटेंट वाला गांव है, जो पूरे 'जोधपुर' में ही नहीं, राजस्थान में अपना स्थान बनाए हुए हैं, सामाजिक दृष्टिकोण से यह क्षेत्र बहुत ही उत्तम था, बच्चों पर बड़ों का पूरा नियंत्रण रहता था, प्रारंभ में धार्मिक स्कूली शिक्षा अपेक्षित थी। यहां पहले जैन और माहेश्वरी समाज का व्यापारिक वर्चस्व था, पर धीरे-धीरे यहां के लोग उद्योग व्यापार के लिए देश के अन्य भागों में जाकर बस गए, पहले आसपास के कई गांव के लोग खरीदारी के लिए 'पीपाड़ सिटी' ही आते थे क्योंकि यह टाउन कस्बा था, आज भी यहां हर तरह का कारोबार बड़े पैमाने पर होता है। आसपास के क्षेत्र में कई लाइम स्टोन के उद्योग लगे हैं, जहां केमिकल तैयार किया जाता है और देश के विभिन्न भागों में निर्यात होता है। यहां का सामाजिक वातावरण हमेशा सौहार्दपूर्ण बना रहता है, लोग एक दूसरे के सहयोग के लिए तत्पर रहते हैं, एक दूसरे के सामाजिक व धार्मिक कार्यों में सहभागी होते हैं। प्राकृतिक वातावरण की बात की जाए तो कोई विशेष परिवर्तन तो नहीं आया है, पर हां सुविधाएं बढ़ गई हैं, स्कूल, कॉलेज, अस्पताल की व्यवस्था अच्छी है। आवागमन के साधन अधिक हो गये हैं, यह एक ऐतिहासिक क्षेत्र है, प्राचीन समय में यह निमाज ठिकाना के अंतर्गत आता था, जो अब ओसवाल जैन समाज द्वारा संचालित है, यह प्रॉपर्टी बहुत बड़े क्षेत्रफल में फैली हुई है, यहां समय-समय पर विभिन्न धार्मिक और सामाजिक कार्यक्रम होते रहते हैं। वर्तमान में इसे 'कोट' के नाम से जाना जाता है, यह 'पीपाड़ सिटी' के मुख्य केंद्र में स्थित है। प्राकृतिक दृष्टिकोण से भी यह बहुत ही उत्तम है, यहां तालाब, नाड़ी है, जो 'पीपाड़' को और सुंदर बनाते हैं, यह धार्मिक क्षेत्र के रूप में भी जाना जाता है, यहां कई सारे जैन स्थानक व मंदिर, सनातन समाज के मंदिर भी बने हुए हैं, जिनमें से कई मंदिर बहुत पुराने हैं, यहां की कला संस्कृति भी बहुत उत्तम है, फागण के महीने में होने वाला 'गेर' नृत्य जो माली समाज द्वारा आयोजित किया जाता है, बहुत ही प्रसिद्ध है, आसपास के लोग भी इसको देखने आते हैं, ऐसी अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'पीपाड़ सिटी' की...

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि बिल्कुल अपने देश का एक ही नाम रहना चाहिए 'भारत' इंडिया तो कदापि नहीं, हमारी प्राचीन पहचान 'भारत' नाम से थी और 'भारत' नाम से ही रहनी चाहिए।

कन्हैयालाल जी का जन्म 'महाराष्ट्र' में और उच्च माध्यमिक तक शिक्षा 'पीपाड़' में संपन्न हुई है, तत्पश्चात स्नातक की शिक्षा आपने 'जोधपुर' से ग्रहण की। शिक्षा ग्रहण कर १९८१ में आप 'मुंबई' आए और आपने कपड़ों के व्यवसाय को अपने कर्मक्षेत्र के रूप में चुनाव किया। १९९० में आप शेयर मार्केट से जुड़े, १९९६ में आप 'सूरत' में बसे, कपड़ा उद्योग से जुड़े, वर्तमान में शेयर मार्केट से जुड़े हुए हैं। सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं, लायंस क्लब सुरत ऑफ सुरत के अध्यक्ष रहे हैं, १५ सालों से ओसवाल जैन सजनान संघ सूरत के कोषाध्यक्ष हैं, अन्य कई संस्थानों से भी जुड़े हुए हैं। जय भारत!

- मेरा राजस्थान

सीए. पदमचंद कोठारी

चार्टर्ड अकाउंटेंट व समाजसेवी
पीपाड़ सिटी निवासी-मुंबई प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८९२१०४०९३

पदमचंद जी अपनी जन्मभूमि 'पीपाड़ सिटी' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि पहले के मुकाबले आज का 'पीपाड़' बहुत ही बदल गया है, यहां हर तरह के सुविधाएं आसानी से उपलब्ध होने लगी है, पर सामाजिक दृष्टिकोण से यह बहुत ही परिवर्तित हो गया है, आज जैन समाज के अधिकतर परिवार देश के विभिन्न भागों में रोजगार और व्यवसाय हेतु बस गए हैं, लोगों का एक दूसरे से संपर्क कम हो गया है। यहां जैन समाज, माहेश्वरी समाज, ब्राह्मण, जाट, माली, नाई सभी समुदाय के लोग बसे हुए हैं। लोगों का आपस में मेल-मिलाप अच्छा है। विकास की बात की जाए तो आज यहां विद्यालय, महाविद्यालय, कन्या महाविद्यालय, अस्पताल की व्यवस्था अच्छी हो गई है। आवागमन के साधन अच्छे हैं, सड़क व्यवस्था बहुत ही उत्तम है, 'जोधपुर' के लिए हमेशा ही बस उपलब्ध रहती है, यहां के प्राचीन और ऐतिहासिक चीजों की बात की जाए तो यहां पर लक्ष्मीनाथ जी का मंदिर पार्श्वनाथ जी का मंदिर शांतिनाथ जी का मंदिर बहुत ही प्राचीन है जिसका जिर्णोद्धार भी किया गया है, इसके अलावा यहां स्थानक, उपासरा, दादाबाड़ी, तालाब व नाड़ी आदि हैं, गौशाला व बकराशाला भी है। व्यापारिक दृष्टिकोण से भी यह क्षेत्र बहुत ही उन्नति कर रहा है, यहां ट्रेडिंग से जुड़ा हर कारोबार होता है, लघु उद्योग कपड़े के क्षेत्र में विशेष सक्रिय है, यहां कई प्राचीन हवेलियां आज भी अपनी सुंदरता और भव्यता को लिए खड़ी हैं, ऐसी अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'पीपाड़ सिटी' में...

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि यह राजनीतिक मुद्दा है और इसे नेताओं द्वारा ही सुलझाया जा सकता है।

पदमचंद जी का जन्म और प्रारंभिक शिक्षा 'पीपाड़ सिटी' में ही संपन्न हुई है, स्नातक की शिक्षा आपने 'जोधपुर' से ग्रहण की है, तत्पश्चात की शिक्षा मुंबई से प्राप्त की। १९७१ से मुंबई में बसे हैं और चार्टर्ड अकाउंटेंट के प्रैक्टिस में सक्रिय हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी यथासंभव भागीदारी निभाते हैं। जय भारत!

- मेरा राजस्थान

डॉ. सुनील चौधरी
चीफ ऑफ़ प्लास्टिक सर्जरी, मैक्स हेल्थकेयर
पीपाड़ सिटी निवासी-दिल्ली प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८१११९०६०६६

डॉ सुनील जी अपनी पैतृक भूमि 'पीपाड़ सिटी' का गौरव गान करते हुए बताते हैं की 'पीपाड़' तो वो पुण्यभूमि है जो जैन धर्म की एक नहीं दो-दो महनीय विभूतियां, आचार्य पूज्य श्री हस्तीमलजी और परम साध्वीजी विचक्षण श्री की जन्मस्थली के रूप में अमर हो गई है। पहले और आज के 'पीपाड़' में बहुत अंतर आ गया है, पहले यहां बिजली, पानी की उत्तम व्यवस्था नहीं थी, सड़कें भी कच्ची थी, स्कूल भी सीमित थे, पहले यहां छोटे बच्चों के लिए लाल जी की पाठशाला चलती थी जिसमें मैं भी बचपन में पढ़ा था। आज यहां बिजली, पानी, हर तरह की व्यवस्था उत्तम हो गई है, सड़कें भी अच्छी बन गई हैं। 'पीपाड़' का पुराना छोटा गांव आज भी वैसा ही है, पर बाहर की तरफ बस्तियां बढ़ने लगी है। हमारे घर के बगल में प्राचीन रामदेव जी का मंदिर तो पूरे राजस्थान की आस्था का केंद्र है। मैंने तो साइकिल चलाना, लट्टू चलाना 'पीपाड़' में ही सीखा, छुट्टियों में हमेशा ही जाना होता था। मेरे दादाजी भैरू लाल जी 'पीपाड़' ही नहीं आसपास के पूरे क्षेत्र में सबसे प्रतिष्ठित व्यक्ति के रूप में जाने जाते थे, हर सामाजिक कार्यों में उन्हें बुलाया जाता था, क्योंकि उस समय में वे ही एकमात्र मैट्रिक की शिक्षा प्राप्त किए हुए थे और रेलवे में कार्यरत थे, आज भी जब हम वहां जाते हैं तो लोग उनको याद करते हैं और उनके पोते होने के कारण हमें बहुत अपनापन और सम्मान मिलता है। मेरे दादाजी ने ही मुझे जैन धर्म के सुसंस्कार दिए। मेरे पिता श्री संपतराज चौधरी CA जो जैन धर्म के मूर्धन्य कवि और एक प्रखर विद्वान थे और मेरे ससुर श्री पारसमल जी बरड़िया CA जो एक बहुत ही सम्माननीय समाज सेवक थे बचपन के घनिष्ठ दोस्त थे और दोनों ही पीपाड़ के लिए समर्पित थे। शिक्षा विकास समिति पीपाड़ के वे प्रमुख सूत्रधार थे। उनके अथक प्रयासों से ही पीपाड़ में उच्च विद्यालय एवं अस्पताल बनें। आज भी हमारा पुश्तैनी घर 'पीपाड़' में स्थित है। आज यहां जैन समाज, माहेश्वरी समाज के अधिकतर परिवार देश के विभिन्न भागों में रोजगार और कारोबार हेतु चले गए हैं, फिर भी सभी का अपने 'पीपाड़' से लगाव बना हुआ है। 'पीपाड़' एक धार्मिक क्षेत्र के रूप में भी जाना जाता है, यहां रामदेव जी का मंदिर, शांतिनाथ जी का मंदिर, पार्श्वनाथ तीर्थंकर का मंदिर और पास में 'कापरड़ा जैन तीर्थ' है। आर्थिक दृष्टिकोण से भी 'पीपाड़' अब समृद्ध हो रहा है, ऐसी अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'पीपाड़' में...

भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, 'एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि भारत माता की ही जय बोली जा सकती है INDIA माता की नहीं। 'भारत' बोलने में हमें गर्व की अनुभूति होती है, पर यह भी सत्य है कि विश्व के मानचित्र से इंडिया नाम विलुप्त तो नहीं होगा पर जिस तरह लोगों में जागृति आ रही है, आने वाले १०-१५ सालों में विश्व में हम संभवता भारत नाम से ही अधिक जाने जायेंगे।

डॉ. सुनील जी मूलत: पीपाड़ के निवासी हैं, आपका जन्म उनके ननिहाल 'भोपालगढ़' में संपन्न हुआ। आपकी सम्पूर्ण एमबीबीएस और सर्जरी की शिक्षा दिल्ली से हुई और उन्हें एमबीबीएस में सबसे उत्तम छात्र का स्वर्ण पदक मिलने का गौरव भी प्राप्त हुआ। उसके पश्चात ९ सालों तक आप इंग्लैंड और न्यू जीलैंड में प्लास्टिक सर्जरी में उच्च शिक्षा और कंसलटेंट प्लास्टिक सर्जन भी रहे। ३४ साल की उम्र में वे अपने समय में इंग्लैंड में सबसे छोटी उम्र के कंसलटेंट प्लास्टिक सर्जन बने। वे भारत के पहले यूरोपियन बोर्ड से प्लास्टिक सर्जन होने का गौरव भी रखते हैं। वे भारत के सबसे प्रखर प्लास्टिक सर्जन के तौर पे जाने जाते और वर्ष २००३ से पुनः भारत आकर अपनी मातृ भूमि का ऋण चुका रहे हैं। वर्तमान में आप दिल्ली के मैक्स सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल में प्लास्टिक सर्जरी डिपार्टमेंट में प्रिंसिपल डायरेक्टर व चीफ़ की भूमिका निभा रहे हैं। डॉ चौधरी के प्लास्टिक सर्जरी विभाग को टाइम्स ऑफ़ इंडिया के हेल्थ एंड लाइफस्टाइल सर्वे २०२४ में पूरे उत्तर भारत में प्रथम और देश भर में द्वितीय स्थान का अभूतपूर्व सम्मान प्राप्त हुआ है। यह उनके शल्य चिकत्सा की कुशलता और नेतृत्व क्षमता का जीवंत प्रमाण है। आपने माइक्रोसर्जरी, कैंसर सर्जरी और फेसिअल और ब्रेस्ट प्लास्टिक सर्जरी में शल्य चिकित्सा जगत मैं कई नई तकनीकों का आविष्कार किया है जो विश्व के प्रसिद्ध जर्नल्स में प्रकाशित हैं। आपने समाज के हर वर्ग को अपने कार्य से लाभान्वित किया है और इसकी सराहना में आपको कई अवार्ड्स मिल चुके हैं।

आपकी धर्मपत्नी संगीता जी भी 'पीपाड़' की ही निवासी हैं। संगीता जी बी.कॉम हैं और परिवार के लिए वित्त संबंधी सभी मामले संभालती हैं। वे बहुत मधुर गायिका और सुश्राविका हैं। आपका कहना है कि अपने जीवन में जो कुछ भी हासिल किया है उसमें मेरे माता-पिता के बाद मेरे धर्मपत्नी की विशेष भूमिका रही है और तो वे मेरी अविरल प्रेरणा हैं। आप और आपकी धर्मपत्नी मिलकर कई जैन भजन भी लिख चुके हैं।

आपका पुत्र आनंद आईआईटी से इंजीनियरिंग करने के बाद अब स्विट्जरलैंड में उच्च शिक्षा और आपकी पुत्री स्नेहा दिल्ली के लेडी हार्डिंग मेडिकल कॉलेज से डॉक्टरी की शिक्षा प्राप्त कर रही हैं। दोनों ही बहुत होनहार, गोल्ड मेडलिस्ट और अपनी संस्कृति और धर्म के अनुरागी हैं। मुझे विश्वास है कि भारत को विश्व गुरु का स्थान दिलाने में उनकी और हमारे राजस्थान के सभी युवाओं की भूमिका अग्रणी रहेगी। जय भारत!

- मेरा राजस्थान

समस्त राजस्थानी समाज की एकमात्र पत्रिका
'मेरा राजस्थान' के सभी पाठकों को विश्वनाथ भरतिया परिवार
की तरफ से हार्दिक शुभकामनाएं!
भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए अब और इंडिया नहीं

सीए. कमल जैन
चार्टर्ड अकाउंटेंट व समाजसेवी
पीपाड़ सिटी निवासी-गुजरात गांधीनगर प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८२४०१६६११

कमल जी अपनी जन्मभूमि 'पीपाड़ सिटी' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि पहले के मुकाबले आज के 'पीपाड़' का अंदाज ही अलग हो गया है, बिजली की व्यवस्था नहीं थी, लालटेन में हम पढ़ाई करते थे, पानी व अस्पताल की भी व्यवस्था अच्छी नहीं थी, विद्यालय भी सरकारी हुआ करते थे, पर आज हर तरह की व्यवस्था है, आज यहां कई विद्यालय और महाविद्यालय खुल गए हैं, दुकानों की संख्या बहुत अधिक बढ़ गई है। आसपास के गांव के लोग भी 'पीपाड़ सिटी' में आकर बस गए हैं, यहां का सामाजिक वातावरण भी उत्तम है, हर धर्म समाज के लोग बसे हुए हैं। जैन और माहेश्वरी समाज के अधिकतर परिवार रोजगार और व्यवसाय हेतु देश के विभिन्न भागों में जाकर बस गए हैं, इसके बावजूद सभी का लगाव अपनी जन्मभूमि से बना हुआ है। 'पीपाड़ सिटी' को धर्मनगरी कहा जाता है, यहां हमेशा ही जैन साधु संतों का आना-जाना लगा रहता है और उनको यहां गोचरी के लिए बहुत अधिक सुविधा होती है, क्योंकि यहां अधिकतर लोग सात्विक हैं। साधु संत किसी भी समाज के हों हर कोई उनकी सेवा में लग जाता है, यह आचार्य श्री हस्तीमल जी व आचार्य श्री हीराचंद जी म.सा. की जन्म भूमि है। देरावासी संघ के महासती प्रवर्तनी उपाधि प्राप्त विचक्षणश्री जी भी 'पीपाड़' की निवासी हैं, यहां हमेशा ही समय-समय पर जैन दीक्षाएं होती रहती हैं, यहां जैन समाज और सनातन समाज के कई मंदिर हैं, जैन समाज में तीर्थंकर पार्श्वनाथ जी का और तीर्थंकर शांति नाथ जी का मंदिर बना हुआ है। सनातन समाज का लक्ष्मी नारायण जी का मंदिर, बावड़ी में स्थित हनुमान जी का मंदिर व अन्य कई देवी-देवताओं के मंदिर हैं, यहां नाड़ी, तालाब, गौशाला सभी हैं, कला संस्कृति में भी यह क्षेत्र बहुत उत्तम है, हर तीज त्यौहार सभी मिलकर मनाते हैं। भौगोलिक दृष्टिकोण से भी यह क्षेत्र बहुत ही उत्तम है, ऐसी ही अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'पीपाड़ सिटी' की...

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि इसमें कोई दो राय नहीं होना चाहिए कि अपने देश का नाम सिर्फ और सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए। 'भारत' हमारे देश का प्राचीन और ऐतिहासिक नाम है, विश्व में किसी भी देश के दो नाम नहीं, तो हमारे देश के कई नाम क्यों? एक ही नाम रहना चाहिए 'भारत'।

कमल जी का जन्म और उच्च माध्यमिक शिक्षा 'पीपाड़' में ही संपन्न हुई है। स्नातक की शिक्षा आपने पाली मारवाड़ से ग्रहण की है, तत्पश्चात आपका मुंबई आना हुआ और आर्टिकलशिप मुंबई से ग्रहण की, कल्पतरु ग्रुप में कई वर्षों से कार्यरत हैं। ३५ सालों तक चीफ फाइनेंशियल ऑफिसर रूप में कार्यरत रहे, कई कंपनियों में डायरेक्टर भी रहे हैं। जैन प्रोफेशनल फोरम जैन सोशल ग्रुप से जुड़े है, यथासंभव सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। जैन सोशल ग्रुप, रोटरी क्लब गांधीनगर, गांधीनगर कल्चर फोरम व कला गुजरी संस्थाओं से जुड़े हुए हैं, स्वयं की एक संस्था 'कलरव' संचालित कर रहे हैं। जय भारत!

- मेरा राजस्थान

अमृत चंपालाल मुथा
अध्यक्ष जैन श्रावक संघ अमरावती
पीपाड़ सिटी निवासी-अमरावती प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९४२२१५७९७४

अमृत जी अपनी जन्मभूमि 'पीपाड़ सिटी' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि हमारे बचपन के 'पीपाड़' और आज के 'पीपाड़' में बहुत ही अंतर आ गया है, पहले यहां लोगों के संयुक्त परिवार थे, आपसी सामाजिक व प्रेम बहुत ही अच्छा था, लोगों में अपनापन और एक दूसरे से जुड़ाव था, पर आज यहां के अधिकतर परिवार के लोग रोजगार और व्यवसाय के लिए देश के विभिन्न भागों में जाकर बस गए हैं, इसीलिए लोगों का अब उतना जुड़ाव नहीं रह गया है। विकास की बात की जाए तो हमारे समय में २ ही स्कूल हुआ करती थी मैट्रिक तक की, पर आज यहां अंग्रेजी माध्यम के विद्यालय, कॉलेज और कन्या विद्यालय भी खुल गए हैं। व्यापारिक स्थिति आज के समय में यहां की बहुत ही उत्तम है, व्यापार के साथ-साथ इंडस्ट्रीज भी है, जिनमें लाइम इंडस्ट्रीज, सीमेंट फैक्ट्रियां अन्य उद्योग भी लगे हुए हैं, यह क्षेत्र कपड़ा उद्योग के लिए जाना जाता है, यहां कपड़े से जुड़े छोटे-छोटे उद्योग स्थापित हैं। यहां खेती बाड़ी भी अच्छी होती है, विशेष कर जीरा, गेंहू, मुंग जैसी फसलें अधिक होती हैं, यहां मंडी स्थापित है। यहां के पर्यटन स्थलों के बात की जाए तो यहां से चार-पांच किलोमीटर दूरी पर स्थित है सेठों की रिया, जहां की देवी विशेष मान्यता प्राप्त रखती है जो लोगों की आस्था का केंद्र है, इसके अलावा 'पीपाड़ सिटी' में शांतिनाथ जी का मंदिर, पार्श्वनाथ जी का मंदिर, उपाश्रय, स्थानक व दादाबाड़ी बनी हुई है। यहां का तालाब बहुत ही उत्तम है, इसके आसपास कई बगीची बनी हुई है, सनातन धर्म के भी कई मंदिर हैं। यहां का 'गणगौर मेला' बहुत ही प्रसिद्ध हुआ करता था, पर अब इसमें कमी आ गई है। यहां ७ गौशालाएं हैं। तहसील होने से यहां सभी सरकारी कार्यालय मौजूद हैं। आवागमन के साधन उत्तम हैं। 'पीपाड़' रेलवे स्टेशन है, सड़क व्यवस्था अच्छी है, ऐसी अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'पीपाड़ सिटी' में...

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है की निश्चित रूप से अपने देश का एक ही नाम, एक ही पहचान रहनी चाहिए 'भारत', इतिहास भी 'भारत' नाम का साक्षी है।

अमृत जी का जन्म व प्रारंभिक शिक्षा 'पीपाड़ सिटी' में ही संपन्न हुई है, तत्पश्चात उच्च शिक्षा 'अमरावती' से ग्रहण की हैं, यहां आप कपड़ा व किराणा व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। जैन श्रावक संघ अमरावती के अध्यक्ष हैं, जैन छात्रावास के कार्यकारिणी सदस्य व जेसिस से भी जुड़े हुए हैं। जय भारत!

- मेरा राजस्थान

विजयराज कटारिया

व्यवसायी व समाजसेवी

पीपाड़ सिटी निवासी-पाली प्रवासी

भ्रमणध्वनि: ९४१४३२५७९४

विजयराज जी अपनी जन्मभूमि 'पीपाड़ सिटी' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि मेरा पूरा बचपन 'पीपाड़' में ही बीता, तब के 'पीपाड़' और आज के 'पीपाड़' में बहुत ही अंतर आ गया है, पहले स्कूलों की संख्या कम थी, शिक्षा प्रणाली बहुत ही अच्छी थी, वहां के शिक्षक भी तन -मन से विद्यार्थियों को शिक्षित करने में लगे हुए थे, उनका एक ही उद्देश्य था कि हमारे विद्यालय के विद्यार्थी अच्छे अंक प्राप्त करें, आज 'पीपाड़' में कई विद्यालय और महाविद्यालय स्थापित हो गए हैं, जिनमें कई निजी संस्थान द्वारा संचालित हैं। एक समय 'पीपाड़ शहर' से हर वर्ष १० चार्टर्ड अकाउंटेंट बन के निकलते थे जो 'पीपाड़' की उपलब्धि के रूप में जाना जाता था। अस्पताल और आवागमन के साधन अच्छे हो गए हैं, पहले जोधपुर जाने के लिए एक या दो बस की व्यवस्था थी, पर आज यहां हर १५ मिनट में जोधपुर जाने के लिए बस व्यवस्था उपलब्ध है, जोधपुर यहां से मात्र लगभग ६० किलोमीटर की दूरी पर स्थित है, संपर्क माध्यम बहुत अधिक बढ़ गया है, यहां की आर्थिक स्थिति भी पहले से अच्छी है, यहां पहले लाल मिर्च का उत्पादन बहुत बड़े पैमाने पर होता था, पर अब इसमें कमी आ गई है। 'पीपाड़' में लाइम स्टोन का बहुत बड़ा काम है, यहां इंडस्ट्रीज भी है। पहले यहां हस्त उद्योग का भी काम बड़े पैमाने पर होता था, जिसमें 'खेसला' बनाया जाता था, पर आज यह उद्योग बंद हो गया है। प्राकृतिक रूप से यह क्षेत्र बहुत ही सुंदर है, यहां आज भी कई प्राचीन मंदिर और भवन स्थित हैं, जिनमें जैन समाज का मंदिर, सनातन धर्म का लक्ष्मी नारायण जी का मंदिर विशेष रूप से उल्लेखनीय है, यहां प्राचीन तालाब और बावड़ी भी है, यहां आस-पास भी कई दर्शनीय स्थल हैं। २५ किलोमीटर दूरी पर स्थित रणसी गांव, जहां भूतों की बावड़ी और महल हैं, कहते हैं कि यह भूतों द्वारा एक ही रात में बनाया गया था। 'पीपाड़' क्षेत्र कई महानुभावों की जन्म भूमि और कर्मभूमि रही है जिनमें प्रमुख है पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत जी, 'पीपाड़ 'शहर उनकी कर्मभूमि के रूप में भी जाना जाता है और भी कई विशेषताएं हैं हमारे 'पीपाड़' शहर में....

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम केवल 'भारत' ही रहना चाहिए, प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव जी के पुत्र भरत चक्रवर्ती के नाम से इस क्षेत्र का नाम 'भारत' पड़ा, अतः 'भारत' हमारी प्राचीन संस्कृति और एतिहासिकता की पहचान है।

विजयराज जी मूलतः 'पीपाड़' के निवासी हैं, आपका जन्म और शिक्षा 'पीपाड़' में ही संपन्न हुई है, १९७१ से आप 'पाली' में बसे हैं और कपड़ा उद्योग से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं, पूर्व में श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ पाली के १८ सालों तक मंत्री रहे हैं, अन्य सामाजिक कार्यों में भी यथासंभव सक्रिय रहते हैं। जय भारत!

-मेरा राजस्थान

अमृत मालानी

सामाजिक कार्यकर्ता

पीपाड़ सिटी निवासी-बड़ौदा प्रवासी

भ्रमणध्वनि: ९२६५२३७८५०

अमृत जी अपनी जन्मभूमि 'पीपाड़ सिटी' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि हमारे बचपन का 'पीपाड़' और आज के 'पीपाड़ सिटी' में बहुत बड़ा बदलाव आया है, इतना बदलाव आया है कि यदि हम 'पीपाड़' के ना हों तो हम पहचान ही ना पाएंगे कि यह वही 'पीपाड़' है। सामाजिक क्षेत्र में भी यहां बहुत परिवर्तन हुआ है, यहां का सामाजिक वातावरण सौहार्दपूर्ण बना रहता है, लोगों का एक दूसरे से अच्छा संपर्क है, यहां हर धर्म समाज के लोग बसे हैं, माली समाज की संख्या सबसे अधिक है हर समाज के अपने-अपने सामाजिक भवन बने हुए हैं। आज यहां का माली समाज बहुत ही आगे निकल चुका है, उनकी आर्थिक स्थिति बहुत सुदृढ़ हुई है, व्यापारिक व राजनीतिक क्षेत्र में भी यहां के लोग आगे हैं। 'पीपाड़' में विकास हुआ है, लोगों के रहन-सहन का स्तर बढ़ गया है, सुख सुविधाएं बहुत बढ़ गई है। व्यापार की स्थिति यहां उत्तम है, हर तरह का व्यापार होने लगा है, छोटी-छोटी मैन्युफैक्चरिंग इंडस्टरीज भी लगी है, कृषि में यह क्षेत्र उत्तम है, अनाज मंडी, सब्जी मंडी बनी हुई है। धार्मिकता की बात की जाए तो यहां लक्ष्मीनाथ जी का मंदिर, गोवर्धननाथ जी का मंदिर उल्लेखनीय है, कुछ दूरी पर स्थित है मोगरिया हनुमान जी का मंदिर, जैन समाज के भी मंदिर और भवन बने हुए हैं। शिक्षा के क्षेत्र में यह हमेशा से ही आगे रहा है, यहां सेठ रामरख मालानी द्वारा सर्वप्रथम उच्च माध्यमिक विद्यालय स्थापित किया गया था, आवागमन की सुविधा उत्तम हो गई है, ऐसी अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'पीपाड़ सिटी' में...

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि बिल्कुल अपने देश का एक ही नाम रहना चाहिए 'भारत', भारत ही हमारी सांस्कृतिक पहचान है, लोगों में अपने धर्म और समाज के प्रति जागृति निर्माण हो रही है और भारत को 'भारत' ही कहने लगे हैं।

अमृत जी मूलत: 'पीपाड़ सिटी' के निवासी हैं। आपका जन्म और प्रारंभिक शिक्षा यहीं संपन्न हुई है, तत्पश्चात उच्चतर माध्यमिक शिक्षा ब्यावर में और स्नातक शिक्षा जोधपुर विश्वविद्यालय से ग्रहण की। कॉलेज की शिक्षा ग्रहण करने के दौरान ही आपको पोरबंदर में प्रतिष्ठित कंपनी से नौकरी का ऑफर आया और आप चुने गए, इस कंपनी में लगातार ४५ सालों तक आप जूनियर असिस्टेंट से शुरुआत कर अकाउंटस मैनेजर और फिर सलाहकार की पोस्ट पर कार्य किया। वर्ष २००९ में ६० साल की उम्र में सेवानिवृत्ति के बाद भी कंपनी की तरफ से आपको सलाहकार के रूप में सक्रिय रखा गया। ७ सालों तक इस पद पर कार्य किया। वर्ष २०१६ से बड़ौदा में अपने पुत्र के साथ बसे हैं और पूरी तरह से समाज कार्य व अन्य क्षेत्रों में अग्रसर हैं। जय भारत!

- मेरा राजस्थान

सम्पतराज मुथा

अध्यक्ष श्री गोपाल गौशाला चिरड़ाणी टांका
पीपाड़ सिटी निवासी
भ्रमणध्वनि: ९४१४१९६२०७

संपतराज जी अपनी जन्मभूमि और कर्मभूमि 'पीपाड़ सिटी' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि पहले यह एक छोटा सा कस्बा था, यहां की जनसंख्या भी बहुत कम थी, जब लाइमस्टोन निकालना प्रारंभ हुआ, तब से यहां के विकास को बहुत गति प्राप्त हुई है, आज 'पीपाड़' में लगभग १० से १५ लाइन स्टोन की फैक्ट्रियां हैं, जिससे यहां की आर्थिक स्थिति को बढ़ावा मिला, इसके कारण ही यहां की भौगोलिक क्षेत्रफल व जनसंख्या भी बढ़ी, पहले यहां सुविधाओं की कमी थी, आज यहां हर तरह की सुविधाएं आसानी से उपलब्ध हो जाती हैं, पहले यहां एक या दो ही विद्यालय हुआ करते थे, आज कई विद्यालय और महाविद्यालय हैं। 'पीपाड़' एक ऐसा शहर है जहां एक ही परिसर में लड़कियों के लिए प्राथमिक से लेकर स्नातक की शिक्षा की व्यवस्था उपलब्ध है, कन्या विद्यालय, महाविद्यालय बने हुए हैं, अस्पताल की भी व्यवस्था बहुत ही उत्तम है, यहां आज ५-६ बड़े-बड़े होटल बन गए हैं, धर्मशाला खुल गई है, बाहर से आने वाले लोगों के लिए रहने और ठहरने की उत्तम व्यवस्था है। आवागमन की व्यवस्था अच्छी है। यहां का सामाजिक वातावरण बहुत ही उत्तम है, हर धर्म समाज के लोग आपसी मेल-मिलाप के साथ सौहार्दपूर्ण वातावरण में रहते हैं, यहां का प्राकृतिक वातावरण भी बहुत शुद्ध, स्वच्छ व प्रदूषणमुक्त है, आर्थिक दृष्टिकोण से भी यह क्षेत्र उत्तम है, यहां हर तरह का व्यापार होने लगा है, पहले यहां सौंफ और लाल मिर्च की खेती बड़े पैमाने पर होती थी, आज यहां का जलस्तर नीचे होने के कारण यहां की खेती बाड़ी पर असर पड़ा है, जिनके पास ट्यूबल हैं या बरसात के पानी पर ही यहां की खेती निर्भर है, यहां अनाज मंडी और सब्जी मंडी है, यहां की सब्जी मंडी जोधपुर के बाद सबसे बड़ी सब्जी मंडी है, 'पीपाड़' धार्मिक क्षेत्र के रूप में जाना जाता है, यहां दो जैन मंदिर, कई स्थानक, सनातन मंदिर, लक्ष्मीनाथ जी का मंदिर, पिपलाद माताजी का मंदिर आदि अन्य कई देवी-देवताओं के मंदिर हैं, यहां से कुछ किलोमीटर दूरी पर 'कापरड़ा जैन तीर्थ' है, जो एक बहुत ही प्रसिद्ध धर्म स्थान है, यहां 'भारत' से हर क्षेत्र से लोग आते हैं, इसीलिए धर्मशाला की भी व्यवस्था है, यहां आज भी प्राचीन बावड़ी और तालाब है जो यहां की सुंदरता को बढ़ाते हैं और भी कई विशेषताएं हैं हमारे 'पीपाड़ सिटी' में...

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का नाम केवल 'भारत' ही रहना चाहिए, 'भारत' हमारी वास्तविक पहचान है।

संपतराज जी का जन्म व सम्पूर्ण शिक्षा 'पीपाड़ सिटी' में ही संपन्न हुई है, यहां आप व्यवसाय से जुड़े रहे, वर्तमान में सेवानिवृत्त हैं, आपके पुत्र व्यवसाय को संभाल रहे हैं, आप सामाजिक कार्यों में सक्रिय रहते हैं। श्री गोपाल गौशाला सेवा समिति चिरड़ाणी टांका के अध्यक्ष के रुप में सक्रिय हैं। जय भारत!

- मेरा राजस्थान

शांतिलाल मोहनोत

वैज्ञानिक, आध्यात्मिक और समाजसेवी
पीपाड़ निवासी-अमेरिका प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९३७२०८५६७१

शांतिलाल जी अपनी जन्मभूमि 'पीपाड़ सिटी' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि पहले और आज के 'पीपाड़' में बहुत ही अंतर आया है, समय के अनुसार 'पीपाड़' पूरी तरह से बदल गया है, आज भी हमारे बचपन की यादें 'पीपाड़' से जुड़ी हुई हैं, पहले यहां की जनसंख्या कम थी, लोगों में नजदीकियां और अपनापन ज्यादा था पर आज इसमें कुछ कमी आई है, आज 'पीपाड़' एक भीड़-भाड़ वाला इलाका बन गया है, इसके बावजूद आज भी लोगों का एक दूसरे के प्रति सामाजिक व्यवहार बहुत ही उत्तम है। विकास की बात की जाए तो 'पीपाड़' में एक या दो विद्यालय हुआ करते थे, आज कई विद्यालय और महाविद्यालय खुल गये हैं, अस्पताल की भी व्यवस्था अच्छी हो गई है, आवागमन के साधन बहुत अच्छे हो गए हैं। 'जोधपुर से पीपाड़' के लिए हमेशा ही बस व्यवस्था उपलब्ध रहती है, सड़क भी बहुत अच्छी बन गई है, प्राकृतिक वातावरण बहुत ही उत्तम है। प्राचीन तालाब व बावड़ी बनी हुई है, जिसकी अपनी अलग मान्यताएं हैं। तालाब पर सुभाष घाट बहुत ही सुंदर बना हुआ है, लोग वहां सैर के लिए जाते हैं। आर्थिक दृष्टिकोण से भी यह क्षेत्र बहुत ही उत्तम है, यहां हर तरह का व्यापार होने लगा है, आसपास कुछ इंडस्ट्रीज भी लगी हुई है, खेती भी अच्छी होती है, इसीलिए यहां कृषि मंडी और अनाज मंडी बनी हुई है। खानपान की चीजों में यहां के घेवर और खजुरिया मिठाई बहुत प्रसिद्ध है और भी कई विशेषताएं हैं हमारे 'पीपाड़ शहर' में

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का नाम सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए, 'भारत' हमारी प्राचीनता और ऐतिहासिकता का प्रतीक है, अतः हमारी वास्तविक पहचान 'भारत' नाम से ही रहनी चाहिए, भारत की ऐतिहासिक पहचान और विशेषता पूर्व के दर्शनों व अध्यात्म की जननी के रूप में भी है. उसे बनाये रखने के लिए शिक्षा में स्वदेशी गौरव और नैतिकता पर भी वजन होना चाहिए।

शांतिलाल जी का जन्म और प्रारंभिक शिक्षा 'पीपाड़' में संपन्न हुई है, उच्च शिक्षा आपने 'जोधपुर विद्यालय' से की है, उस समय आप टॉपर रहे थे, तत्पश्चात आपने इंजीनियरिंग के क्षेत्र को चुना, आईआईटी मुंबई से केमिकल इंजीनियरिंग करने के बाद पीएचडी करने लिए अमेरिका गए और वहीं ५० वर्ष से रह रहे हैं, अमेरिका में रहते हुए भी भारतीय संस्कृति के साथ अहिंसक नैतिक और आध्यात्मिक जीवन को प्रोत्साहन देते हैं, जिसके अध्ययन और अध्यापन में सक्रिय हैं। जय भारत!

- मेरा राजस्थान

सीए. मनीष बस्तीमल बोहरा

चार्टर्ड अकाउंटेंट व समाजसेवी
पीपाड़ सिटी निवासी-मुंबई प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८२१०६८६४२

मनीष जी अपनी पैतृक भूमि 'पीपाड़ सिटी' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि 'पीपाड़' हमारे लिए चंदन की माटी के समान है, जब भी जाना होता है मन प्रसन्नचित हो जाता है। मुंबई जैसे भीड़भाड़ और भाग दौड़ भरे जीवन में सुकून के कुछ पल 'पीपाड़' में ही प्राप्त होते हैं, जहां जाकर पुनः आने की इच्छा नहीं होती, यहां का सामाजिक माहौल बहुत ही उत्तम है, चाहे वह किसी भी धर्म व संप्रदाय का हो, मिलनसार और सहयोग के लिए तत्पर रहने वाला माहोल है, यहां का धार्मिक वातावरण भी बहुत ही उत्तम है, किसी भी समाज के गुरु भगवंतों का चातुर्मास हो, सभी समाज के लोग सम्मिलित होते हैं, यहां के लोग बुद्धिजीवी कहे जाते हैं, इसीलिए आज यहां के निवासी देश के विभिन्न भागों में बसे हुए हैं। भौगोलिक दृष्टिकोण से भी क्षेत्र बहुत ही उत्तम है, यहां की शुद्ध हवा, पानी, हरियाली युक्त वातावरण बहुत ही रमणीय है, यहां गौशाला व तालाब भी है, जो यहां की शोभा को बढ़ाते हैं। यहां से कुछ किलोमीटर दूरी बहुत ही प्रसिद्ध 'कापरडा जैन तीर्थ' है। 'पीपाड़' में कई जैन मंदिर और सनातनी समाज के मंदिर बने हैं। व्यापारिक दृष्टिकोण से भी यह क्षेत्र उत्तम है। आज हर तरह का व्यापार यहां होने लगा है। आसपास के क्षेत्र में इंडस्ट्रीज भी लगी हुई है। कृषि क्षेत्र भी अच्छा है, इसीलिए यहां अनाज मंडी या सब्जी मंडी स्थापित है। सरकारी तहसील कार्यालय यहीं पर स्थित है, ऐसी अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'पीपाड़ सिटी' में...

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का एक ही नाम, एक ही पहचान रहनी चाहिए 'भारत', चाहे भाषा कोई भी हो।

मनीष जी का पैतृक निवास स्थान 'पीपाड़ सिटी' है। आपका जन्म महाराष्ट्र के 'अकोला' में और शिक्षा 'मुंबई' में संपन्न हुई है। यहां आप चार्टर्ड अकाउंटेंट के कार्य में संलग्न हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। जीतो चार्टर्ड अकाउंटेंट एसोसिएशन जैसी कई संस्थानों से जुड़े हैं। जय भारत!

- मेरा राजस्थान

श्री गोपाल राठी

व्यवसायी व समाजसेवी
बाप (फलोदी) निवासी-कोलकाता प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९९०३६७८७७१

श्री गोपाल जी 'नव वर्ष' की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि 'नव वर्ष' २०२५ सभी के लिए सुख समृद्धि से भरा हो, व्यापारी वर्ग के लिए २०२४ उतना अच्छा नहीं रहा, पर मेरा उनके लिए यह संदेश है कि आने वाले समय में अपनी सूझबूझ और लगन से अपने व्यापार को बढायें रखें। युवा पीढ़ी का अपने धर्म व समाज से जुड़ना, यह उनकी अपनी आस्था का विषय है। युवान में यदि आस्था होगी तो वह अवश्य ही अपने धर्म और समाज से जुड़े रहेंगे, उनके लिए मेरा यही संदेश है कि वह अपने कर्तव्य का पूरी निष्ठा से पालन करें और अनुशासन में जीवन व्यतीत करें, जिससे वे अपने जीवन को एक उचित मुकाम दे सकते हैं।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ आपका कहना है कि 'भारत' हमारा प्राचीन और मूल नाम है, 'भारत' ही हमारी पहचान है, हमें अपनी पहचान को बनाए रखना चाहीए, इंडिया अंग्रेजों द्वारा थोपा गया नाम है, अंग्रेज चले गए पर INDIA नहीं गया, आज की पीढ़ी अंग्रेजी को अधिक महत्व देती है, हमारे पूर्वजों ने भी बिना अंग्रेजी के मुकाम हासिल किया है पर आज विश्वस्तर पर व्यापारिक संबंध बढ़ाने से अंग्रेजी को अधिक महत्व मिल रहा है, हमें अपनी संस्कृति और भाषा को भी नहीं भूलना चाहिए।

श्री गोपाल जी मूलतः राजस्थान के फलोदी जिले में स्थित 'बाप' के निवासी हैं, आपका जन्म शिक्षा यहीं संपन्न हुई है। १९७६ से आप कोलकाता में बसे हैं और टेक्सटाइल व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। माहेश्वरी सभा व अन्य सामाजिक संस्थाओं में यथासंभव सहभागी रहते हैं। जय भारत!

- मेरा राजस्थान

सुभाष भंडारी

व्यवसायी व समाजसेवी
पीपाड़ सिटी निवासी-अमरावती प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८२३१७५९००

सुभाष जी अपनी जन्मभूमि 'पीपाड़' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि पहले और आज के 'पीपाड़' में बहुत अंतर आ गया है, हमारा बचपन यहीं बीता है, यहां तालाब में तैरना और उस समय मालानी के बगीचे, काबरा के बगीचे हुआ करते थे, जिसमें हम नहाने जाते थे, सुविधाएं कम थी, दिक्कतें थीं, पर एक सुकून था, लोगों में बहुत अपनापन था, पहले 'पीपाड़' एक छोटे क्षेत्रफल में बसा हुआ था पर आज का 'पीपाड़' २ किलोमीटर के दायरे में बढ़ गया है, विकास तो बहुत हुआ है, आज बड़े-बड़े स्कूल, कॉलेज, अस्पताल खुल गए हैं। व्यावसायिक दृष्टिकोण से भी यह क्षेत्र बहुत ही उन्नत हुआ है, हर तरह का कारोबार होने लगा है, इंडस्ट्रीज भी लग गई हैं, खेती-बाड़ी भी अच्छी होती है, पहले के 'पीपाड़' में पानी की दुविधा थी, बिजली नहीं थी, सड़क व्यवस्था अच्छी नहीं थी, पर आज सारी सुविधाएं हैं। बिजली की व्यवस्था है, नल के पानी की सुविधा है, आवागमन साधन अच्छे हैं। 'पीपाड़' को धर्म नगरी भी कहा जाता है, यह आचार्य श्री हस्तीमल जी और आचार्य श्री **शेष पृष्ठ ४७ पर...**

पृष्ठ ४६ से... हीराचंद जी तथा महासाध्वी विचक्षणश्री जी की जन्म भूमि है। यहां हर संप्रदाय के लोग बसे हैं, हमेशा ही गुरु भगवंतों का आगमन रहता है, हर वर्ष किसी न किसी आचार्यश्री का चातुर्मास रहता है, यहां दादाबाड़ी, स्थानक बने हुए हैं। पार्श्वनाथ जी का मंदिर व शांतिनाथ जी का मंदिर बना हुआ है, सनातन समाज में लक्ष्मीनाथ जी का मंदिर विशेष उल्लेखनीय है। यहां का सामाजिक माहौल बहुत ही उत्तम है, माली, जाट, जैन, माहेश्वरी, ब्राह्मण सभी भाई-भाई की तरह निवास करते हैं, ऐसी अनेक विशेषताएं हमारे 'पीपाड़' की...

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का एक ही नाम, एक ही पहचान रहनी चाहिए 'भारत'।

सुभाष जी मूलतः 'पीपाड़' के निवासी हैं, आपका जन्म और प्रारंभिक शिक्षा 'पीपाड़' में संपन्न हुई है, तत्पश्चात की शिक्षा आपने अमरावती से ग्रहण की है, यहां आप व्यापार से जुड़े रहे, वर्तमान में आपके पुत्र व्यापार संभाल रहे हैं, आप स्थानकवासी जैन संघ से जुड़े हुए हैं। जय भारत! **- मेरा राजस्थान**

शांतिलाल बोहरा

समाजसेवी
पीपाड़ सिटी निवासी-मुंबई प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८३३०९१९१९

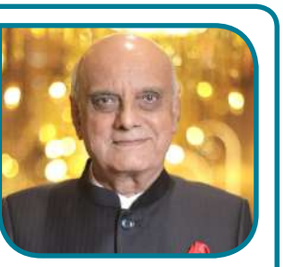

शांतिलाल जी अपनी जन्मभूमि 'पीपाड़ सिटी' की विशेषताएं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि भले ही हम मुंबई में हैं पर आज भी हमारा मन 'पीपाड़' से जुड़ा हुआ है, जब भी गांव जाना होता है तो सभी से मिलना-जुलना होता है, लोगों में आज भी अपनत्व व प्रेम भावना दिखाई देती है।

विकास की बात की जाए तो हमारे समय में वहां बिजली, पानी की असुविधा थी, आज हर तरह की व्यवस्था व सुविधाएं है, रोडवेज बस आवागमन के लिए बहुत ही उत्तम साधन है, यहां से हरिद्वार व भारत के अन्य क्षेत्रों के लिए भी सीधी बस व्यवस्था हो गई है, कुछ दूरी पर 'कापरड़ा जैन तीर्थ' है जो राष्ट्रीय राजमार्ग पर स्थित है, यहां का सामाजिक वातावरण बहुत ही उत्तम है, हर धर्म व समाज के लोग बसे हुए हैं, यहां की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि शिक्षा के क्षेत्र में 'पीपाड़' हमेशा से ही अग्रणी रहा है। 'भारत' में सबसे ज्यादा चार्टर्ड अकाउंटेंट देने वाले गांव 'पीपाड़' का नाम प्रमुख स्थान पर आता है, कुछ वर्षों में यहां कई विद्यालय और महाविद्यालय खुल गए हैं, यहां की आर्थिक स्थिति बहुत ही उत्तम है, यहां हर तरह का व्यापार होता है और लाइमस्टोन की लगभग २०-२५ इंडस्ट्रीज है, यहां लाल मिर्च गृह उद्योग का कार्य बड़े पैमाने पर होता है, यहां की लाल मिर्च पूरे भारत में प्रसिद्ध है। यहां का प्राकृतिक वातावरण बहुत ही उत्तम है। खेजड़ला का किला यहां से ५ किलोमीटर दूरी पर स्थित है, यहां मंदिर हैं जिनमें दो जैन समाज के मंदिर, इसके अलावा लक्ष्मी नारायण जी का मंदिर, तिरुपति बालाजी का मंदिर व अन्य कई देवी-देवताओं के मंदिर हैं, यहां ठाकर साहब जी पुराना ठिकाना है, जिसे 'कोट' के नाम से जाना जाता है जो वर्तमान में श्री ओसवाल लोड़े साजन संघ संस्थान के पास है, यहां के खानपान में मावा, पेठा, खजुरिया मिठाई बहुत प्रसिद्ध है जो भारत में अन्यत्र कहीं नहीं पाई जाती और भी कई विशेषताएं हैं हमारे 'पीपाड़ शहर' में....

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रुप से अपने देश का नाम केवल 'भारत' ही रहना चाहिए, यह हमारे देश का प्राचीन और ऐतिहासिक नाम है।

शांतिलाल जी मूलतः 'पीपाड़ सिटी' के निवासी हैं, आपका जन्म व शिक्षा 'पीपाड़' एवं अहमदाबाद में संपन्न हुई है। पिछले ५० सालों से आप 'मुंबई' में बसे हैं और 'कल्पतरु ग्रुप' में कार्यरत रहे, वर्तमान में सेवानिवृत्त हैं और पूरी तरह से धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों में सक्रिय रहते हैं। कल्पतरु टेंपल ट्रस्ट द्वारा निर्मित मुनिसुव्रत स्वामी मंदिर, घाटकोपर पश्चिम मुंबई के कार्यों में सक्रिय रूप में भाग लेते हैं। आपके पुत्र सुमित अखिल भारतीय इंश्योरेंस ब्रोकर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष पद पर पिछले चार वर्षों से सक्रिय हैं। जय भारत! **- मेरा राजस्थान**

प्रकृति की सुंदरता को सजाए हुए जोधपुर का एक कस्बा
'पीपाड़ शहर' के इतिहास प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनायें

GLOBESECURE
TRUST, WE EARN IT

GlobeSecure Insurance Brokers Private Limited

Sumit Bohra
CEO
Mob. : 9867554477

A-302, Peninsula Business Park, Senapati Bapat Marg,
Lower Parel (W), Mumbai - 400 013
B: +91(22) 4910 4910 / D: +91 (22) 4910 4977
sumit@globesecure.co.in | www.globesecure.co.in

डॉ. वागिश कटारिया

बाल रोग विशेषज्ञ व समाजसेवी
पीपाड़ सिटी निवासी-नागपुर प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८२२२२७५७५

डॉ. वागिश जी अपनी पैतृक भूमि 'पीपाड़ सिटी' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि बचपन से ही हम गर्मियों की छुट्टी 'पीपाड़' में ही बिताते थे, आज भले ही हम 'नागपुर' में बसे हैं पर 'पीपाड़' से वही लगाव और अपनापन बना हुआ है। 'पीपाड़' के लोगों में आज भी वही अपनापन है। 'पीपाड़' धीरे-धीरे एक विकसित शहर बनते जा रहा है, आधुनिक शिक्षा के साथ हर तरह के सुविधा आसानी से उपलब्ध हो जाती है, यहां के खान-पान की चीजों में भी बहुत विभिन्नता है और हर एक की अपनी खासियत है, विशेषकर यहां की मिर्च और प्यारेलाल जी की कचोरियां, खजुरिया मिठाई विशेष प्रसिद्ध है, जिसका आनंद स्वाद यहां आने वाला हर कोई अवश्य उठाता है, यहां का भौगोलिक वातावरण भी बहुत ही उत्तम है, हर धर्म समाज के लोग यहां बसे हुए हैं। आर्थिक दृष्टिकोण से भी यह क्षेत्र बहुत ही उत्तम है, यहां के निवासी 'भारत' में कहीं भी बसे हों, सभी का लगाव अपने 'पीपाड़' से बना हुआ है, यथासंभव आर्थिक रुप से 'पीपाड़' के विकास के लिए हमेशा ही योगदान देते रहते हैं, चाहे वह सामाजिक क्षेत्र हो या धार्मिक, इसमें सबसे प्रमुख नाम आता है यहां के भामाशाह उद्योगपति मोफतराज मुणोत जी का, जिनके द्वारा किए जाने वाले सामाजिक कार्यों में मेरे चाचा अमृतलाल जी का भी विशेष सहयोग रहता था। मेरे पिताजी चंदू लाल जी ने भी यहां कई सामाजिक कार्यों में अपनी भूमिका निभाई थी। पीपाड़ के विकास में भी कटारिया परिवार का विशेष योगदान रहा है अस्पताल, स्कूल, कन्या महाविद्यालय, गौशाला इत्यादि के निर्माण में विशेष सहयोग रहा है। यहां की शिक्षा प्रणाली हमेशा से ही उत्तम रही है, पहले के मुकाबले आज यहां कई विद्यालय और महाविद्यालय खुल गए हैं। पीपाड़ शहर पूज्य गुरुदेव जैनाचार्य श्री हस्तीमल जी महाराज साहब व आचार्य श्री हीराचंद जी महाराज साहब की जन्मस्थली है। आवागमन की भी व्यवस्था बहुत अच्छी हो गई, है प्राकृतिक रूप से भी यह क्षेत्र बहुत ही उत्तम है, यहां कई सनातन मंदिर व जैन मंदिर हैं। आसपास भी कई जैन तीर्थ हैं, यहां से कुछ किलोमीटर दूरी पर स्थित है 'सेठों की रिया' जहां पर हमारी कुलदेवी का स्थान है। 'पीपाड़' का तालाब बहुत ही सुंदर है, जहां हम चक्कर लगाने अवश्य जाते थे, ऐसी अनेक की विशेषताएं हैं हमारे 'पीपाड़ सिटी' में...

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का नाम तो केवल 'भारत' ही रहना चाहिए, किसी और का दिया हुआ नाम हम क्यों अपनाएं, हमारी पहचान प्राचीन काल से ही 'भारत' नाम से थी और 'भारत' नाम से ही रहनी चाहिए।

डॉ. वागिश जी 'पीपाड़' के निवासी हैं। आपका जन्म व शिक्षा 'नागपुर' महाराष्ट्र में संपन्न हुयी है, यहां बाल रोग विशेषज्ञ चिकित्सक के रूप में कार्यरत हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। नागपुर जैन समाज में ट्रस्टी हैं, 'जीतो' और 'रोटरी' क्लब से जुड़े हुए हैं, आपकी धर्मपत्नी रितु नागपुर रोटरी क्लब के सचिव पद पर कार्यरत हैं, आप भी कई सामाजिक संस्थाओं से जुड़े हुए हैं। जय भारत! **- मेरा राजस्थान**

प्रणीत बसंतराज जैन

चार्टर्ड अकाउंटेंट व समाजसेवी
पीपाड़ निवासी-मुंबई प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९९२०९८६४१४

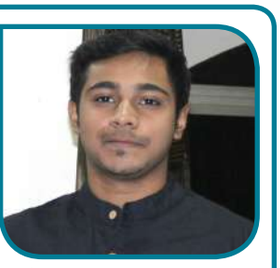

प्रणित जी अपनी पैतृक भूमि 'पीपाड़' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि मेरे बचपन के 'पीपाड़' और आज के 'पीपाड़' में ज्यादा अंतर तो नहीं दिखाई देता, आज भी 'पीपाड़' एक छोटा सा शहर है, वहां का शांत वातावरण हमारे मन को हमेशा ही आकर्षित करता रहा है। यहां का प्राकृतिक वातावरण भी बहुत सुंदर है, हर किसी को अपनी और आकर्षित कर सकता है, पहले के मुकाबले यहां सुविधा बढ़ी है, सड़क व्यवस्था तो बहुत ही अच्छी हो गई है, आवागमन के साधन बढ़ गए हैं, 'जोधपुर से पीपाड़' बहुत ही आसानी से आया जा सकता है और समय भी कम लगता है, हर तरह की सुविधाएं आसानी से उपलब्ध हो जाती हैं। 'कापरड़ा जैन तीर्थ' यहां से कुछ किलोमीटर दूरी पर स्थित है जो राष्ट्रीय राजमार्ग से जुड़ा हुआ है। 'पीपाड़' के आसपास भी कई मंदिर हैं, यहां आज भी कुछ प्राचीन वस्तुएं मौजूद हैं। 'खेजड़ला' जो यहां से कुछ दूरी पर स्थित है, वहां एक प्राचीन किला जो भव्य रूप से बना हुआ है, यहां आस-पास कई जैन मंदिर भी हैं, यहां के लोग धार्मिक प्रवृत्ति के हैं, अतः जैन मंदिर, सनातन समाज के मंदिर व भवन आदि हैं। जैन समाज का भी भवन बना हुआ है। जैन समाज के कई भवन एवं धर्म स्थानक बने हुए है, पिताजी बसंतराज जी ने श्री जयमल जैन धर्म स्थानक निर्माण में सहयोग दिया। वे श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के ट्रस्टी थे। 'पीपाड़ सिटी' में जैन मंदिर व सनातन समाज के भी मंदिर हैं, ऐसी अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'पीपाड़' में...

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि १००% अपने देश का नाम केवल 'भारत' ही रहना चाहिए, अंग्रेज चले गए पर उनके द्वारा थोपा गया नाम आज भी हमारा 'भारत' अपना रहा है, हमारा इतिहास और संस्कृति 'भारत' से जुड़ी है, अतः अपना देश का नाम एक ही रहना चाहिए 'भारत'!

प्रणीत जी का जन्म सम्पूर्ण शिक्षा 'मुंबई' में संपन्न हुई है। आप वर्तमान में चार्टर्ड अकाउंटेंट के रूप में कार्यरत हैं, आपके पिताजी भी चार्टर्ड अकाउंटेंट रहे, उनके द्वारा स्थापित फर्म में चार्टर्ड अकाउंटेंट की इंटर्नशिप के लिए आने वाले विद्यार्थियों को मौका दिया जाता है, वे वर्तमान में भी इसी फर्म से जुड़े हुए हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। आपके पिताजी बसंतराज जी श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ मुंबई के अध्यक्ष थे, आपकी माताजी सुनंदा जी धार्मिक कार्यों में सक्रिय रहती हैं। जय भारत! **- मेरा राजस्थान**

नवरतन कवाड़
व्यवसायी व समाजसेवी
पीपाड़ सिटी निवासी-चेन्नई प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९९४००९४००७

नवरतन जी अपनी पैतृक भूमि 'पीपाड़ सिटी' के विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि पहले और आज के 'पीपाड़' में बहुत ही अंतर आ गया है, मुझे तो आज भी पहले का ही 'पीपाड़' पसंद है, गांव जैसा माहौल था, लोगों में अपनापन था पर आज 'पीपाड़ सिटी' में शहरीकरण का प्रभाव देखा जाता है, सुविधाएं तो बहुत बढ गई हैं, शिक्षा की दृष्टिकोण से यह क्षेत्र बहुत ही उत्तम है, पूरे भारत में 'पीपाड़ सिटी' एक ऐसा गांव है जहां सबसे अधिक चार्टर्ड अकाउंटेंट होकर निकले हैं। आज यहां बड़े-बड़े स्कूल, कॉलेज खुल गये हैं। अस्पताल की भी व्यवस्था अच्छी हो गई है, धार्मिक दृष्टिकोण से भी यह क्षेत्र बहुत ही उत्तम है। आचार्य श्री हस्तीमल जी और आचार्य श्री हीराचंद जी म.सा. की जन्मभूमि है। साध्वीश्री विचक्षणाश्रीजी की जन्मस्थली रही है, यहां समय समय पर कई दिक्षाएं और चातुर्मास होते रहते हैं, मेरे छोटे भाई और बहन अशोक मुनि जी व मधुश्री जी ने भी रत्न संघ में दीक्षा ली है, यहां ३०० साल पुराना उपासरा हैं, जहां आचार्य श्री जयमल जी म.सा. ने चातुर्मास किया था, यहां और भी कई जैन मंदिर और सामाजिक भवन बने हुए हैं, सनातन समाज के भी कई प्राचीन प्रमुख मंदिर हैं, यहां बड़ी और छोटी न्यात के अलग-अलग मंदिर और सामाजिक भवन बने हुए हैं। व्यापारिक दृष्टिकोण से भी यह क्षेत्र बहुत ही उत्तम है। यहां का प्राकृतिक वातावरण उत्तम है, तालाब, गौशालाएं, नाड़ी भी हैं। 'पीपाड़ सिटी' ने कई भामाशाह दिए हैं, जिन्होंने परदेस में रहते हुए भी 'पीपाड़' के विकास के लिए अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है, ऐसी अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'पीपाड़ सिटी' की...
'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का एक ही नाम, एक ही पहचान रहनी चाहिए 'भारत'।
नवरतन जी मूलत: 'पीपाड़ सिटी' के निवासी हैं। आपका जन्म व शिक्षा 'चैन्नई' में संपन्न हुई है। यहां आप आभूषणों के व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ ही यथासंभव सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं, श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के सदस्य हैं। जय भारत!

- मेरा राजस्थान

उगमराज मुथा
व्यवसायी एवं समाजसेवी
पीपाड़ सिटी निवासी-मुंबई प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८२०१५५६१०

उगमराज जी अपनी पैतृक भूमि 'पीपाड़ सिटी' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि पहले और आज के 'पीपाड़ सिटी' में बहुत ही परिवर्तन आया है, पहले यह सीमित क्षेत्रफल में बसा हुआ था और गांव जैसा माहौल था पर आज इसका विस्तार बहुत अधिक क्षेत्रफल में हो गया है, शहर की तरह सारी सुविधा यहां उपलब्ध होने लगी है। स्कूल, कॉलेज, अस्पताल की भी व्यवस्था अच्छी है। आवागमन के लिए बस साधन सर्वोत्तम है, जहां से 'जोधपुर' के लिए हमेशा बस की व्यवस्था उपलब्ध रहती है। 'पीपाड़' रेलवे स्टेशन भी है, यहां का सामाजिक माहौल बहुत ही उत्तम है, हर धर्म समाज के लोग बसे हुए हैं, यहां के दर्शनीय स्थलों की बात की जाए तो तालाब के किनारे शांतिनाथ जी का मंदिर और नगर के बीच पार्श्वनाथ जी का मंदिर बहुत ही पुराना है। तालाब के किनारे शांतिनाथ जी मंदिर बना हुआ है, यहां स्थानक व दादाबाड़ी भी बने हुए हैं। सनातन समाज के भी कई मंदिर और संस्थाएं स्थापित हैं, यह एक धार्मिक क्षेत्र के रूप में भी जाना जाता है। यहां से कुछ किलोमीटर दूरी पर स्थित है 'कापरड़ा जैन तीर्थ' जो बहुत ही प्रसिद्ध है व रमणीय क्षेत्र है जहां पर आपके द्वारा प्याऊ जल मंदिर, केसर छतरी व उपाश्रय बनवाये गये हैं, यह एक प्रसिद्ध जैन तीर्थ के रूप में जाना जाता है। 'पीपाड़' के लोग जीवदया से भी जुड़े हुए हैं, यहां समाज द्वारा कई गौशालाएं संचालित हैं, ऐसी अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'पीपाड़ सिटी' में...
'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का एक ही नाम एक ही पहचान रहनी चाहिए 'भारत'।
उगमराज जी का जन्म 'पीपाड़' में और शिक्षा 'मुंबई' में संपन्न हुई है। मुंबई में आप आभूषण व्यवसाय से जुड़े हुए हैं, साथ ही सामाजिक कार्य में भी सक्रिय रहते हैं, विभिन्न धार्मिक संस्थाओं से जुड़े हुए हैं। जय भारत!

- मेरा राजस्थान

संजय चोपड़ा
व्यवसायी व समाजसेवी
पीपाड़ सिटी निवासी-अमरावती प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८२३२७८७७०

संजय जी अपनी पैतृक 'पीपाड़ सिटी' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि पहले के मुकाबले आज के 'पीपाड़' में बहुत बदलाव आया है। सुविधा और व्यवस्थाएं बढ़ी हैं, आज यहां कई विद्यालय, महाविद्यालय अस्पताल की व्यवस्था अच्छी है, आवागमन के साधन बहुत ही उत्तम है। जोधपुर से 'पीपाड़' के लिए हमेशा ही बस व्यवस्था उपलब्ध रहती है। आर्थिक स्थिति की बात की जाए तो यहां लाइमस्टोन की कई फैक्ट्रियां हैं, हर तरह का व्यापार होने लगा है, गृह उद्योग भी यहां बड़े पैमाने पर होते हैं, कृषि भी यहां की अच्छी है, यहां जीरा, रायड़ा, मिर्ची व अन्य फसलें होती हैं। अनाज मंडी और सब्जी मंडी भी है, पहले के मुकाबले यहां की आर्थिक स्थिति बहुत ही सुदृढ़ है। यहां के सामाजिक माहौल में भी परिवर्तन आया है, पहले लोगों में बहुत अपनापन था आज भी है, पर आज की नई पीढ़ी में वह भावनाएं नहीं दिखाई **शेष पृष्ठ ५० पर...**

पृष्ठ ४९ से... देती, यहां के भौगोलिक स्थिति उत्तम है। जैन समाज के दो मंदिर हैं। यहां पर प्राचीन बावड़ी, सापासर तालाब है, जो यहां की सुंदरता को बढ़ाते हैं, साथ ही यहां अन्य देवी-देवताओं के भी मंदिर हैं। गणगौर उत्सव बड़े ही धूमधाम से मनाया जाता है, कुछ दूरी पर स्थित है 'सेठों की रिंया' जहां वायण माताजी का मंदिर है, जो एक ऐतिहासिक मंदिर है। यहां का प्राकृतिक वातावरण बहुत ही उत्तम है, ऐसी अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'पीपाड़ सिटी' में...

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का एक ही नाम, एक ही पहचान रहनी चाहिए 'भारत'।

संजय जी मूलतः 'पीपाड़' के निवासी हैं। १९५८ से आपका परिवार अमरावती, महाराष्ट्र में बसा हुआ है। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा यहीं संपन्न हुई है, यहां आप मेटल बर्तनों के व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ ही यथासंभव सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। गुरु गणेश सेवा समिति व तीर्थंकर सेवा समिति ओसवाल भवन के कोषाध्यक्ष हैं, अन्य कई संस्थानों से भी जुड़े हुए हैं। जय भारत!

-मेरा राजस्थान

मेघराज लुणावत

अध्यक्ष ऑल इंडिया फेडरेशन ऑफ़ हायर परचेज संगठन
पीपाड़ सिटी निवासी-चेन्नई प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८८४२०९९९९

मेघराज जी अपनी पैतृक भूमि 'पीपाड़ सिटी' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि 'पीपाड़' में पिछले कुछ वर्षों में बहुत बदल गया है, पहले के मुकाबले आज हर तरह की सुविधा यहां उपलब्ध हैं। आवागमन के साधन अच्छे हैं। स्वास्थ्य व शिक्षा की कई बड़ी-बड़ी संस्थाएं खुल गई हैं। बाजार की तो कायाकल्प ही बदल गई है। आर्थिक दृष्टिकोण से भी क्षेत्र बहुत ही उत्तम है, हर तरह का व्यवसाय यहां होने लगा है, कुछ इंडस्ट्रीज भी है। सामाजिक दृष्टिकोण से भी यह क्षेत्र उन्नत है, हर धर्म व समाज के लोग यहां बसे हुए हैं, सभी के बीच आपसी सामंजस्य अच्छा है। प्राकृतिक रूप से भी यहां प्राचीन तालाब, बावड़ी, जैन मंदिर व अन्य कई देवी देवताओं के मंदिर हैं जो 'पीपाड़' को और भी सुंदर बना देते हैं, ऐसी अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'पीपाड़' में...

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक' नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि यह तो बहुत ही अच्छा अभियान है कि अपने देश का एक ही नाम, एक ही पहचान रहे, पर विदेश में हमारी पहचान इंडिया से है जिसे 'भारत' बनाना चाहिए।

मेघराज जी मूलतः 'पीपाड़' के निवासी हैं, जहां से आपका परिवार 'पाली' जिले में स्थानांतरित हो गया, आपका जन्म सम्पूर्ण शिक्षा 'पाली' में ही संपन्न हुई है, उच्च शिक्षा आपने 'चेन्नई' से ग्रहण की है। १९६२ में आपका चेन्नई आना हुआ और यहां भवन निर्माता के रूप में कार्यरत हैं। फाइनेंस के कारोबार से भी जुड़े हुए हैं, साथ ही आप सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। अखिल भारतवर्षिय फेडरेशन आफ हायर परचेज संगठन के अध्यक्ष हैं, युवक परिषद और तेरापंथ सभा चेन्नई के भी अध्यक्ष रहे हैं, अखिल भारतीय तेरापंथ महासभा के कार्यकारिणी सदस्य हैं, अन्य कई संस्थानों से भी जुड़े हुए हैं। जय भारत!

- मेरा राजस्थान

डॉ. निहालचंद मेहता

सुपर स्पेशलिस्ट हेपेटॉलजिस्ट व गैस्ट्रो सर्जन
पीपाड़ सिटी निवासी-जोधपुर प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८२९०२६४२४

डॉ. निहालचंद जी अपनी जन्मभूमि 'पीपाड़ सिटी' की विशेषताओं का उल्लेख करते समय कहते हैं की बचपन का 'पीपाड़' और आज के 'पीपाड़' में बहुत ही परिवर्तन आ गया है, इसका क्षेत्रफल बहुत अधिक बढ़ गया है, विकास की बात की जाए तो पहले माध्यमिक शिक्षा तक के ही विद्यालय थे, आज डिग्री कॉलेज भी बन गए हैं, लड़कियों के लिए अलग से विद्यालय व महाविद्यालय हैं, पहले यहां प्राइमरी हेल्थ तक की सुविधा थी, आज सुपर स्पेशलिस्ट डॉक्टर व बड़े-बड़े अस्पताल खुल गए हैं, निजी अस्पताल भी हैं, यहां का सामाजिक वातावरण भी उत्तम है, लोगों में आज भी अपनापन है, आने वाले अतिथि का बड़े आदर भाव से सत्कार करते है। यहां का प्राकृतिक वातावरण बहुत ही उत्तम है, बचपन में 'सापासर' तालाब बहुत घूमते थे, क्योंकि हमारा स्कूल वहीं पास में था। शांतिनाथ जी का प्राचीन जैन मंदिर और पार्श्वनाथ जी का भी जैन मंदिर उल्लेखनीय है, सनातन समाज का लक्ष्मी नारायण जी का मंदिर बहुत ही पुराना है, आर्थिक स्थिति यहां की उत्तम है, लाइमस्टोन की कई फैक्ट्रियां लग गई हैं, पहले जहां साइकिल भी देखना मुश्किल था, बैलगाड़ी से आना जाना होता था, आज कार और मोटरसाइकिल की भरमार है, ऐसी अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'पीपाड़ सिटी' में...

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम एक ही रहना चाहिए 'भारत', हमारे देश का वास्तविक नाम और पहचान 'भारत' ही है।

डॉ. निहालचंद जी का जन्म और प्रारंभिक शिक्षा 'पीपाड़ सिटी' में ही संपन्न हुई है, उच्च शिक्षा आपने जोधपुर से एमबीबीएस और एमएस (जनरल सर्जरी) की शिक्षा भी 'जोधपुर' से ही ग्रहण की है, तत्पश्चात आपने कुछ वर्षों तक ईरान और स्वीडन में कार्य किया, स्वीडन से हेपेटो बिलीरी सर्जरी व जी.आई. एंडोस्कोपी में विशेषज्ञता प्राप्त की। बॉम्बे हॉस्पिटल में भी कई वर्षों तक कार्यरत रहे, तत्पश्चात 'जोधपुर' जाकर बसे और यहां जनरल गैस्ट्रो सर्जन व हेपेटॉलजिस्ट स्पेशलिस्ट के रूप में चिकित्सा सुविधा प्रदान कर रहे हैं, पूर्व में एसोसिएशन ऑफ मेडिकल प्रैक्टिशनर ऑफ जोधपुर के १० वर्षों तक सचिव भी रहे, यथासंभव अन्य सामाजिक संस्थाओं से भी जुड़े हुए हैं। जय भारत!

- मेरा राजस्थान

डॉ. पदमचंद मुणोत

फिजिशियन हार्ले इंटरनेशनल मेडिकल सेंटर
पीपाड़ सिटी निवासी-दुबई प्रवासी

पदम जी अपनी जन्मभूमि 'पीपाड़ सिटी' के विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि मेरा पूरा बचपन 'पीपाड़ सिटी' में ही बीता है। १०वीं तक शिक्षा मैंने सेठ रामरख मालानी विद्यालय से ग्रहण की, जो मेरे जीवन के आधार स्तंभ रहा, यहां के प्राध्यापक विरधीचंद जी द्वारा दी गई शिक्षा ने मेरे जीवन को एक उचित मार्गदर्शन दिया, अपनी मेहनत के बल पर आज विद्यालय के सारे विद्यार्थी अपने-अपने क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभा रहे हैं। 'पीपाड़ सिटी' का प्राकृतिक वातावरण बहुत ही उत्तम है। सामाजिक दृष्टिकोण से भी यह क्षेत्र बहुत ही उत्तम है, हर धर्म समाज के लोग यहां आपसी प्रेम भाव के साथ निवास करते हैं, यहां से ८-१० किलोमीटर दूरी पर 'कापरड़ा जैन तीर्थ' है जो लोगों की श्रद्धा का मुख्य केंद्र है। बचपन तो बचपन ही होता है, उस समय की यादें अनमोल होती हैं, जो हमारे जीवन में हमेशा ही ताजा रहती हैं, वहां का लड़कपन यार दोस्तों से मिलना-जुलना, आज भी बहुत याद आते हैं, दोस्तों के सहयोग से लगने वाला 'गोट' आज भी मैं याद करता हूं। यह क्षेत्र धार्मिक रूप से भी जाना जाता है, आचार्य हस्तीमल और श्री हीराचंद जी म.सा. की जन्मभूमि रही है। १९६४ के दौरान जब हीराचंद जी म.सा. जी को दीक्षा दी जा रही थी, तो उस समय ओपनिंग भजन मैंने और मेरे दोस्त शांतीलाल मुणोत (युएसए) ने मिलकर गाया था, उस समय हमारी उम्र १४ वर्ष थी। आज भी वहां का सामाजिक वातावरण बहुत ही उत्तम है, दुबई में रहते हुए भी 'पीपाड़' मेरे दिलों दिमाग में बसा है और वहां की यादें भी। 'पीपाड़' के बारे में जितना कहा जाए उतना कम है और भी कई विशेषताएं हैं हमारे 'पीपाड़' की...

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का नाम केवल 'भारत' ही रहना चाहिए, 'भारत' ही हमारे देश का वास्तविक नाम है।

पदमचंद जी का जन्म और प्रारंभिक शिक्षा 'पीपाड़' में संपन्न हुई है। आप तीन भाइयों का परिवार है, बड़े भाई ज्ञानचंद जी, निहालचंद जी हैं। उच्च शिक्षा 'जोधपुर' से ग्रहण की है। आपने बचपन से ही निश्चय किया था कि बनूंगा तो डॉक्टर ही, जीव विज्ञान से आपने स्नातक की शिक्षा ग्रहण की, बोर्ड एग्जाम में भी उच्चतम अंक हासिल किया, जिसके कारण आपको स्कॉलरशिप भी प्राप्त हुई। १९६९ में पीएमटी, १९७४ में एमबीबीएस करने के पश्चात, एमडी के लिए 'मुंबई' आए। मुंबई के बॉम्बे हॉस्पिटल, जेजे हॉस्पिटल, नायर हॉस्पिटल जैसे कई अस्पतालों में अपनी प्रेक्टिस जारी रखी। श्रीमान मोफतराज मुणोत द्वारा 'दुबई (यु.ए.ई.) में कई कन्ट्रक्शन प्रोजेक्ट शुरू किये गए, जिसमें पूरे विश्व से १०००० वर्कर कार्य कर रहे थे, उनकी मेडिकल सुविधाओं के लिए आप 'दुबई' गए, पिछले ४७ सालों से आप 'दुबई' में बसे हैं, आपने यहां स्वयं का भी मेडिकल सेंटर स्थापित किया है, वर्तमान में आप दुबई स्थित हार्ले इंटरनेशनल मेडिकल क्लिनीक में जनरल फिजीशीयन के रूप में कार्यरत हैं। जय भारत!

- मेरा राजस्थान

पंकज कोठारी

अध्यक्ष पीपाड़ वस्त्र व्यापार संगठन
पीपाड़ सिटी निवासी
भ्रमणध्वनि: ९४१४६७१५७१

पंकज जी अपनी जन्मभूमि व कर्मभूमि 'पीपाड़ सिटी' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि पहले और आज के 'पीपाड़ सिटी' में बहुत अंतर आ गया है, पहले यहां का वातावरण बहुत ही शांत और सौहार्दपूर्ण वाला था पर आज जनसंख्या बढ़ने के साथ-साथ यहां शोर-शराबा का वातावरण बन गया है। आज 'पीपाड़' गांव और शहर का मिला-जुला संगम है। आज यहां हर सुविधा उपलब्ध है, स्कूल, कॉलेज, अस्पताल की व्यवस्था अच्छी हो गई है, यहां का सामाजिक माहौल भी बहुत ही उत्तम है, सभी समाज के लोग बसे हुए हैं। माली समाज का बाहुल्य है। प्राकृतिक वातावरण भी यहां का उत्तम है, हरियाली कम ही रहती है। यहां सापासर तालाब और एक पुरानी राठोलाई नाडी है। तालाब के किनारे सैकड़ों वर्ष पुराना शांतिनाथ जी जैन मंदिर है और बाजार के बीच चिंतामणि पार्श्वनाथ जैन मंदिर है, जिसका जिर्णोद्धार भी किया गया है। यहाँ दादाबाड़ी भी है, यहां का सबसे प्राचीन और प्रमुख मंदिर शेषनाग जी का है, जिसमें भगवान विष्णु की प्रतिमा निद्रासन अवस्था में है, इसके अलावा लक्ष्मीनाथ जी का मंदिर, पिपलाद माता जी का मंदिर उल्लेखनीय है। कहते हैं कि 'पीपाड़ सिटी' का नाम संत पीपा जी महाराज के नाम से पड़ा था। व्यापारिक दृष्टिकोण से भी यह क्षेत्र बहुत ही उत्तम है, कपड़ों का हब कहा जाता है, यहां १०० से अधिक कपड़ों की दुकानें हैं, हैंडलूम के भी काम होते हैं, 'पीपाड़' में वस्त्र व्यापार संगठन भी बना हुआ है, यह कपड़ों के लिए प्रसिद्ध है, आसपास के कस्बों के लोग यहां खरीदारी के लिए आते हैं, इंडस्ट्रीज के नाम पर यहाँ लाइम इंडस्ट्रीज है, पुराने समय में यहां गढ़ हुआ करता था, जिसे ५० साल पहले से श्री ओसवाल लोड़े साजन विकास केंद्र (कोट) के नाम से जाना जाता है। यहां से १६ किलोमीटर दूरी पर स्थित कापरडा जैन तीर्थ है जो चार मंजिला है, यहां चार मुख वाली प्रतिमाएं स्थापित हैं, यहां पुरानी संस्था में बकराशाला भी शामिल है, जो लगभग १०० साल पुरानी है, यहां सैकड़ों साल पुराना राता उपासरा है जिसे श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ संभालता है और भी कई विशेषताएं हैं हमारे 'पीपाड़ सिटी' में...

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का एक ही नाम रहना चाहिए 'भारत'। चाहे भाषा कोई भी हो, प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव जी के पुत्र भरत के नाम से इस क्षेत्र का नाम 'भारत' पड़ा, हर भाषा में एक ही नाम रहे 'भारत'।

पंकज जी का जन्म सम्पूर्ण शिक्षा 'पीपाड़ सिटी' में ही संपन्न हुई है, यहां आप कपड़ों के व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। पीपाड़ वस्त्र व्यापार संगठन के अध्यक्ष हैं। श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ के मंत्री व बकराशाला के कोषाध्यक्ष ट्रस्टी हैं, अन्य कई संस्थाओं से भी जुड़े हुए हैं। जय भारत!

- मेरा राजस्थान

गौतम मेहता
अध्यक्ष जैन एडवोकेट फेडरेशन मुंबई
पीपाड़ सिटी निवासी-मुंबई प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८२११४५८८६

गौतम जी अपनी जन्मभूमि 'पीपाड़ सिटी' के विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि 'पीपाड़ सिटी' को धर्म नगरी भी कहा जाता है, जो आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. व हिराचंद जी म. सा. की जन्मभूमी है। पहले और आज के 'पीपाड़' में बहुत अंतर आ गया है। सन् १९६५ के करीब यहां बिजली, पानी, सड़क जैसे मूलभूत सुविधाओं की भी अव्यवस्था थी। पानी का साधन यहां के सेठ साहूकारों की बगीचियां और तालाब पर ही निर्भर था, जिनमें रामरख मालानी की बगीची, काबरा की बगीची सार्वजनिक रूप से सभी के लिए खुली रहती थी। 'सापासर' तालाब के तीन ओर बगीची और एक तरफ मस्जिद है, यहां के विकास की बात की जाए तो यहां पहले मैट्रिक तक दो ही स्कूल थे और आज बड़े-बड़े स्कूल, कॉलेज, डिग्री कॉलेज बन गये हैं। अस्पताल की भी व्यवस्था अच्छी है, आवागमन के साधन सड़क माध्यम बहुत ही उत्तम है, 'जोधपुर' यहां से ६४ किलोमीटर दूरी पर है, जहां के लिए बसों की सुविधा हमेशा उपलब्ध रहती है। सामाजिक वातावरण की बात की जाए तो यहां जैन समाज के अलावा अन्य धर्म समाज के लोग भी बसे हुए हैं, यहां पर माली समाज का बाहुल्य है, पहले यहां ग्राम पंचायत थी, आज नगर पालिका हो गई है, हर तरह की सुविधाएं यहां पर उपलब्ध हैं। व्यापारिक दृष्टिकोण से भी यह क्षेत्र बहुत ही उत्तम है, यहां हर तरह का कारोबार होता है, आसपास के गांव के लोग भी कारोबार और खरीदारी के लिए 'पीपाड़ सिटी' ही आते हैं, यहां से कुछ दूरी पर लाइम फैक्ट्री भी है, यह क्षेत्र विशेषकर कपड़ों के लिए जाना जाता है, पहले यहां केसरीमल रावतमल रेजावाले का कपड़ा व्यवसाय था, उनके अंतर्गत कई छपाई और रंगाई वाले काम होते थे, एक तरह से यह कपड़ों का हब कहा जाता है, कृषि की बात की जाए तो यहां मिर्च और बोर की पैदावार अधिक होती है, यह खेती के बारिश के पानी पर ही निर्भर है। यहां जैन समाज का सबसे प्राचीन पार्श्वनाथ जी का मंदिर है, सनातन समाज के भी कई देवी-देवताओं के मंदिर हैं, यहां से १० किलोमीटर दूरी पर 'कापरड़ा जैन तीर्थ' है, जो बहुत ही भव्य रूप में बना हुआ है। आज 'पीपाड़' के अधिकतर परिवार देश के विभिन्न भागों में बसे हुए हैं, विशेषकर मुंबई, चेन्नई, सूरत, अहमदाबाद, जोधपुर, बेंगलुरु, अमरावती जैसे क्षेत्र में बसे हैं। 'पीपाड़' की खासियत यह भी है कि यहां ५०००० की आबादी में ५०० से अधिक चार्टर्ड अकाउंटेंट हैं, जो पूरे राजस्थान में महत्वपूर्ण है, ऐसी और भी विशेषताएं हैं हमारे 'पीपाड़ सिटी' में...

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का एक ही नाम, एक ही पहचान रहनी चाहिए 'भारत', जो प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव जी के पुत्र भरत चक्रवर्ती के नाम से पड़ा है, अत: हर भाषा में हमारे देश का एक ही नाम रहना चाहिए 'भारत'।

गौतम जी मूलत: 'पीपाड़ सिटी' के निवासी हैं। आपका जन्म व प्रारंभिक शिक्षा यहीं संपन्न हुई है, पिछले कई वर्षों से आप 'मुंबई' में बसे हैं और अधिवक्ता के रूप में कार्यरत हैं। आप कानुनी प्रॅक्टिस में वाइट कॉलर क्राइम और आर्बीट्रेशन के क्षेत्र में सक्रिय हैं। मुंबई जैन एडवोकेट फेडरेशन के अध्यक्ष पद पर कार्यरत हैं, जीतो, जीवदया, भारतीय जैन संघटना व श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ मुंबई में विशेष सक्रिय हैं। जय भारत! **- मेरा राजस्थान**

डॉ. झील विनीत गांधी
आयुर्वेदिक चिकित्सक
पीपाड़ निवासी-हैदराबाद प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९९६६९६८४३०

झील जी अपनी पैतृक भूमि 'पीपाड़' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहती है कि मेरा ननिहाल और दादीघर के 'पीपाड़' ही है, हमारी गर्मियों की छुट्टियां 'पीपाड़' में ही बीतती थी, आज भी बचपन की बहुत सी यादें हमारे दिलों दिमाग पर छाई हुई हैं, रात में हम बिजली जाने का इंतजार करते थे, जिससे आसमान में फैले लाखों सितारे देख सकें, वह एक बहुत ही सुंदर व साफ नजारा होता था, नीम की छांव में उसके पत्तों से खेलना, पैदल गौशाला जाना, तालाब पर स्थित शांतिनाथ जी के मंदिर के झरोखों से तालाब को घंटों देखना, नदी पर स्थित हनुमान जी और महेश्वर मंदिर में पूजा करना, प्रसाद का इंतजार करना, जैन पाठशाला में जाना जैसी कई गतिविधियां हमारी होती थी। आज भी यह सब बातें हमें रोमांचित कर देती है। 'पीपाड़' का सामाजिक वातावरण बहुत उत्तम है, आज भी लोगों में वही प्रेम भाव और अपनापन नजर आता है। पहले के मुकाबले आज का पीपाड़ बहुत बदल गया है, पहले गलियों-सड़कों पर हम अकेले घूमते थे पर आज इतनी भीड़-भाड़ हो गई है कि बच्चों को अकेला नहीं छोड़ा जा सकता, सुविधाओं के मामले में बहुत प्रगति हुई है, हर क्षेत्र में यहां विकास हुआ है। आवागमन के सुविधा अच्छी हो गई है, शिक्षा के लिए विद्यालय और महाविद्यालय खुल गए हैं, अस्पताल की भी व्यवस्था अच्छी है और भी कई विशेषताएं हैं हमारे 'पीपाड़' में।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि बिल्कुल अपने देश का तो एक ही नाम एक ही पहचान रहनी चाहिए, इंडिया नाम तो अंग्रेजों द्वारा दिया गया नाम है, जिसका शाब्दिक अर्थ होता है अशिक्षित और असभ्य लोग तो यह नाम हमारे देश का हो ही नहीं सकत, हमारी पहचान 'भारत' से है और 'भारत' नाम से ही रहनी चाहिए।

झील जी मूलतः 'पीपाड़' की निवासी हैं, आपका जन्म और शिक्षा मुंबई में संपन्न हुई है, आप पेशे से आयुर्वेदिक चिकित्सक हैं और योगा शिक्षिका के रूप में भी अपनी भूमिका निभा रही है, वर्तमान में हैदराबाद में बसी हुई हैं और प्रैक्टिस कर रही हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी जुड़ी हैं। जय भारत!

- मेरा राजस्थान

खेमचंद कांकरिया

प्रसिद्ध उद्योगपती व समाजसेवी
पीपाड़ सिटी निवासी-चेन्नई प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९४८०६९७२७२

खेमचंद जी अपनी भूमि 'पीपाड़ सिटी' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि मेरी जन्मभूमि 'पीपाड़' से कुछ दूरी पर स्थित 'बोयल गांव' है, वहां से ७० वर्ष पूर्व मेरा परिवार 'पीपाड़' में आकर बस गया, पहले और आधुनिक 'पीपाड़' में रात दिन का अंतर आ गया है, विशेषकर जनसंख्या की दृष्टिकोण से यह क्षेत्र समृद्ध हुआ है, पहले यहां की जनसंख्या बहुत कम थी, जैन समाज के ३०० घर खुले थे, पर समय-समय पर जैन परिवार रोजगार और कारोबार हेतु देश के विभिन्न भागों को अपनी कर्मभूमि बनाया, आज यहां मात्र १७० जैन परिवारों के घर खुले हुए हैं। 'पीपाड़' एक धार्मिक नगरी के रूप में जाना जाता है, यह जैन धर्म के आचार्य जिन शासन के दिव्य रत्न गुरु श्री हस्तीमल म.सा. जी और आचार्य श्री हीरामुनि म.सा. जी की जन्मस्थली है, कई महान आत्माओं ने संयम अंगीकार किया है, प्रतिवर्ष संतों और गुरु भगवंतों का आध्यात्मिक चातुर्मास होता है। सामाजिक दृष्टिकोण से भी यह क्षेत्र बहुत ही उत्तम है, अब यहां पाश्चात्य संस्कारों की झलक भी देखने को मिलती है, यहां पर विभिन्न धर्म व जाति के लोग बसते हैं, जिनका आपस में भाईचारा, एकता सबके लिए मिसाल है। आर्थिक दृष्टि से देखा जाए तो इस शहर कि स्थिती बहुत ही सुदृढ़ है, औद्योगिक दृष्टि से यहां पर अनेक इंडस्ट्रीज खुल गये हैं, जिससे यहां की जनता को रोजगार के अनेक सुअवसर मिलता है। कृषि और व्यापार का भी 'पीपाड़' के विकास में अहम भूमिका है। यातायात के सुगम साधन और सुंदर सड़कों का जो जाल बिछाया है, जो इस शहर को देश के विभिन्न क्षेत्रों से जोड़ता है। यहाँ उच्च कोटि की शिक्षा प्रणाली आम जनता को लुभाती हैं, यहां से अनेक प्रतिभाएं देश का गौरव बढ़ा रही है। प्राकृतिक सुंदरता और मीठे जल की उपलब्धता से आम जन के जीवन को सुखी बना दिया है, यहां जैन दादाबाड़ी, पार्श्वनाथ जी का मंदिर, शांतिनाथ जी का मंदिर, लक्ष्मीनाथ जी का मंदिर, रामदेवरा मंदिर, तिरुपति बालाजी का मंदिर और कुछ दूरी पर स्थित 'कापरड़ा जैन तीर्थ' और मोगरिया में हनुमान जी का मंदिर जन-जन के आस्था का केंद्र हैं। खानपान में भी 'पीपाड़' में प्रभु जी का पेठा, कलाकंद, खजुरिया मिठाई विशेष प्रसिद्ध है, अन्य कई विशेषताएं हैं हमारे 'पीपाड़' में....

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से 'भारत' ही नाम हमारे देश की विशेष पहचान है, इंडिया नाम का कोई अर्थ नहीं 'भारत' नाम बोलने में हमें अपनापन और गर्व की अनुभूति होती है, जो इंडिया नाम से नहीं प्राप्त होती।

खेमचंद जी का जन्म 'पीपाड़' के समीप 'बोयल गांव' में १९५० को हुआ और शिक्षा 'पीपाड़' में हुई। १९९८ के करीब आप 'चेन्नई' आकर बस गए। वर्तमान में यहां रियल एस्टेट, केमिकल, मैन्युफैक्चरिंग, फाइनेंस जैसे कई व्यवसाय में संलग्न हैं, वर्तमान में व्यवसाय आपके पुत्र नवरत्न जी, अजीत जी, प्रसन्न जी, ललित जी, वीरेंद्र जी संभाल रहे हैं। आपकी एक पुत्री शोभा है। आपके दो पुत्र बेंगलुरु में और तीन पुत्र चेन्नई में रहते हैं। अपनी जन्मभूमि 'बोयल गांव' में भी आपने कई सामाजिक भवन का निर्माण किया है, जिसमें जैन स्थानक, पानी के लिए प्याऊ, कबूतरों के लिए चुग्गा घर, बोयल आयुर्वेदिक हॉस्पिटल का निर्माण किया है। श्री राम गौशाला बोयल, पीपाड़ में जैन भोजन शाला, ओसवाल भवन आदि के निर्माण में भी विशेष सहयोग किया है। 'कापरड़ा जैन तीर्थ' में चुग्गा घर बनवाया है, जैन मंदिर मेड़ता सिटी रोड के परिसर में सात मंजिला चुग्गा घर बनवाया है। अपने 'बोयल गांव' में स्वअर्जित लक्ष्मी का सदुपयोग सेवा, शिक्षा, चिकित्सा, साधर्मी भाइयों और असहाय व्यक्तियों और मानवता के लिए किया है। आपके कुशल नेतृत्व में अनेक संस्थाएं आज सफलता के शिखर को छू रही है। जय भारत!

- मेरा राजस्थान

दिनेश मुथा

व्यवसायी व समाजसेवी
पीपाड़ सिटी निवासी-मुंबई प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९९३००३३६८६

दिनेश जी अपनी पैतृक भूमि 'पीपाड़ सिटी' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि 'पीपाड़' जोधपुर जिले का एक प्रमुख शहर है, जिसके अंतर्गत कई गांव आते हैं, प्राकृतिक रूप से भी यह क्षेत्र बहुत ही उत्तम है। यहां के सामाजिक वातावरण में भी बहुत बदलाव आया है। आज जैन समाज के अधिकतर परिवार देश के विभिन्न भागों में रोजगार और कारोबार हेतु बस गए हैं, अन्य समाज का बाहुल्य हो गया है, सभी समाज के लोग बसे हुए हैं। आर्थिक दृष्टिकोण से यह क्षेत्र बहुत ही उत्तम है, हर तरह का व्यापार होने लगा है, रंगाई छपाई जैसे काम भी होते हैं, यहां मौसम के हिसाब से कृषि भी होती है। यहां कई जैन व सनातनी देवी-देवताओं के मंदिर हैं। ८ किलोमीटर दूरी पर 'खेजड़ला' में गढ़ है, जहां लोग पर्यटन के लिए जाना पसंद करते हैं, कुछ ही दूरी पर ही 'कापरडा जैन तीर्थ' है, जो डेढ़ सौ साल पुराना है। तालाब है और तालाब के किनारे कई छतरियां बनी हुई हैं। कई विद्यालय और कॉलेज भी नए खुल गए हैं। गौशालाएं भी स्थापित हैं और भी कई विशेषताएं हैं हमारे 'पीपाड़ सिटी' में...

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, अभियान के संदर्भ में कहना है कि अपने देश का एक ही नाम, एक ही पहचान रहनी चाहिए केवल 'भारत'। दिनेश जी मूलत: 'पीपाड़ सिटी' के निवासी हैं, आपके दादाजी के समय से आपका परिवार 'मुंबई' में बसा हुआ है, आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा 'मुंबई' में ही संपन्न हुई है, यहां आप पॉलिमर कंसलटेंसी के कार्य से जुड़े हैं, साथ ही आप यथासंभव सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं, 'पीपाड़ सिटी' में आपके पिताजी मोहनलाल जी के द्वारा शिक्षा विकास समिती के तत्वाधान में आपके दादा जी के नाम श्री भीकमचंद मुथा कन्या विद्यालय की स्थापना १९७५ में की गई थी, जिसके ५० वर्ष पूरे होने जा रहे हैं, इस संस्था से आप भी जुड़े हैं और आपका उद्देश्य है कि 'पीपाड़ सिटी' में एक लाख पेड़ लगाया जाए जिसके लिए 'पीपाड़' में रहने वालों का सहयोग मिलना चाहिए। जय भारत!

- मेरा राजस्थान

रामस्वरूप भूतड़ा

अध्यक्ष बाबा रामदेव गोपाल गौशाला समिति
पीपाड़ सिटी निवासी-जोधपुर प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९४६०५९५५५१

रामस्वरूप जी अपनी जन्मभूमि और कर्मभूमि 'पीपाड़ सिटी' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि पहले और आज के 'पीपाड़' में बहुत ही अंतर आ गया है, इसके हर क्षेत्र में विकास हुआ है, क्षेत्रफल व जनसंख्या की वृद्धि हुई है, कृषि का स्तर बढ़ गया है। व्यापारिक दृष्टिकोण से भी यह उन्नत है। यहां कुछ कमियां भी हैं, पहले यहां का जलस्तर बहुत ही अच्छा था पर आज यहां का जलस्तर बहुत ही कम हो गया है, जिसका प्रभाव यहां के कृषि पर भी दिखाई देता है, इसीलिए यहां की कृषि मुख्यतः बरसात के पानी पर निर्भर है। आज यहां हर तरह का व्यापार होने लगा है, जमीन के भाव बढ़ गए हैं, लाइमस्टोन की फैक्ट्रियां है, कपड़ा व्यापार बहुत अधिक बढ़ा है, यहां का सामाजिक वातावरण भी बहुत ही उत्तम है, हर धर्म समाज के लोग यहां बसे हुए हैं। जैन, माहेश्वरी, जाट, माली, बिश्नोई, ब्राह्मण सभी समाज के लोग बसे हैं, माली समाज की संख्या सबसे अधिक है, यहां के धार्मिक स्थलों की बात की जाए तो लक्ष्मीनाथ व गोवर्धन जी का मंदिर बहुत ही पुराना है, साथ ही पिपलाद माताजी का मंदिर है और बावड़ी में हनुमान मंदिर है। जैन समाज के भी कई मंदिर, स्थानक बने हुए हैं, 'पीपाड़' शहर में एक 'सापासरोवर' तालाब व एक नाड़ी है, पहले के समय नाड़ी का पानी पीने के लिए तथा तालाब का पानी अन्य कामों में उपयोग किया जाता था। शिक्षा के क्षेत्र में 'पीपाड़' हमेशा से ही आगे रहा है, यहां कई विद्यालय और महाविद्यालय बने हुए हैं, यहां का सबसे पुराना विद्यालय रामरख मालानी विद्यालय है, भिकमचंद मुथा कन्या उच्च माध्यमिक विद्यालय, सीता देवी चुन्नीलाल बरडिया बालिका महाविद्यालय, हरखचंद कोठारी विद्यालय व अंग्रेजी माध्यम के कई विद्यालय संचालित हैं। पूरे 'पीपाड़ सिटी' में लगभग ६ गौशालाएं हैं। आज 'पीपाड़ सिटी' एक तहसील है और इस तहसील के अंतर्गत लगभग ७०-८० गांव हैं, यहां तहसील कार्यालय पुलिस थाना, कोर्ट सभी संचालित हैं। आवागमन की भी व्यवस्था उत्तम है, रोडवेज बस हमेशा ही 'जोधपुर' के लिए उपलब्ध रहती है, ऐसी अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'पीपाड़ सिटी' की...

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित ही अपने देश का नाम केवल 'भारत' ही रहना चाहिए, इंडिया नाम तो अंग्रेजों की देन है, हमारी पहचान 'भारत' नाम से थी और 'भारत' नाम से ही रहनी चाहिए।

रामस्वरूप जी मूलतः 'पीपाड़ सिटी' के निवासी हैं, आपका जन्म सम्पूर्ण व शिक्षा यहीं संपन्न हुई है। आप कई वर्षों तक आप 'मुंबई' में बसे रहे, वर्तमान में 'जोधपुर' के प्रवासी हैं और व्यापार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। विश्व हिंदू परिषद, जोधपुर के ३३ सालों तक कार्याध्यक्ष रहे व बाबा रामदेव गोपाल गौशाला समिति के अध्यक्ष पद पर सक्रिय हैं, अन्य कई संस्थानों से भी जुड़े हुए हैं। जय भारत! **- मेरा राजस्थान**

ॲड. निर्मल कटारिया

अधिवक्ता व समाजसेवी
पीपाड़ सिटी निवासी
भ्रमणध्वनि: ७०१४५९१०६३

निर्मल जी अपनी जन्मभूमि व कर्मभूमि 'पीपाड़ सिटी' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि 'पीपाड़ सिटी' बहुत ही अधिक विस्तृत हो गया है। पहले ग्राम पंचायत थी, आज तहसील बन गया है और नगरपालिका स्थापित है, इसके अंतर्गत लगभग ८० छोटे-बड़े गांव आते हैं, सामाजिक दृष्टिकोण से भी यह क्षेत्र बहुत ही उत्तम है, यहां हर धर्म व समाज के लोग बसे हुए हैं, माली समाज की संख्या सबसे अधिक है, राजनीति में भी उनका ही दबदबा बना हुआ है। प्राकृतिक दृष्टिकोण से यह क्षेत्र बहुत ही उत्तम है, चारों ओर हरियाली दिखाई देती है, यहां 'खेजड़ी' के पेड़ बहुत अधिक पाए जाते हैं 'सापासर' तालाब और 'नाड़ी' यहां की सुंदरता को बढ़ाते हैं। यहां के इतिहास की बात की जाए तो यहां जागीरदारों के समय दरबार लगता था, जिसे आज 'कोट' के नाम से जाना जाता है, जो वर्तमान समय में जैन समाज द्वारा खरीदा गया है। पार्श्वनाथ मंदिर विशेष उल्लेखनीय है, जो कई वर्षों पुराना है, अन्य जैन मंदिर, स्थानक व दादाबाड़ी भी है, यहां से १२ किलोमीटर दूरी पर स्थित है 'कापरड़ा जैन तीर्थ' है। महेश्वरी पंचायत का मंदिर पुराना है जिसमें विष्णु जी की प्रतिमा व अन्य देवी-देवताओं की प्रतिमा स्थापित हैं। दक्षिण मुखी हनुमान जी मंदिर है। तालाब के किनारे कई बगीचियां बनी हुई हैं। आवागमन के साधन भी उत्तम है, 'जोधपुर' के लिए हमेशा बस की सुविधा रहती है, 'पीपाड़' रेलवे स्टेशन भी है, जहां से दिन में सिर्फ एक बार 'जोधपुर' के लिए ट्रेन उपलब्ध है। व्यापारिक दृष्टिकोण से भी यह क्षेत्र बहुत ही उन्नति कर रहा है। फसलों में जीरा, गेहूं, मूंग का उत्पादन अधिक होता है व्यापार के लिए लोग आसपास के गांव से भी आते है। यहां प्राइवेट सब्जी मंडी भी बनी हुई है, जो पूरे राजस्थान में सबसे बड़ी निजी मंडी है। यहां का व्यापार बहुत अच्छा है, हर तरह का कारोबार होता है, लाइमस्टोन की फैक्ट्रियां लगी हैं। यहां गौशाला और बकराशाला है, ऐसी अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'पीपाड़' शहर में...

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि बिल्कुल अपने देश का नाम तो केवल 'भारत' ही रहना चाहिए, क्योंकि भारत विश्वगुरु के रूप में जाना जाता है, हमारी संस्कृति 'भारत' से है, हमारा इतिहास 'भारत' से है इसीलिए अपने देश का एक ही नाम रहना चाहिए 'भारत'।

निर्मल जी का जन्म व सम्पूर्ण शिक्षा 'पीपाड़' सिटी में ही संपन्न हुई है। आपने सीए, सीएस, एलएलबी, एलएलएम की शिक्षा ग्रहण की है, यहां सिविल व क्रिमिनल क्षेत्र के अधिवक्ता के रूप में कार्यरत हैं, साथ ही सामाजिक कार्यकर्ता भी हैं, मानव कल्याण सेवा ट्रस्ट से जुड़े हुए हैं। जय भारत!

- मेरा राजस्थान

रमाकांत कासट
व्यवसायी व समाजसेवी
पीपाड़ सिटी निवासी-सूरत प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ७०९६९६९३३१

रमाकांत जी अपनी जन्मभूमि 'पीपाड़ सिटी' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि 'पीपाड़' जोधपुर जिले का एक प्रमुख कस्बा है, यहां का सामाजिक वातावरण बहुत ही उत्तम है। जैन, माहेश्वरी, जाट, माली सभी समाज के लोग आपसी सामंजस्य के साथ निवास करते हैं, प्राकृतिक दृष्टिकोण से भी यह क्षेत्र बहुत ही उत्तम है, यहां तालाब व नाड़ी है, जो 'पीपाड़ सिटी' की सुंदरता को बढ़ाते हैं। यहां कई प्राचीन और ऐतिहासिक मंदिर हैं, जिनमें लक्ष्मीनाथ जी का मंदिर बाजार के मध्य स्थित है और जैन समाज के मंदिर, भवन और सामाजिक संस्थाएं भी बनी हुई हैं, यह क्षेत्र शिक्षा के लिए हमेशा से ही विशेष रहा है, यहां कई विद्यालय और महाविद्यालय स्थापित हैं, आरएसएस द्वारा संचालित विद्या भारती विद्यालय भी है। व्यापारिक दृष्टिकोण से भी क्षेत्र बहुत ही उत्तम है। आसपास के गांव के लोग भी व्यापार और खरीदारी के लिए 'पीपाड़ सिटी' आते हैं, यहां रिटेल का बहुत बड़ा व्यापार होता है और कुछ छोटे-छोटे उद्योग भी लगे हुए हैं, ऐसी अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'पीपाड़ सिटी' में...

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का नाम केवल 'भारत' ही रहना चाहिए, इंडिया अंग्रेजों का दिया नाम है।

रमाकांत जी का जन्म और संपूर्ण शिक्षा कर्नाटक में संपन्न हुई है, पिछले कई वर्षों से आप 'सूरत' में बसे हुए हैं और यहां कपड़ा व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। माहेश्वरी जिला सभा सूरत के कार्यकारिणी सदस्य हैं, आपके परिवार द्वारा स्थापित गंगा देवी रामजीवन कासट विद्या संकुल सूरत में संचालित है, यथासंभव अन्य सामाजिक कार्यों से भी जुड़े रहते हैं। पीपाड़ प्रगति मंडल सूरत के भी सदस्य हैं। जय भारत! **- मेरा राजस्थान**

डॉ. लोरी महेंद्र गांधी
रक्त विकार विशेषज्ञ (हेमेटोलॉजीस्ट)
पीपाड़ निवासी-मुंबई प्रवासी
भ्रमणध्वनि:९८२०२४२००४

डॉ. लोरी की अपनी पैतृक भूमि 'पीपाड़' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं किन्तु 'पीपाड़' हमारे पैतृक भूमि है और ननिहाल भी पीपड़ी ही है हमारी गर्मी की छुट्टियां 'पीपाड़' में ही बीतती थी, पहले और आज के 'पीपाड़' में बहुत अंतर आ गया है, जनसंख्या वृद्धि के साथ-साथ सुविधा बहुत बढ़ गई हैं, आवागमन की व्यवस्था अच्छी हो गई है। पहले के मुकाबले यहां का बाजार बढ़ गया है और बाजार में भी आधुनिकता दिखाई देती है। यहां के सामाजिक वातावरण के बात की जाए तो आज भी लोगों में वही अपनापन, प्रेम भाव और मान सम्मान है, बहुत ही सुंदर हैं हमारा 'पीपाड़'।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य अपने देश का एक ही नाम एक ही पहचान रहना चाहिए 'भारत'।

डॉ. लोरी जी का जन्म और प्रारंभिक शिक्षा मुंबई में ही संपन्न हुई है, एमबीबीएस की शिक्षा अपने औरंगाबाद से ग्रहण की, तत्पश्चात मास्टर की डिग्री होना आपने मुंबई से प्राप्त की, वर्तमान में आप हेमेटोलॉजी के शिक्षा ग्रहण कर रही हैं, साथ ही आर्मी कैंप व रिसर्च सेंटर में डॉक्टर के रूप में भी कार्यरत हैं। जय भारत!

- मेरा राजस्थान

प्रकृति की सुंदरता को सजाए हुए जोधपुर का एक कस्बा
'पीपाड़ शहर' के इतिहास प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनायें

Ramakant Kasat
Mob. : 70969 69331

वेंकटेश सिल्क एजेंसी

F 6 Arohi Flates, Behind Jain Bhavan Parle Point,
Surat, Gujarat, Bharat - 395007

'मेरा राजस्थान' पत्रिका के पीपाड़ सिटी विशेषांक में पीपाड़ की सभी फोटो उपलब्ध कराने के लिए फोटोग्राफर राजू सुपुत्र एम.डी. पवार (पवार फोटो स्टूडियो) का धन्यवाद!

एक राष्ट्र - एक नाम केवल 'भारत'

हास्य अभिनेता की कॉमेडी पर लोग मंत्रमुग्ध

अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन द्वारा 'हंगामा २०२५' का आयोजन

मुंबई: घोडबंदर स्थित ओवला के कोर्टयार्ड लांस में अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन के ठाणे इकाई का 'हंगामा २०२५' धूमधाम से संपन्न हुआ। सम्मेलन के चेयरमैन महेश बंशीधर अग्रवाल के अनुसार संगीत, कॉमेडी, नृत्य के अद्भुत संयोजन से समाज को एकता के धागे में पिरोने के उद्देश्य से २०२५ के शुभागमन पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। कार्यक्रम में विशेष तौर पर हास्य अभिनेता एहसान कुरैशी उपस्थित थे, उन्होंने मजेदार कॉमेडी, मधुर फिल्मी गीत, मनमोहक नृत्य एवं अद्भुत मिमिक्री से सभी को मंत्रमुग्ध किया। संयोजक नितिन बजारी के अनुसार संगीत, कॉमेडी, नृत्य की लय ने सभी दर्शकों का दिल जीत लिया। मुख्य अतिथि सीमा अशोक जैन के साथ रमनलाल चौधरी, मन्नू सेठ, ओमप्रकाश भजनलाल अग्रवाल, सुरेश गोकुलचंद और बृजमोहन अग्रवाल ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

सम्मेलन के अध्यक्ष सुभाष अग्रवाल, उपाध्यक्ष सुरेश पहाड़िया, सचिव विशाल अग्रवाल, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष राजेंद्र अग्रवाल, राष्ट्रीय सचिव सुमन अग्रवाल, संदीप गर्ग, नवीन अग्रवाल, देवेंद्र गुप्ता, नरेंद्र अग्रवाल, राजीव अग्रवाल, नितेश बंसल, राजेश गुप्ता, मनीष विरोलिया, रजत अग्रवाल, राकेश गोयल, अशोक अग्रवाल, संजीव अग्रवाल, संजय मित्तल, घनश्याम अग्रवाल, सुदेश अग्रवाल, कृष्ण मित्तल, वेंकटेश अग्रवाल, राजेश अग्रवाल, वीरेंद्र रुंगटा, चतुर्भुज अग्रवाल, तरुण गुप्ता, दिनेश गोयल एवं खेमचंद मित्तल आदि उपस्थित थे।

'हारा हूं बाबा पर तेरा सहारा है' परे झूमे श्याम भक्त

मुंबई-भायंदर: मीरा भायंदर के श्री श्याम प्रेमियों के लिए श्री श्याम कीर्तन समिति ने भव्य श्री श्याम महोत्सव का आयोजन किया, जिसमें हजारों की संख्या में श्याम भक्तों की उपस्थित थी। श्री श्याम कीर्तन समिति वर्षों से मीरा भायंदर में श्याम महोत्सव का आयोजन करते आ रही है। विधायक नरेंद्र मेहता श्याम

भक्तों को बधाई देते हुए कहा कि बाबा, ने उनकी तमन्ना पूरी की बाबा आप सभी की तमन्ना बाबा पूरी करे। समिति के संदीप डालमिया ने बताया श्याम भक्तों को एक दिन साथ लाने का भरसक प्रयास समिति के अध्यक्ष अमृत गोयल के मार्गदर्शन में किया जाता है। राज्यवर्धन सुथार ने 'जब हारा हूं बाबा पर तेरा सहारा' है की धुन छेड़ी तो पूरा पंडाल श्याममय हो गया, इस अवसर पर राजस्थानी समाजसेवी भामाशाहों का सम्मान समिति द्वारा किया गया। समिति के जयसिंह यादव ने बताया श्री श्याम कीर्तन समिति का राजस्थान खाटू नरेश मंदिर के पास धर्मशाला है, जहां मुंबई सहित अन्य राज्यों से आए श्याम भक्तों को किफायती दर पर रहने की सुविधा उपलब्ध कराई गई, समिति जनसेवा के कार्यों को बखूबी अंजाम देती है। मंगल पाठ का वाचन कुंदन मिश्रा ने किया, इस महोत्सव में राज्यवर्धन सुथार, आलोक गुप्ता, योगेश सुरेका, मोनिका अग्रवाल, राधिका डालमिया, प्रियंका खेतान, शुभम अग्रवाल सुरीले अंदाज में भजन प्रस्तुत किया। महोत्सव को सफल बनाने के लिए राज कुमार अग्रवाल, मनोज शाह, प्रदीप डालमिया, रमन खेराडी सहित समिति के अन्य सदस्यों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

- राकेश विश्वकर्मा

प्रकृति की सुंदरता को सजाए हुए जोधपुर का एक कस्बा
'पीपाड़ शहर' के इतिहास प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनायें

रामस्वरुप भूतड़ा
अध्यक्ष - बाबा रामदेव गोपाल गौशाला समिति
Mob. : 9460595551

लटियाली नाड़ी - चिढाणी, पीपाड़ शहर,
जोधपुर, राजस्थान, भारत

भारत को 'भारत' ही बोला जाए एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

श्री कुशलरत्न गजेन्द्र गणिभ्यो नमः

जयगुरु हस्ति-हीरा महेन्द्र मान

सेठ सुजानमलजी मिश्रीमलजी मेहता एवं सेठाणी कुवँरीबाई सुजानमलजी मेहता

२ फरवरी १९२५

१० अक्टूबर १९२४

के १००वाँ वर्ष जन्म शताब्दी पर सादर वंदन!

गौतम एस मेहता एण्ड कम्पनी

(Advocates & Aritrators)

20, आनलुकर बिल्डिंग, 14, सर.पी.एम रोड फोर्ट, मुंबई- 400001.

फोन नं. 022-22654766 मो. 98211-45886 E-mail.: advgsmehta@gmail.com

गौतम एस. मेहता

अध्यक्ष : जैन अडवोकेटस फेडरेशन, मुंबई
पूर्व-अध्यक्ष : जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, मुंबई
ट्रस्टी : लोटवाला फाउन्डेशन आर्य भवन एस.वी.पी रोड, मुंबई
ट्रस्टी : गजेन्द्र निधि फाउन्डेशन, जोधपुर
उपाध्यक्ष: जैन सेवा संघ, मुंबई
राष्ट्रीय मंत्री : भारत जैन महामंडल, मुंबई

with best compliment

PM SHRI
Pradhan Mantri Schools for Rising India
Creating holistic and well-rounded individuals equipped with key 21st Century skills

सेठ भीकमचंद मुथा

मुथा परिवार

राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय

पीपाड़ शहर (जोधपुर)

भारत को 'भारत' ही बोला जाए एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

प्रकृति की सुंदरता को सजाए हुए जोधपुर का एक कस्बा 'पीपाड़ शहर' के इतिहास प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनायें

Mrs. Leela Jain (Director)
New Prince Secondary School
Pipar City
An English Medium School

NIRMAL KATARIYA
CA, CS, LL.B., LL.M. (Corp.Law)
Mob. : 8386995595
Advocate & Trademark Attorney

Adarsh Mohalla, Sutharo Ka Bass, Pipar City, Opp. Munsif Court, Silari Road, Pipar City, Rajasthan, Bharat - 342601
email : adv.katariya@gmail.com

भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए अभियान में क्या आप सहयोग देना चाहते हैं तो संपर्क करें-9322307908

Follow for more updates
https://www.instagram.com/mainbharathun_?

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें
https://www.instagram.com/mainbharathun_?

भारत सरकार द्वारा पंजीकृत क्र. U80300MH2021NPL369101

मैं भारत हूँ फाउंडेशन

भारतीय संस्कृति की ओर अग्रसर

राष्ट्रीय अध्यक्ष व वरिष्ठ पत्रकार बिजय कुमार जैन का एक ही आव्हान

एक नाम-एक राष्ट्र भारत को मिलती जा रही है सफलता।

बेंगलुरु में श्री श्री रविशंकर जी ने कर्नाटक कार्यकारिणी समिति के सर्वश्री महेंद्र जी मुणोत गौ- प्रेमी, समाजसेवी सज्जन राज मेहता, बिदासर परिषद् के पूर्व अध्यक्ष अरविंद सिंह जी, बीपी हरिहरन उपेंद्र कुमार गौड़ा को अपना आशीर्वाद दिया। 'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' अभियान की सफलता के लिए। कर्नाटक व भारत केसभी अखबारों ने अपनी पत्र, पत्रिकाओं में समाचार को विशेष स्थान दिया।

फरवरी २०२५

आइये हम सभी 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!

प्रकृति की सुंदरता को सजाए हुए जोधपुर का एक
कस्बा 'पीपाड़ शहर' के इतिहास प्रकाशन पर
हार्दिक शुभकामनायें

Shantilal Mohnot
(Retired Scientist)

(वर्तमान में आध्यात्मिक अध्ययन/अध्यापन)

Mob. : +17248757954

''विद्या विनय प्रदाता है.
ज्ञान/चैतन्य प्राप्ति ही परम ध्येय है।''

1016 Summer Ridge Ct. Pittsburgh, PA 15668 USA

भारत को 'भारत' ही बोला जाए एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

धार्मिकता और प्रकृति का अद्भुत संगम
'पीपाड़ शहर' के इतिहास प्रकाशन पर
हार्दिक शुभकामनायें

Sanjay Chopda
Mob. : 9823278770

J.P. Metals

Wholesalers and Retailers

Stainless Steel, Copper, Brass, Aluminium Utensils,
Hotel, Restaurant, Catering, Bedding and Mangals Office Utensils,
Mixers, Gas Stoves, Non-Stick Cookware, Thermoware

Inside Jawahar Gate, Metal Marchent,
At Post. Amravati, Maharashtra, Bharat-444601

भारत को 'भारत' ही बोला जाए एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

प्रकृति की सुंदरता को सजाए हुए जोधपुर का एक कस्बा
'पीपाड़ शहर' के इतिहास प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनायें

Sohanlal Munot
Mob. :- 9898032108

Ankit
Mob. :- 9328502484

AASHISH APPARELS

J-213 To 218, Sumel 6, Dudheshwar Road
Tavdipura, Ahmedabad, Gujarat, Bharat - 380004
email : rudejeans@gmail.com

भारत को 'भारत' ही बोला जाए एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

पीपाड़ सिटी की झलकियाँ

निर्माणाधीन आचार्य हस्ती द्वार

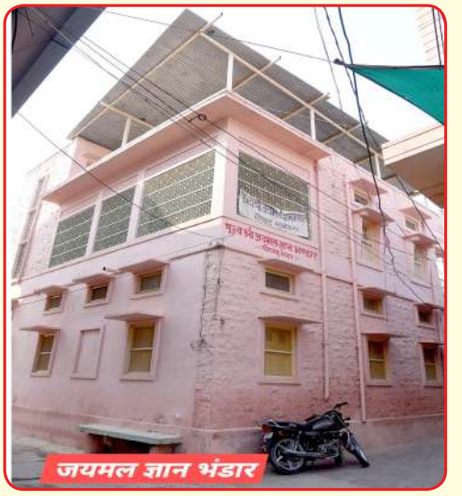

अंबेडकर सर्किल

जय भवन

सिविल न्यायालय

स्वामी रामसुखदास जी महाराज आश्रम
रामपोल

श्री चंपालाल हरखचंद कोठारी नंबर 1 स्कूल

आचार्य श्री रघुनाथ स्मृति जैन भवन पीपाड शहर

आर्य समाज भवन

जैन विजय चौधरी सर्कल

पंचायत समिति भवन

कवाड़ अतिथि भवन

राजकीय कन्या महाविद्यालय

पुराना बस स्टैंड

श्री गोपाल गौशाला

लोग भरम हम पर करे, तासो नीचे नैन

कोलकाता में गीता परिवार का कार्यकर्ता शिविर संपन्न होने पर गंगासागर यात्रा पर जाने का मन कुछ कार्यकर्ताओं का हुआ, किंतु मकर संक्रांति के समय की भीड़ में वहाँ जाने के लिए मैं सशंकित था, फिर भी मन माना नहीं और हम निकल पड़े।

यात्रा के पहले भाग में गाड़ी से गंगा घाट तक, फिर दूसरे में जेटी अर्थात जहाज़ से गंगा पार कर, तीसरे पड़ाव में हम पहुँच गए 'दधीच प्रतिष्ठान' के कैम्प में, फिर वहाँ से पंकज इन्नानी ने एक दूसरी गाड़ी की व्यवस्था की, अंतिम पड़ाव

'सागर' तक जाने के लिए, 'सागर' के कैम्प में भेंट हुई राजेन्द्र व्यास से, बता दें कि राजेंद्र जी महर्षि वेद व्यास प्रतिष्ठान से जुड़े पूज्य स्वामीजी के शिष्य हैं और राजस्थान के गोठ मांगलोद स्थित दधिमती वेद विद्यालय के ट्रस्टी भी हैं। कैम्प की अद्भुत व्यवस्था देखकर सहज जिज्ञासा उठी कि ये इतना बड़ा कार्य कैसे चलता होगा, कितने लोग कितने दिनों तक कार्य करते होंगे, इत्यादि।

राजेंद्र जी ने बताया की दाधीच प्रतिष्ठान गंगासागर के यात्रियों के लिए तीन कैम्प लगाता है, जहाँ मेले में आए तीर्थयात्रियों के ठहरने, भोजन, उपचार इत्यादि की व्यवस्था निःशुल्क की जाती है। कैम्प तो पाँच दिनों का होता है किंतु इसकी व्यवस्था के लिए तीन स्थानों पर 'दाधीच प्रतिष्ठान' के कार्यकर्ता एक महीने तक कार्य करते हैं।

शिविर के कार्यालय में दधिमति माता की तस्वीर विराजित थी, शाम को सामूहिक आरती भजन आदि किया जाता था।

राजेंद्र जी ने कहा कि १८ वर्षों पहले पूज्य गुरुदेव की प्रेरणा से ही यह कार्य शुरू हुआ, आज भी उन्हीं की कृपा से चल रहा है, उनके भाव ये थे कि हम संगमनेर से आए हैं तो उनकी यह सात्विक सेवा भाव देखकर मुझे वह दोहा स्मरण हो आया कि

'देनहार कोई और है, देवत सो दिन-रैन।
लोग भरम हम पर करे, तासो नीचे नैन ।।'

मैं नतमस्तक था और आज भी हूँ श्री राजेन्द्रजी व्यास, पंकज इन्नानी आदि सेवाव्रतियों के प्रति!

राजेंद्र जी व्यास (आर.के.व्यास) की वाणी में तो साधना का ओज था, उनके मुखमंडल पर सेवा का तेज और उनके प्रसन्न भाव में कर्तृत्व का संतोष।

जय भारत! **-गिरीश डागा, राष्ट्रीय सह-सचिव, गीता परिवार**

'पीपाड़ शहर' के इतिहास प्रकाशन पर
हार्दिक शुभकामनायें

पंकज कोठारी
Mob. : 9414671571

जयंत कोठारी
Mob. : 7357941571

शा. प्यारेलाल प्रदीप कुमार कोठारी
कपड़े के व्यापारी

ईलाजी बाजार, पीपाड़ शहर, जिला-जोधपुर, राजस्थान, भारत - ३४२६०१

निवास : पी.पी. कोठारी "कमला कुटुम्ब" नागौरी बास, पीपाड़ शहर,
जिला - जोधपुर, राजस्थान, भारत

गणतंत्र दिवस की शुभकामनाएं

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा

DEENDAYAL M. MURARKA
Mob : 9820042644

भारत को 'भारत' ही बोला जाए
Remove 'INDIA' Name
From The Constitution

M/S Shri Rajeshwar Developer Pvt. Ltd.
28, Gundecha Ind. Complex , Akruli Road, Kandivali East, Mumbai, Maharashtra, Bharat - 400101.

IDEAL ARTIFICIAL™ LIMBS SOLUTION

OUR SERVICES

- **ORTHOTICS**
  (ORTHOPAEDIC BRACE)
- **PROSTHETICS**
  (ARTIFICIAL LEG / HAND)
- **MOBILITY SOLUTION**

BOOK YOUR
APPOINTMENT

- घुटनों का दर्द 100% ठीक हो सकता है, बिना सर्जरी के - सिर्फ ऑफलोडिंग नी ब्रेस के साथ!

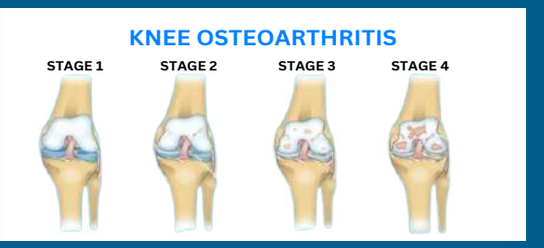

- पैरों की समस्या = पूरे शरीर की समस्या!आज ही अपने लिए सबसे बेहतरीन कस्टम-मोल्डेड इनसोल पाएं।

Heel Correction | Flat Foot Correction | Arch Pain | Heel Pain | Diabetic Foot Pain | Bunion Toe

(MOULDED INSOLE)

+91 9560841343
+91 9205723927
+91 9821128928

www.iasgroups.in

B-24, 2nd Floor,
Opp, Metro Pillar
No.9, Lajpat Nagar
II, Delhi-110024

RNI No. MAHHIN/ 2003/11570
Postal Registration No. MCN/113/2025-2027
WPP License No. MR/Tech/WPP-246/North/2025-27
License to post without prepayment'
Published on 28/01/2025 & Posting on 30th of every previous Month
at Marol Bazar Post Office, Mumbai - 400 059.

ADD Gel®

ACHIEVER®

THE WORLD'S
FINEST GEL PEN

Non Dry
NOW...UPTO 2 YEARS

LEADERS IN WRITING TECHNOLOGY

Presenting New ADD Gel Achiever, the world's finest gel pen.With improved dye base ink that stays Non-Dry for up to 2 years.For smoother, effortless writing.

ONLY ₹50/- PER PC

www.addpens.com

गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए संपादक, मुद्रक व प्रकाशक बिजय कुमार जैन द्वारा विनय ग्राफिक्स, युनिट नं 13, रवी इन्ड. को.-ऑप. सोसाइटी लि., 25 महल इन्ड ईस्टेट, महाकाली केव्हज रोड अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत - 400093 से मुद्रित करवाकर बी-217, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत - 400 059 से प्रकाशित किया गया, टेलीफैक्स-022-4015 8094
अणुडाक - mailgaylordgroup@gmail.com अन्तरताना - www.merarajasthan.co.in